ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

हिरण्मय बनर्जी

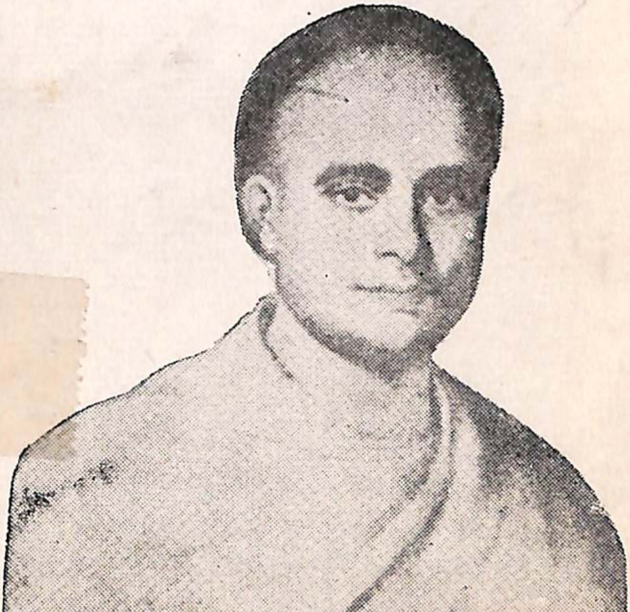

MT
891.441 4
V 669 B

भारतीय

MT
891.4414
V 669 B

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (१८२०-८१) बंगला गद्य-माध्यमकें पूर्णता आ' कमनीयता प्रदान करैत संस्कृत व्याकरणकें सरलीकृत कए अनुवादक माध्यमे श्रेय साहित्यकें लोकप्रिय बना कए साहित्य-जगत्मे अपन स्थान तँ अमर बनैबे कैलन्हि, तकर अलावे समाज-सुधार आ शिक्षा-संस्कारक क्षेत्रहुमे अपन महानताक परिचय देने छथि। माइकेल मधुसूदन दत्तक कथनानुसार "हुनकामे प्राचीन ऋषिलोकनि प्रतिभा आओर प्रज्ञा, अंग्रेज सभक अभिमान आर बंगमाताक सहृदयता" छलन्हि। विद्यासागरक प्रति अपन श्रद्धांजलि अर्पित करैत गांधीजी 'इंडियन ओपीनियन'मे सन् १६०५मे लिखने रहथि, "विद्यासागर श्री ईश्वरचन्द्रक उपाधि छलन्हि, जे कलकत्ताक पंडितसमाज हुनक गंभीर संस्कृतक ज्ञान लेल हुनका प्रदान कैने छलथिन्ह। मुदा ईश्वरचन्द्र केवल विद्याहिक सागर नहि छलाह, ओ करुणा, उदारता आदि अनेक गुणहुक सागर छलाह।" रवीन्द्रनाथ लिखने छलथिन्ह, "ईश्वरचन्द्र विद्यासागरक चरित्रक गौरव हुनक करुणा आ' हुनक विद्यामे नहि, अपितु हुनक निर्भ्रान्त मानवीय गुण आ' हुनक अटल साहसहुमे छलन्हि।"

एहि पुस्तिकामे श्री हिरण्मय बनर्जी ईश्वरचन्द्र विद्यासागरक जीवन आओर कृतित्व पर प्रकाश दैत हुनक चरित्रक ओहि सब विशेषताक रेखांकन कैने छथि जाहि लेल विद्यासागर समकालीन भारतीय इतिहासक अन्यतम महत्तम पुरुषक रूपमे पूजित छथि।

भारतीय साहित्यक निर्माता

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

लेखक
हिरण्य बनर्जी

अनुवादक
उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

साहित्य अकादेमी

Ishwarchandra Vidyasagar : Maithili translation by Udaya Narayana Singh 'Nachiketa' of Hiranmay Banerjee's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (198
SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

(C) साहित्य अकादेमी

Library IIAS, Shimla
MT 891.441 4 V 669 B
00117178

प्रथम संस्करण : 1982

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय :

रवीन्द्र भवन, 35, फीरोजशाह रोड, नई दिल्ली--110001

क्षेत्रीय कार्यालय

ब्लॉक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम कलकत्ता--700029

20, एल्लाम्स रोड (द्वितीय मंजिल), तेनामपेट, मद्रास--600018

172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई--400014

MT
891.441 4
V 669 B

मूल्य :
SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

Indian Institute of Advanced Study
117178
10/12/04
SHIMLA

मुद्रक :
शोभा प्रिंटिंग प्रेस,
नया टोला, पटना-४

क्रम

१.	पृष्ठभूमि	...	७—१७
२.	जीवन-गाथा		१८—३८
३.	स्त्री-अधिकारक समर्थक संग्रामी	...	३९—५३
४.	शिक्षाविद्		५४—६१
५.	बंगला गद्यक स्रष्टा	...	६२—७०
६.	मूलतः मानवतावादी	...	७१—८१
७.	मूल्यांकन	...	८२—९२
	पुस्तक-सूची	...	९३—९४

१. पृष्ठभूमि

ईश्वरचन्द्र विद्यासागरक जन्म भेल छलन्हि उन्नैसम शताब्दी में आ' एहि शताब्दी मे ओ आपन कार्य द्वारा विशेष सफलता प्राप्त कैने छलाह। भारत और विशेषतया बंगालक इतिहास मे ओ समय संकटमय छल। परिस्थितिक आकस्मिकता सँ भारत में वाणिज्यक लेल स्थापित ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी भारतक पूरवी भाग मे एकटा विशाल साम्राज्यक प्रमुख बनि बैसल छल। एहि सँ पूब आ' पच्छिम में घनिष्ठ संबंध-स्थापनाक संभावनाक क्षेत्र देशक एहि भाग मे आओर विस्तृत बनल आ' कलकत्ता राजनीति तथा व्यापारक केन्द्र बनि गेल। एहि सँ पहिने भारतीय जनसमूह आ' ब्रिटिश लोकसभक संबंध छल अगभीर एवं हुनकासभक मेल-मिलाप मुख्यत: आयात आ' निर्यातक संबंधे धरि सीमित रहैत छल।

१७५७ क पलासीक युद्धक उपरांत परिस्थिति बहुत शीघ्रता सँ बदलै लागल। एहि परिवर्तन सँ शासक नवाबक सिंहासन उलटि गेलन्हि एवं राज्य-भार ईस्ट इंडिया कंपनीक स्वार्थ देखै एहन नाम-मात्र शासकक हाथ मे द' देल गेल। एकर किछुए दिन बाद कंपनीक लेल सोझे शासन चलायब बेसी सुविधाजनक प्रतीत भेल आ, तैं १७६५ मे दिल्लीक बादशाह कें बंगालक दीवानी कंपनी कें देबाक लेल तैयार क' लेल गेलन्हि। जें कि प्रशासनक दायित्व कंपनी पर आबि गेल छल, तैं अंग्रेजसब कें अपना अनुकूल होइन्ह एहन शासन-व्यवस्थाक प्रयोजन बुझाइ पड़लन्हि। एही दिशा में आगाँ बढ़ैत १७७२ मे वारेन हेस्टिंग्ज कें बंगालक गवर्नर-जनरल नियुक्त कैल गेलन्हि। तकर दोसरे साल मे रेगुलेटिंग ऐक्ट नामक एकटा संसदीय विधि पारित भेल जाहि सँ शासन-भार गवर्नर-जनरल आ' चारि सदस्यक एकटा परिषद कें सौंपल गेलन्हि। एहि विधिक धाराक अन्तर्गत कलकत्ता मे उच्च न्यायालयक स्थापना कैल गेल जाहि मे एक गोट मुख्य न्यायाधीश आ' तीनटा गौण न्यायाधीश कें न्याय- संबंधी काजक भार देल गेलन्हि।

प्रशासन-व्यवस्था मे एहि नव परिवर्तनक हेतु शासक-लोकनि कें देशक जनताक संग निकटतर संबंध-स्थापन करै पड़लन्हि । एहि सँ दुनू संस्कृतिक लेल एक दोसराकें प्रभावित करब अनिवार्य छल । एक दिसि छल प्राचीन मुमूर्षु देशज संस्कृति, जे रूढ़ि आग्रह पर आधारित विचार आ' जड़-प्राय: नियमानुबंध मे ओझरा कए अपन तेजस्विता हेरा रहल छल आ समय सँ बहुत पाछाँ रहि गेल छल । दोसर दिसि छलैक समयक संग चलै बला ओजस्वितापूर्ण नव विदेशी संस्कृति—चिन्तन-मनन मे धनिक, जकर आधार छल वैज्ञानिक ज्ञान सँ प्राप्त नवीन चिंताधारा । ईहो कहल जा सकैत अछि जे केवल वयोभारहि सँ भारतीय संस्कृति सुषुप्त भ' गेल छल । तकरा फेर सँ यौवनोद्दीपित करबाक लेल एकटा धक्काक प्रयोजन छलैक। ई उपचार ओकरा भेंटलैक दुनू संस्कृतिक परस्पर सम्पृक्त भेला सँ । उन्नैसम शताब्दीक आरम्भिक कालक स्थिति दय श्री अरविन्दक निम्नलिखित मंतव्य वस्तु-स्थितिक यथार्थ परिचय दैत अछि :

"सम्पूर्ण स्थिति कें देखैत हमरा लगैत अछि जे एकटा बहुत पैघ शक्ति अछि जे कि एकटा नवीन विश्व मे, एकटा नव आ' अज्ञात वातावरण मे जागि-उठि कए अजस्र स्थूल आ' सूक्ष्म बंधन द्वारा अपन समस्त अंग कें अवरुद्ध पबै त अछि—बंधन जे कि आपन अतीतक स्वकृति छल, बंधन जे कि ऊपर सँ ओकरा पर थोपि देल गेल छल आ' जाहि सँ ओ मुक्त हैबाक लेल छटपटा रहल छल एहि लेल जे उत्थित भए आपन आत्माकें विस्तार दए सकय आ' विश्व पर आपन धाख जमा सकय ।"[१]

एहि प्रभावक कथा उन्नैसम शताब्दीक बंगालक कथा थीक । नवीन विचारक जोआरि नव शक्ति सबकें कार्यक्षेत्र मे जुटा देलक जकर परिणाम स्वरूप जीवनक विभिन्न क्षेत्र मे नव-नव आंदोलनक सूत्रपात भेल, जकर ढेहु आ' प्रति-लहरि ओहि समयक इतिहास कें चित्ताकर्षक आ' समस्या-संकुल बना देने छल । संक्षेप मे ई कहल जा सकैत अछि जे नवीन संस्कृतिक संग संबंध हमरा सभक संस्कृतिक प्राचीन शरीर मे नवल शक्तिक संचार करैत तहलका मचा देने छल; बाद मे जकर दूरगामी परिणाम देखल गेल छलैक । असल मे, हमरा सभक जिनगीक प्रत्येक पक्ष पर एकर प्रभाव पड़ल । हमरा सभक धर्म, सामाजिक रीति, शिक्षा-प्रणाली आ' साहित्य-

१. श्री अरविन्द : 'द रेनेसाँ आफ इंडिया' ।

सब एहि सँ प्रभावित भेल छल—एतेक दूर धरि जे हमरा सभक राजनैतिक विचारहु पर तकर प्रभाव पड़ल आ' ओहि शताब्दीक उत्तरार्ध मे राष्ट्रीय चेतनाक ओ बीज रोपल गेल जे कि अगिला शतकमे शक्तिशाली स्वतंत्रता-आन्दोलनक रूप मे विस्फोटित भेल जाहिसँ हमरा सभकें राजनैतिक स्वाधीनता भेंटल।

मुदा विनु संबंधें प्रभाव नहि पड़ि सकैत छल आ' जँ देशक लोक कें अंग्रेजी शिक्षाक सुविधा नहि भेंटैत त ई संपर्क बनिये नहि सकैत छल। नवीन शासक-वर्ग एहने नीति कें अपनायब उचित बुझलथिन्ह जाहि सँ लोक अंग्रेजी-शिक्षाक सुविधा सँ वंचित रहि जाय। ओ सब महाद्वीप अमरीकामे जे जे भोगि चुकल छलाह, ई तकरहि प्रतिक्रिया छलन्हि, कारण ओतुका ब्रिटिशे उपनिवेश सब आपन आदिभूमिक उपनिवेशवादक विरुद्ध विद्रोह क' देने छल और अपनासभ कें स्वाधीन घोषित कैने छल। नवीन शासकवर्ग डरैत छलाह जे कोनहुना पश्चिमी शिक्षाक कारणें राष्ट्रीयताक भावना ने जनमि जाइक, कियैक त से हुनकहि सभक हितक विरोध मे हैतन्हि।

एहि मे कोनो आश्चर्यक वात नहि जे ओ सब जानि-बूझि कए पुरान शिक्षा पद्धति कें प्रोत्साहित कैलन्हि। तैं एखन पता चलैत अछि जे १७८१ मे फारसी आ' अरवी साहित्यक शिक्षा कें प्रोत्साहित करबाक लेल ईस्ट इंडिया कम्पनी 'कलकत्ता मदरसा' खोलने छल। एही नीति सँ सामंजस्य रखैत १७६१ मे 'बनारस संस्कृत कालेज' क स्थापना कैल गेलैक संस्कृत-शिक्षाक प्रसारक लेल। अंग्रेजी शिक्षा-दानक भार व्यक्तिविशेष तथा मिशनरिये लोकनि पर छोड़ि देल गेल छलन्हि। अरातून पिदरस कलकत्ता मे अंग्रेजी शिक्षा-दानक हेतु एकटा स्कूल चलबैत छलाह। रेवरेण्ड मे चुँचुड़ा मे एकटा स्कूल खोललथिन्ह। शेरवोर्नो कलकत्ता मे एकटा स्कूल चलवैत छलाह। द्वारकानाथ ठाकुर जे अपना कें उन्नैसम शताब्दीक अन्यतम प्रमुख व्यक्तिक रूप मे प्रतिष्ठित कैने छलाह सेहो हिनके देखरेख मे अंग्रेजी सिखने छलाह।

अंग्रेजी शिक्षाक माँग बढ़ि गेला उत्तर ईसब छोट-छोट संस्था अत्यल्प बुझाबै लागल। जें कि शासकलोकनि एहि काजक लेल प्रस्तुत नहि छलाह, एकर दायित्व समाजक किछु प्रमुख व्यक्तिये कें ग्रहण करै पड़लन्हि।

१८१४ मे कलकत्ताक निवासी भए रामभोहनराय एहि काज मे विशेष रुचि लेलन्हि। एहिमे डेविड हेयर नामक एक गोट स्कॉच व्यापारी हुनक नीक जकाँ सहायता कैने छलथिन्ह। ओ तेहने गनल-चुनल लोक मे सँ छलाह जे वर्ण आ धर्मक भेद बिनु कैनहि संपूर्ण विदेशी लोकहु मे प्रेम बाँटैत अछि आओर हुनका सभक सेवा करबा मे आनन्दित होइत अछि। ओ घड़ीक व्यापारीक रूप मे भारत मे आयल छलाह, मुदा एहि देश सँ एतेक आत्मीयताक अनुभव कैलन्हि जे एतहि बसि जैबाक निश्चय क' लेलन्हि। ओ अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसारक भार ग्रहण कैलन्हि आ' एहि उद्देश्यक पूर्तिक हेतु अपनहि एकटा स्कूलक स्थापना कैलन्हि जे बादमे हुनकहि नाम पर नामांकित भेल।

राममोहन आ' डेविड हेयर सरकार सँ अंग्रेजी शिक्षाक प्रबन्ध करबाक माँग कैलन्हि, मुदा ई प्रयास व्यर्थ रहलन्हि। तखन ओ सब अपनहि एहि दिशा मे आगाँ बढ़बा मे बाध्य भेलाह एवं एहिना जनताक दानराशि सँ २० जनवरी, १८१७ कें कॉलेज स्क्वायर मे हिन्दू कॉलेजक स्थापना कैलन्हि। एकर विज्ञप्ति मे एहि संस्थाक उद्देश्य एकरा 'यूरोपीय स्रोत सँ हिन्दुस्थानी बुद्धिजीवीलोकनि कें वास्तविक ज्ञान-प्रदान करबाक एकटा प्रमुख रास्ता, बना देब बताओल गेल छल।

एहि तरहें पश्चिमी शिक्षाक रास्ता खुलि गेला पर दुनू संस्कृति परस्पर निकट सम्पर्क मे आयल। एहि संस्पर्शक परिणाम शीघ्र परिदृष्ट भेल। सबसँ पहिने एकर प्रभाव धर्महि पर पड़ल आ' से बिनु कारणक नहि छल। जखन ईस्ट इंडिया कम्पनी पूर्वी भारत मे अपन साम्राज्यक स्थापना क' लेलक, तखन ईसाइ मिशनरीलोकनि तत्पर भ' उठलाह। बंगाली हिन्दूक अपन धार्मिक परम्परा मे ईश्वर कें साकार मानैत हुनक मूर्त्तिक पूजाक व्यवस्था छल। ईसाइ मिशनरीलोकनि स्वाभाविकतया एकर घोर भर्त्सना कैलन्हि और एकरा मूर्त्तिपूजाक नाम देलन्हि। ओ सब ओहि संस्कृतिक प्रतिनिधि छलाह जे हालहि मे वैज्ञानिक आ' तकनीकी ज्ञान प्राप्त करैत वाष्प-जहाज आ' रेल-गाड़ीक आविष्कार कैने छल। एकर चमकदार आ' नवीन आकर्षण सँ ओहि युगक शिक्षित बंगाली अत्यधिक प्रभावित भेलाह आओर हुनका अपन मरणोन्मुख संस्कृतिक ग्रन्थ सब सँ ई कतेको बेसी महत्वपूर्ण प्रतीत भेलन्हि।

विद्रोहक एहि भावना केँ हिन्दू कालेजक एक सजीव युवा आंग्ल-भारतीय अध्यापक हेनरी विवियन डिरोजिओक क्रिया-प्रतिक्रियाक माध्यमेँ स्वीकृति भेंटल। ज्ञानक प्रति तार्किक दृष्टिक पक्ष मे हुनक तर्क हुनक युवा विद्यार्थीलोकनिकेँ वड़ आकर्षक लगलन्हि और हिन्दू धर्म-पद्धतिक भर्त्सना हुनकासभक मन मे हिन्दू-धर्मक विरुद्ध द्रोह-भावनाक संचार कैने छल। परिणामस्वरूप "मूर्ति-पूजाक अंतःसारशून्यता आ' पौरोहित्यक ढोंग कलकत्ताक नेतृस्थानीय युवा-वर्गक तरुण, निर्भीक और आशालु मनक जड़ि धरि झकझोरि देलक।"[1]

हुनके संरक्षण मे १८२८ मे ऐकेडेमिक ऐसोसिएशनक स्थापना भेलन्हि। मानिकतलाक एकटा वंगलामे एकर साप्ताहिक बैसकी होइत छल, जतय समाज, नैतिकता आ' धर्म संबंधी तात्कालिक प्रश्न पर विचार होइत छल। एकर गतिविधिक एकटा सजीव विवरण हुनकहि सभक समकालीन लाल-विहारी देक लेखनी सँ भेटैत अछि :

"विद्वज्जनक एहि कुंजवन मे प्रति सप्ताह सामाजिक, नैतिक आ' धार्मिक प्रश्न सव पर चलइवला तर्क-वितर्क मे कलकत्ताक युवा-वर्गक मन रमैत छलन्हि। वहसक सामान्य स्वर तत्कालीन धर्मसंवन्धी संस्थानसभक विरुद्ध निश्चित विद्रोहक होइत छल ··· अकादमीक ई युवा वाघसव प्रति सप्ताह गरजैत रहलाह—हिन्दूधर्म केँ धिक्कार! रूढ़िवाद केँ धिक्कार!"

एहि मे कोनो आश्चर्यक गप नहि जे एहि विद्रोहक भावना सँ प्रेरित भ' कए अनेको प्रतिभाशाली युवक ईसाइ धर्म केँ अपनौलक। महेशचन्द्र घोष, एहि दलक एकटा अन्यतम श्रेष्ठ विद्यार्थी, अगस्त १८३२ मे ईसाइ धर्म ग्रहण कए सम्पूर्ण हिन्दू समाज मे खलवली मचा देने छलाह। हुनके संगी विद्यार्थी कृष्णमोहन बैनर्जी तकर अनुसरण कैलन्हि। तकर अगिला दशक मे धर्म-परिवर्तनक आर एकटा उदाहरण छलाह माइकेल मधुसूदन दत जनिका वाद मे साहित्य-सर्जन मे हुनक अवदानक कारणेँ वंगला साहित्यक अन्यतम निर्माताक रूप मे सम्मानित कैल गेलन्हि। एहि सँ पता चलैत अछि जे सांस्कृतिक संवंध एक दिशा मे कतेक प्रभाव विस्तार कैने छल।

मुदा राममोहन रायक नेतृत्व मे एकर प्रभाव आओरो एक दिशा मे पड़ल छल। यद्यपि ओहो अवतार-वाद सँ नीक जकाँ ऊबि चुकल छलाह,

१. थॉमस एडवर्ड, हेनरी डिरोजिओ, पृष्ठ ३२।

तैं ओ अपन संस्कृति मे हुनक अनुरक्ति अत्यन्त सुदृढ़ छलन्हि। प्राचीन शास्त्र मे हुनक अपार ज्ञान हुनका प्राचीन युग मे निराकार पूजा-पद्धतिक अस्तित्वक आविष्कार मे सहायता कैने छलन्हि। उपनिषद् मे ब्रह्म कें निराकार मानल गेल छन्हि। ओ एहि धारणा कें एकेश्वरवादक रूप द' कए अवतार-वाद-विरोधी धार्मिक क्रियाक प्रचार शुरू क' देलन्हि। आरंभ मे ओ किछु समान-धर्मा मित्र कें एकत्रित कए 'आत्मीय सभा'क प्रतिष्ठा कैलन्हि। एकर बैठक हुनक कलकत्ता-स्थित अपर सर्कूलर रोड वला मकान मे होइत छलन्हि। हुनक अनुयायीसभक संख्या मे वृद्धि भेलाक बाद सामूहिक पूजाक हेतु एकटा पैघ स्थान-सहित एकटा वृहत्तर संगठनक आवश्यकता बूझि पड़लन्हि। तकरा ध्यान मे रखैत अगस्त १८२८ मे एकरा ब्राह्म समाज मे बदलि कए जोड़ा-साँको-स्थित एकटा भाड़ाक मकान मे एकर प्रतिष्ठा कैल गेलैक। तकर तत्काल बाद राममोहनक संरक्षण मे समाजक अपन मकान बनि गेल ५५ चितपुर रोड मे आ' सब किछु ओतहि चलि गेल। तकर पश्चात ओ दिल्लीक मुगल बादशाह द्वारा सौंपल गेल काजक भार ल' कए इंगलैंड चलि गेलाह। दुर्भाग्यवश, ब्रिस्टल मे ओ मृत्युक शिकार बनि गेलाह आ' हुनक अस्थि एखनहु ओतहि समाहित छन्हि।

एहि तरहें आपन नेताक निधनक बाद ब्राह्म समाज किछु कालक लेल क्षीणस्रोत भए बहैत चलल जा धरि राममोहनक सुयोग्य शिष्य देवेन्द्रनाथ ठाकुर हुनक आध्यात्मिक उत्तराधिकारीक रूप मे कार्यभार ग्रहण नहि कैलथिन्ह। ओ राममोहनक घनिष्ठ मित्र द्वारकानाथक सुपुत्र छलाह अ' राममोहनहिक द्वारा स्थापित स्कूलक विद्यार्थी छलाह। तैं एहि मे कोनो आश्चर्य नहि जे ओ आपन पूर्वाचार्यक विचार-धारा कें अपनावैत अवतार-वादी पूजा-पद्धतिक घोर विरोध कैलन्हि आ' ब्राह्म समाज कें एकटा विशिष्ट धार्मिक दल मे परिवर्तित करैत २१ दिसम्बर, १८४३ कें ओ आपन बीसटा शिष्यक संग नियमपूर्वक दीक्षित भेलाह। आपन पूर्वाचार्य राममोहने जकाँ ओहो आपन आदि-धर्मक संग संबंध कें बनाय राखलन्हि और ईसाइ मिशनरीलोकनि द्वारा हिन्दूसबकें धर्मान्तरित करबाक लेल अपनाओल आक्रामक पद्धतिक विरोधो कैलन्हि।

हिन्दू-समाजक सामाजिक नियम-नीति आ' व्यवहारहु पर एकर गहन प्रभाव पड़ल। हिन्दू समाजक पतनोन्मुखी अवस्था मे किछु अन्यायपूर्ण आ'

अमानवीय नियम चलि पड़ल छल। उन्नैसम शताब्दीक अनेको प्रगतिशील आन्दोलनक जनक राममोहनक ध्यान एहू दिसि पड़ल छलन्हि। विधवा कें पतिक चिताक संग जरैबाक नियम, जे कि सती-प्रथाक नाम सँ ख्यात छल, पहुने एक वर्बर प्रथा छल जाहि दिसि हुनक विशेष ध्यान गेलन्हि। कानूनी स्तर पर एकर अवसानक लेल ओ आन्दोलन शुरू क' देलथिन्ह। शुरू मे हुनका तिरस्कारे भेटलन्हि। १८१८ मे लार्ड अमहर्स्टक पास ओ जे आवेदन पठौलथिन्ह ताहि मे ओ एहि अवसानक तर्क दैत लिखलथिन्ह जे सतीप्रथा 'प्रत्येक शास्त्र आ' सब देशक लोकक साधारण विचारबुद्धि मे सरासरि हत्ये कहाओत।"

एहि विषय मे हस्तक्षेप नहि करवाक पक्ष मे लार्ड अमहर्स्टक पास कैकटा कारण छलन्हि जकर प्रमाण एहि विषय पर हुनक निम्नोक्त विचार सँ भेटैत अछि :

"हमरा ई स्वीकार करवा मे कोनो खेद नहि जे एहि कुप्रथाक विस्तृत प्रचलनक विषय मे जानियो कए एहि सँ विमुख होयबाक कारणें मूर्ख कहैबाक डर रहितहु, हमरा ई कहबा मे वाध्य होमय पड़ि रहल अछि जे हमरा सब कें एहि देशवासी सब मे ज्ञानक प्रसारक गति पर विश्वास करै पड़त और ई मानै पड़त जे ई निन्दनीय कुसंस्कार धीरे-धीरे समाप्त हैत।"

जखन लॉर्ड अमहर्स्टक उत्तराधिकारी लॉर्ड विलियम वेन्टिक पदासीन भेलाह तखन राममोहन अपन माँग फेर पेश कैलथिन्ह, मुदा एहि वेरि अपन सहकर्मी द्वारकानाथ ठाकुरक संग मिलि कए कैलथिन्ह। एहि विषय मे हस्तक्षेप करवा मे लार्ड अमहर्स्टक द्विधाक प्रमुख कारण छलन्हि हुनक ई धारणा जे सती-प्रथा हिन्दू धर्मक अभिन्न अंग थिक आ' ओ डरैत छलाह जे एहि पर कानूनी प्रतिवंध लगायब लोकक धार्मिक भावना पर आघात करब हैत। तैं सुधारकलोकनि अपन कौशल वदलि कए एकरा एहि तरहें प्रस्तुत कैलथिन्ह—"यद्यपि दीर्घ अवधि सँ प्रचलित रहबाक कारणें ई प्रथा नियमक रूप धारण क' लेने अछि, मुदा हिन्दू धर्मशास्त्र मे एहि प्रथाक उल्लेख कतहु नहि अछि।"[1] एहि सूचना सँ अवहित हैबाक बाद लॉर्ड वेन्टिक कें एहि वर्बर प्रथाक मूलोच्छेद करवा मे कोनो द्विधाक अवकाश नहि रहलन्हि। हुनक साहस न्यायसंगत प्रमाणित भेलन्हि, कारण सांस्कृतिक

१. लॉर्ड वेन्टिक कें द्वारकानाथ ठाकुरक लिखल पत्र सँ उद्धृत।

मिलन सँ वदलैत परिस्थिति मे एहि नव अधिनियमक विरुद्ध कतहु भारी जन-प्रदर्शन नहि भेलैक ।

तकर किछुये काल वाद, एही गवर्नर-जनरलक शासन-काल मे सरकारक शिक्षा नीतियो मे क्रांतिकारी परिवर्त्तन आयल। तकर मूल मे छलथिन्ह गवर्नर-जनरलक परिषदक सदस्य वेविंग्टन मेकॉले। संक्रमणक स्थिति मे नव-नव प्रवृत्ति कें देखैत हुनका वुझि पड़लन्हि जे एकरा सव कें सद्यःस्थापित हिन्दू कॉलेजक माध्यमें पश्चिमी शिक्षाक प्रसारक संग जोड़ल जा सकैत अछि और हुनका ई विश्वास भेलन्हि जे एहि परिवर्त्तित परिस्थिति मे अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार कंपनीक स्वार्थक अनुकूले हैत। एहि विषय पर हुनक खुल्लमखुल्ला सोच-विचारक प्रमाण हुनक ओहि पत्र मे भेंटैत अछि जे कि ओ आपन पिता कें कखनहुँ उदार मानसिक अवस्था मे लिखने छलाह। ओहि स्मरणीय पत्रक निम्नलिखित उद्धरण सँ उपरोक्त धारणाक समर्थन भेंटि सकैछ :

"हिन्दूलोकनि पर एहि शिक्षाक (अंग्रेजी शिक्षाक) प्रभाव उद्भुते रहलन्हिं। अंग्रेजी शिक्षा पावैवला कोनो हिन्दू आपन धर्म सँ सनिष्ठ रूपें जोड़ायल रहि नहि पवैत अछि। क्यो अपन धर्माचरणकें नीतिरूप मे रखने रहैत छथि, अधिकांशतः त शुद्ध एकेश्वरवादी वनि जाइत छथि, क्यो-क्यो ईसाइ धर्म कें ग्रहण क' लैत छथि। हमरा दृढ़ विश्वास अछि जे जँ हमरा सभक शिक्षा-नीतिक प्रयोग ठीक तरहें कैल जाय त अगिला तीस वर्ष मे वंगालक सम्मानित वर्ग मे एको व्यक्ति मूर्ति-पूजा करैवला नहिं भेंटत। ई सव धर्मान्तरणक प्रयास आ' धार्मिक स्वतन्त्रता मे कनेको हस्तक्षेप विनु कैनहि भ सकैत अछि। एकरा लेल ज्ञान आ' चिन्तनक प्रक्रिये यथेष्ट हैत। एहि सम्भावना दय सोचितहि हमरा हार्दिक आनन्द होइत अछि।"[१]

ई स्वाभाविके थीक जे हुनका ई तर्क नीक लगैत छलन्हि जे पश्चिमी शिक्षा-प्राप्तिक उपरांत शिक्षित वंगाली कें अपन धर्म सँ एतेक अरुचि भ' जाइत छलन्हि जे ओ ईसाइ धर्महु कें अपनावै लगैत छथि। एहि सँ भारतीय मानस पर यूरोपीय संस्कृतिक, सांस्कृतिक विजय अवश्यंभावी छल, जकर फलस्वरूप एहि नव-स्थापित साम्राज्यक संग इंगलैण्डक संबंध आर सुदृढ़

१. ट्रेवेलियन, लाइफ ऐण्ड लेटर्स ऑफ लॉर्ड मेकॉले, भाग १, पृष्ठ ४६४।

हैत । इयैह् ओ सम्भावना छल जे हुनक संतोषक कारण छलन्हि । मुदा बादक इतिहास सँ पता चलैत अछि जे भविष्यक विषय मे हुनक ई धारणा भ्रान्त प्रमाणित भेल छलन्हि । एहि प्रभाव सँ देशीय संस्कृति निश्चिह्न नहि भेल, वरन् दुनू संस्कृति कें जोड़ि कए एकटा नवमुकुलित भारतीय संस्कृतिक रूप धारण कैलक जाहिमे नवीन संस्कृतिक किछु तत्त्वक समावेश भेल, मुदा अपन राष्ट्रीय स्वरूप कें परिवर्त्तित नहि कैलक ।

सरकार द्वारा मेकॉलेक सिफारिस पर गृहीत नव नीति गवर्नर जनरलक परिषदक २ फरवरी १८३५क प्रस्ताव मे देल गेल छलन्हि जाहि मे कहल गेल छल जे "ब्रिटिश सरकारक महान उद्देश्य हैतन्हि भारतीय नागरिक लोकनि मे यूरोपीय साहित्य आ' विज्ञानक प्रचार-प्रसार करब, आ' तैं शिक्षाक लेल निश्चित कैल समस्त धन-राशिक उपयोग अंग्रेजी शिक्षेक हेतु करब उचित हैत ।"

एही तरहक वातावरण मे मेदिनीपुर जिलाक एकटा दूरवर्त्ती गामक एकटा प्राचीनपन्थी संस्कृत-संस्कृतिक परंपराशील दरिद्र ब्राह्मण-परिवार मे ईश्वरचन्द्र विद्यासागरक जन्म भेल छलन्हि । ई एक सांक्रान्ति-काल छल जखन कि जीवनक अनेको क्षेत्र मे कैक तरहक परिवर्त्तन भ' रहल छल । एक बेरि नवयुवकलोकनिक हेतु अंग्रेजी शिक्षाक रास्ता खुलि गेलाक बाद दुनू संस्कृतिक संबन्ध निकटतर होइत गेल जकर अवश्यम्भावी फल ई भेल जे क्रिया-प्रतिक्रियाक एकटा प्रक्रिया शुरू भ' गेल जाहि सँ जनजीवनक अनेको क्षेत्र मे महत्वपूर्ण परिवर्त्तन भेल । ई ओ हल-चलक समय छल जखन नव शक्ति सब भविष्यकेर भारतक दिशानिर्देश क' रहल छल । जड़ताक स्थिति बदलि चुकल छल । एहि प्रभावक आघात सँ अनेको युग सँ सुतल भारतीय जनमानस जागि उठल । जन मन मे नव विचार आ' नवीन भावनाक उन्मेष भेल जे कि अभिव्यक्तिक लेल आतुर छल । ई संपूर्ण असंतुलनक स्थिति छल जाहि मे प्रत्येक वस्तु अस्थिर छल । भावी घटना सभक विषय मे निश्चित रूपें किछु कहब कठिने छल । जे क्यो भविष्यवाणी करबाक साहस कैलन्हि, ओ बाद मे अपन सभटा धारणा कें निर्मूल पौलन्हि, जे मेकॉले कें भेल छलन्हि । एहि समय मे एतबा स्पष्ट रूपें देखल जा' रहल छल जे हठधर्मिता आ' अंधविश्वासक मूलोत्पाटन और स्वाभिव्यक्तिक लेल नवीन मार्गसंधानक हेतु एकटा विहाड़ि उठल छल ।

ई स्वाभाविके थीक जे एहि काल कें किछु इतिहासकार बंगालक पुनर्जागरणक काल मनैत छथि। ओना एहि दावी कें किछु दूर धरि तर्कसंगत कहल जा सकैत अछि, कारण एतय जे किछु भेल छल तकर तुलना किछु क्षेत्र मे यूरोप मे नव शिक्षाक प्रभाव सँ पश्चिमी संस्कृति मे आयल परिवर्त्तनक संग कैल जा सकैत अछि। एकर प्रभाव जीवनक सब क्षेत्र मे कम-वेसी पाओल जा सकैत छल। दुनू आन्दोलनक पाछाँ जे शक्ति कर्मरत छल से समान रूपें जवरदस्त छल। मुदा दुनूक मेल एतवे धरि सीमित छल। अंतिम विश्लेषणानुसार; ई दू आन्दोलन मूलतः पृथक् तरहक छल। पश्चिमी संस्कृतिक पुनर्जागरण असल मे एकटा प्राचीन संस्कृतिक पुनरुत्थान छल—एहन संस्कृतिक जे सर्वग्रासी पंडिताइक प्रभाव सँ अंधकार-युग मे लुप्तप्राय भ' गेल छल। जे सुतल छल से जागि गेल। अतीत सँ एकटा निरंतरता वनल रहल जकर कड़ी एहि वीचक अंधकार-युग तोड़ि नहि सकल।

वंगाल मे जे किछु भेल से सरिपहुँ भिन्न छल। प्राचीन राष्ट्रीय संस्कृति वयसक भार सँ झुकि गेल छल आ' क्षीयमाण छल। अंग्रेजी शिक्षाक माध्यमें पश्चिमक नवोद्भूत तथा एकटा दोसरे तरहक संस्कृतिक संग एकर घनिष्ठ सम्वन्ध स्थापित भेल। तकर फल ई भेल जे संश्लेषणक प्रक्रिया द्वारा नव संस्कृतिक किछु तत्व पुरान संस्कृतिक संग समिश्रित भ' गेल आओर एहि तरहें प्राचीन सांस्कृतिक परिवर्त्तन-साधन कैल। जागरणहु सँ वेसी ई छल संमिश्रणक उदाहरण।

असंतुलनक एही प्रारंभिक अवस्था मे, १८२० ई० मे ईश्वरचन्द्र विद्यासागरक जन्म भेलन्हि। प्रभाव पड़ि चुकल छल आ' परिवर्त्तनक प्रक्रिया चलि रहल छल। हुनक जन्म सँ पूर्वहि हिन्दू कालेजक स्थापना भ' चुकल छल। ओ साते वर्षक बालक छलाह, जखन कि हुनका एकर महत्वक उपलब्धि करवाक अवस्था नहि छलन्हि, तखनहि ब्राह्म समाजक स्थापना भेल छल। जखन ओ किशोरावस्थामे अध्ययन-रत छलाह, धार्मिक आन्दोलन सभ उचित उत्साहक संग शुरू भ' गेल छल। एही वीच कृष्णमोहन वैनर्जी ईसाइ धर्म कें स्वीकार कए हिन्दू-धर्मक अंधविश्वासक विरोध मे प्रचार आरंभ क' देने छलाह। विद्यासागर सँ तीन वर्ष पैघ देवेन्द्रनाथ ठाकुर ब्राह्म-समाजक हेतु काज शुरू क' देने रहथि आ' जा विद्यासागरक विद्यार्थी जीवन समाप्त भेलन्हि, ओ एकरा एकटा सर्वथा पृथक् धर्मक रूप द' देने

रहथि। हुनक विद्यार्थी जीवनकालहिमे सरकारक शिक्षा-नीतिअ मे क्रांतिकारी परिवर्तन आबि गेल छल, जाहिमे शिक्षाक प्राचीन पद्धतिकें बढ़ावा देबाक पुरान नीति कें त्यागि अंग्रेजी शिक्षाक समर्थन कैल गेल। विभिन्न जिला मे जिला स्कूलसभक स्थापना भेल। तकर परिणामस्वरूप अंग्रेजी शिक्षा अत्यन्त लोकप्रिय भ' गेल छल।

ईश्वरचन्द्रक लालन-पालन एही असंतुलित संक्रमणकाल मे भेलन्हि। हुनक अन्तरक स्वभावज महानताक बीज सँ संजात अन्तःप्रेरणे हुनक व्यक्तित्व आ' कृतित्व कें एना विकसित कैलक जाहि सँ देशक भावी इतिहास में हुनका जे भूमिका ग्रहण करबाक छलन्हि ओ तकर योग्य बनि उठथि। एहि संघातक फलस्वरूप जे नवीन शक्ति जन्मग्रहण क' रहल छल, तकर रूपायन मे हुनका महत्वपूर्ण योगदान करबाक छलन्हि।

●

२. जीवन-गाथा

ईश्वरचन्द्रक पूर्वजलोकनिक आदि-निवास छलन्हि हुगली जिलाक वनमालीपुर गाम मे। पेशा सँ ओसब पंडित छलाह आ' संस्कृत साहित्यक शिक्षा देवाक हेतु पाठशाला चला कए जीविका-निर्वाह करैत छलाह। एहि गाथाक आरम्भ कैल जा सकैत अछि हुनक प्रपितामह भुवनेश्वर विद्यालंकार सँ। हुनका पाँचटा पुत्र भेल छलन्हि जाहि मे सँ तेसर वालक रामजय केँ ईश्वरचन्द्रक पितामह वनवाक सौभाग्य भेल छलन्हि।

पिताक निधनक पश्चात सब भाइ किछु दिन धरि एकहि संग रहलाह। मुदा शीघ्रहि रामजय खेदपूर्वक देखलन्हि जे हुनक भाइसब एक संग शान्तिपूर्वक नहि रहि सकैत छथि। ओ एहि सँ एतेक दुखी भेलाह जे अपन घर-परिवार दय बिनु किछु सोचनहि गृहत्याग क' कए चलि गेलाह।

ओहि समय मे हुनक परिवार मे छलथिन्ह चारि कन्या, दू पुत्र आ' पत्नी दुर्गादेवी, जनिका शीघ्रहि पता लागलन्हि जे हुनक देवर और भँसुर लोकनि हुनका सबकेँ किछु नहि देबऽ चाहैत छथि। की करतीह से किछु नहि फुरलन्हि। ओ वीरसिंह गाम मे जा' कए अपन पितृदेवक आश्रय-ग्रहण कैलन्हि। वीरसिंह गाम ताहि दिन मे हुगली जिला मे छल, मुदा बाद मे मेदिनीपुर जिलाक अन्तर्भुक्त कैल गेल छल। हुनक पिता उमापति तर्कसिद्धांत दयालु स्वभावक छलाह आ' ओ अपन कन्याक देखरेखक भार ल' लेलथिन्ह। सैह नहि, जाहि सँ हुनका अधिक स्वच्छन्दताक उपलब्धि होइन्ह ताहि लेल ओ हुनका सबकेँ एकटा पृथक कुटीर बनवा देलथिन्ह। परन्तु वार्धक्यक हेतु पिता अपन पुत्र सब पर कम-वेस निर्भरशील छलाह आ' ओसब अपन बहीनकेँ बहुत वेसी सहायता करऽ नहि चाहैत छलाह। जे किछु कम-सम सहायता हुनका सभक आँगुरक तर दय बहिरावैत छलन्हि, से एतेक पैघ परिवारक लेल यथेष्ट नहि छल। तँ दुर्गादेवी, जे कि परिश्रमी महिला छलथिन्ह, अपन आमद बढ़ाबै लेल सूत काटब आरंभ कऽ देलथिन्ह।

जाहि तरहें साहुसक संग माँ गरीबीक संग युद्ध जारी राखलथिन्ह से हुनक पँच वालक ठाकुरदासक मन मे प्रशंसाक भावनाक जन्म त देवे कैलक, अपितु किशोरावस्थे मे हुनका मे दायित्वबोधक उद्रेक सेहो कैलक। पन्द्रह वर्षक अवस्था मे पहुँचैत-पहुँचैत ठाकुरदास कें किछु शिक्षा प्राप्त भेल छलन्हि आ' ओ विचारलन्हि जे आव कोनो काज-धन्धा खोजि कए हुनका माँक वोझ कें किछु हल्लुक करबाक चाहियन्हि। तें ओ एहि कोमल वयसहि मे माँक आश्रय छोड़ि कए नौकरीक खोज मे कलकत्ता चलि गेलाह। बहुत कष्ट स्वीकार करवाक उपरांत हुनका दुइ टाका दरमाहाक एकटा काज भेटलन्हि। हुनक नीक काज सँ शीघ्रहि हुनक दरमाहा बढ़ि कए पाँच टाका भ' गेलन्हि। मुदा ताहि दिन मे एक टाकाक मोल वहुत बेसी छलैक। एहि तरहें परिवारक दुःख-कष्टक दिनक अवसान भेल।

तकर किछुए कालक वाद हुनक पिता रामजय तर्कभूषण अपन गाम घुरि कए देखलथिन्ह जे हुनक पत्नी ओहिठाम सँ चलि गेलि छथि। अंततः ओ वीरसिंह मे जा कए हुनका पौलन्हि और परिवारक संग ई पुर्नमिलन अत्यन्त आनन्दकर रहलन्हि। ओ पत्नीक बात मानैत ओतहि स्थायीरूप सँ रहवाक निश्चय कैलथिन्ह।

एम्हर ठाकुरदासक अवस्था विवाहयोग्य भ' गेल छलन्हि। हुनक पिता रामकान्त तर्कवागीश नामक एक तर्कशास्त्रीक पुत्री भगवती देवी कें हुनक पुत्रवधूक रूप मे निर्वाचित कैलथिन्ह। किछुए काल मे विवाह सम्पन्न भ' गेल आ' २६ सितम्बर, १८२० कें आशीर्वाद स्वरूप हुनकालोकनिक जेठ वालक ईश्वरचन्द्रक जन्म भेलन्हि।

जखन ईश्वरचन्द्र पाँच वर्षक भेलाह, हुनका कालीकांत चटर्जीक सुपुर्द कऽ देल गेलन्हि जे कि ओहि गाम मे पाठशाला चलबैत छलाह। तीने वर्ष मे गामक अध्यापक जतेक सिखा सकैत छलाह से ज्ञान-प्राप्त करैत ओ माता-पिताक हर्षक कारण बनि गेलाह। तें १८२८क नवंबर मास मे हुनक पिता उच्चशिक्षा-प्रदानार्थ हुनका कलकत्ता लऽ गेलाह।

ईश्वरचन्द्र बड़ाबजार मे शिवचरण मल्लिकक मकान सँ सटल प्राथमिक विद्यालय मे भर्ती कऽ देल गेलाह। मुदा किछुए दिनक भीतर ओ अत्यन्त बिमार पड़ि गेलाह आ' तें हुनका गाम लऽ जाय पड़लन्हि। स्वस्थ भेलाक

बाद हुनक पिता हुनका कोनो प्रतिष्ठित विद्यालय मे भर्ती करावै चाहलथिन्ह। एहि लेल तात्कालिक निर्णय लेब जरूरी छल। प्रायः दस वर्ष पहिनहि हिन्दू कॉलेजक स्थापना भेल छल। आ' अंग्रेजी शिक्षा लोक-प्रिय होइत जा' रहल छल। ओम्हर अपन प्राचीन नैतिक आधार पर ईस्ट इंडिया कंपनी मात्र किछुए दिन पूर्व संस्कृत-शिक्षाक विभिन्न शाखाक अध्ययन-अध्यापनक हेतु कलकत्ता मे एकटा दोसर संस्कृत कॉलेजहुक स्थापना कैने छल। एखन प्रश्न छल : ईश्वरचन्द्र कें प्रगतिशील सामाजिक तत्वसभक तर्क मानैत पश्चिमी शिक्षाक हेतु प्रेरित कैल जाय अथवा प्राचीन पद्धतिक संस्कृत शिक्षा देआओल जाय ?

एहि विषय मे ठाकुरदासक हेतु एकटा आओर बात बड़ महत्वपूर्ण भ' गेल छलन्हि। साधारणतया पिता अपन अपूर्ण इच्छाक पूर्ति अपन पुत्र द्वारा करावऽ चाहैत अछि। संस्कृत अध्ययनक परंपरा मे पालित भए ओ सबदिन सँ शिक्षाक उपरांत एकटा 'चतुष्पाठी' चलैबा लेल उत्सुक छलाह, मुदा परिवारक दिसि देखैत हुनका तकर विसर्जन देमै पड़लन्हि। तैं ओ ई विशेषरूप सँ चाहैत छलथिन्ह जे हुनक पुत्र संस्कृतक अध्ययन करथि आ' अध्ययनोपरान्त आपन पूर्वजसब जकाँ आपन गाम घर मे 'चतुष्पाठी'क स्थापना करैत संस्कृतक अध्यापन करथि।

सौभाग्यवश एहि महत्वपूर्ण स्थिति मे ईश्वरचन्द्रक मातृपक्षक एकगोट सम्बन्धी, मधुसूदन वाचस्पति, हुनका लेल एकटा समझौताक रास्ता बतौलन्हि। ओ अपनहि किछु दिन पूर्वहि संस्कृत कॉलेजक छात्र छलाह आ' तैं ओ ई सुझाव देलथिन्ह जे ईश्वरचन्द्र ओतहि भर्ती होथि। ताहि सँ पिताक इच्छानुसार हुनका केवल संस्कृत-शिक्षाक सुविधा भेंटतन्हि ततबे नहि, हुनका लेल प्राथमिक अंग्रेजी शिक्षाक पथो खुजल रहतन्हि, कियैक त ओतय से ऐच्छिक सहायक विषयक रूप मे पढ़ाओल जाइत छल। ई सुझाव मानि लेल गेलन्हि आ' एहि तरहें १८२६क १ जून कें ईश्वरचन्द्र संस्कृत कॉलेजक व्याकरण-अनुभागक तेसर कक्षाक विद्यार्थीक रूप मे भर्ती भ' गेलाह।

एहि प्रतिभाशाली विद्यार्थीक भविष्यक लेल ई निर्णय बाद मे अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रमाणित भेल छल। तैं ई अपेक्षित अछि जे एकर महत्व कें नीक जकाँ बुझि लेल जाय। जँ ओ हिन्दू कॉलेज मे भर्ती भेल रहितथि तँ

भरिसक पश्चिमी संस्कृति कें अपना लितथि, मुदा संस्कृत साहित्य मे अंकित हुनक अपन राष्ट्रीय संस्कृति सँ हुनक सम्बन्ध विच्छिन्न भऽ जैतन्हि। आ' दोसर दिसि, जँ ओ मात्र संस्कृत-शिक्षाक दिसि जैतथि त सरिपहुँ संस्कृतक मूर्धन्य विद्वान भए अँगरेजी साहित्य मे अंकित नवीन, सजीव आ' शक्तिशाली संस्कृति सँ हटि कए प्रायः अपन संकीर्ण अस्तित्व कायम रखितथि। संक्रमणक एहि स्थिति मे नेतृत्व दऽ सकय एहन प्रतिभाशाली व्यक्तिक लेल ई आवश्यक छल जे ओ दुनू तरहक ज्ञान कें सठिक मात्रा मे अपनाबथि। परिणामस्वरूप भारत कें टूटा संस्कृति सँ जे किछु भेंटल से छल दुनू संस्कृतिक संमिश्रण, एक संस्कृति द्वारा दोसर संस्कृतिक स्थानग्रहण नहि। ईश्वरचन्द्र जे अपन जीवनकाल मे दुनू संस्कृति के मिलाबऽ में सफल रहलाह तकर अधिक श्रेय एही बातकें छल जे हुनका अंग्रेजी आ' संस्कृत—दुनू शिक्षा प्राप्त हैबाक सुविधा भेंटल छलन्हि।

ईश्वरचन्द्र अल्प समयहि मे अपना कें प्रतिभाशाली विद्यार्थीक रूप मे प्रतिष्ठित कऽ लेलथिन्ह। दुइए वर्ष मे हुनका छात्रवृत्ति सेहो भेंटि गेलन्हि आ' १८३३ धरि ओ व्याकरणक समस्त पाठ सम्पन्न कऽ चुकल छलाह। एही वर्ष ओ साहित्यक पाठ शुरू कैलथिन्ह आ' दुइए वर्ष मे ईहो पूरा भ' गेलन्हि। एहि मे संस्कृत साहित्यक अनेक शास्त्रीय ग्रन्थ समाविष्ट छल। तकर अगिला वर्ष ओ अलंकारशास्त्रक अध्ययन पूरा कैलन्हि। तकर बाद दू वर्ष लगलन्हि वेदान्तक ज्ञान प्राप्त करबा मे। १८३८ मे ओ स्मृति पढ़लन्हि। प्रत्येक वर्षक अंत मे होमयवला परीक्षा मे ईश्वरचन्द्र प्रथम होइत छलाह, मुदा स्मृतिक परीक्षा मे ओ द्वितीय रहलाह। एहि मे कोनो संदेह नहि जे संस्कृत साहित्यक एहि विभिन्न शाखा मे अध्ययन कैलाक बाद भारतीय शास्त्रीय साहित्य मे हुनक अधिकार असाधारण भ' गेल छलन्हि।

१८२७ मे, संस्कृत कॉलेजक स्थापनाक दुइए वर्षक बाद एतुका पाठ्यक्रमक नवीकरण कैल गेल छल। कालक गति कें देखैत जे सब छात्र अंग्रेजी शिक्षाक लाभ उठाबै चाहैत छलाह, तनिका लोकनिक हेतु संस्कृतक नियमित पाठ्यक्रमक अतिरिक्त ऐच्छिक विषयक रूप मे अंग्रेजीक पठन-पाठन सेहो शुरू भेल। ईश्वरचन्द्र एकर पूरा फायदा लेब उचित बुझि कए १८३०क बाद सँ संस्कृतक संग-संग एहू विषय मे प्रवेश लऽ लेलन्हि। अध्यापक छलाह एक अंग्रेज—एम० डब्ल्यू० वालस्टन। दुर्भाग्यवश १८३५ मे एहि पाठ्य-

Indian Institute of Advanced Study
117178

क्रम कें बन्द कऽ देल गेल छल; मुदा अंग्रेजी शिक्षाक संग दीर्घकाल सम्बन्ध रहबाक कारणें ता धरि ईश्वरचन्द्र कें एहि भाषाक व्यावहारिक ज्ञान भ' गेल छलन्हि। एहि सँ हुनका लेल पश्चिमी शिक्षाक द्वार खुजि गेलन्हि।

ताहि दिन मे संस्कृतक प्रतिभाशाली विद्यार्थीक लेल हिन्दू कानून अधिकारीक जीविका भेंटबाक सुविधा छलन्हि। हिनकासब कें अदालत मे कार्यरत यूरोपीय जजलोकनि कें हिन्दू कानूनक व्याख्या करबाक काज करै पड़ैत छलन्हि। एहि लेल १८२१क विधिक धारा ११क अंतर्गत नियमानुसार हिन्दू विधि समितिक परीक्षा मे उत्तीर्ण होमय पड़ैत छल। युवा ईश्वरचन्द्रक लेल ई एकटा चुनौती छल जकरा ओ नौकरी हेतु गंभीर प्रयासक रूप मे नहि लऽ कए साधारण रूप मे ग्रहण कैलथिन्हि। किशोर अवस्थे मे संस्कृत कॉलेज मे अध्ययन करैत ओ १८३६क २२ अप्रैल कें एहि परीक्षा मे बैसि कए उत्तीर्ण भेल छलाह।

एहि समय मे समिति द्वारा देल गेल प्रमाण-पत्र, जे कि हुनका लेल गर्वक कारण छलन्हि, एहि तरहक छल :

"ईश्वरचन्द्र विद्यासागर कें हिन्दू विधिक ज्ञान मे पारंगत पाओल गेलन्हि आ' हिन्दू विधि अधिकारीक पद पर जे कोनो अदालत मे काज करबाक उपयुक्त घोषित कैल गेलन्हि।"

प्रमाण-पत्र पर परीक्षा-समितिक प्रधानक रूप मे एच० टी० प्रिंसेप आ' सदस्यक रूप मे टी० एन० आइ० आउस्वीक नाम छलन्हि।

एही वर्ष हुनका ज्योतिषक संग-संग न्यायक पाठ्यक्रमहु मे प्रवेश भेंटि गेलन्हि। ओ १८४१क दिसम्बर धरि दुनू पाठ्यक्रम कें सफलरूपें पूरा करैत विद्यार्थी-जीवनक समाप्तिक बाद कॉलेज छोड़ि देलथिन्हि। एहि बीच हुनक बौद्धिक मानक प्रशंसा स्वरूप विद्यार्थीक रूप मे हुनक प्रतिभा कें देखैत हुनक छात्रावस्थे मे संस्कृत कॉलेज सँ हुनका 'विद्यासागर'क उपाधि भेंटल छलन्हि। सरिपहुँ ओ अपन योग्यताक एहन आशातिरिक्त प्रमाण देने छलथिन्हि जे हुनका सँ दोसरहि तरहक व्यवहार कैल जाइत छलन्हि। ई विशेष रूप सँ उल्लेख करब उचित हैत जे जखन ओ वेदान्त-विषयक छात्र छलाह, हुनका दुइ मासक तात्कालिक पद पर व्याकरणक अध्यापकक रूप मे नियुक्ति देल गेल छलन्हि। एहि सँ ई पता चलैत अछि जे विद्यार्थी रहितहि

हुनका अधिकारी-वर्ग कतेक योग्य मानैत छलाह्। तखन हुनकर अवस्था प्राय: अठारह् वर्षक रहल हेतन्हि।

४ दिसम्बर, १८४१ कें हुनक प्रतिभामय छात्र-जीवनक योग्य प्रशंसा करैत कॉलेजक अध्यापकलोकनिक दिसिसँ सचिव रसमय दत्तक हस्ताक्षर मे हुनका एकटा प्रमाण-पत्र भेटलन्हि जे ओ ज्ञानक निम्नोक्त शाखासब मे पर्याप्त विद्वत्ता प्राप्त कैलन्हि : व्याकरण, साहित्य, अलंकारशास्त्र, वेदान्त-दर्शन, न्याय-दर्शन, ज्योतिष आ' धर्मशास्त्र।[1]

ई उल्लेखनीय अछि जे ताहि दिनक रीतिक अनुसार ईश्वरचन्द्रक विवाह चौदहे वर्षक अवस्था मे कऽ देल गेल छलन्हि। हुनका लेल हुनक पिता मेदिनीपुर जिलाक खिरपाइ गामक शत्रुघ्न भट्टाचार्यक कन्या श्रीमती दिनमयी देवी कें वधू चुनने रहथि।

भारत मे नौकरी करबाक लेल आगत यूरोपीयसभक प्रशिक्षणक लेल ईस्ट इण्डिया कम्पनी कलकत्ता मे एकटा कॉलेजक स्थापना कैने छल। एकर नाम फोर्ट विलियम कॉलेज छल। एतहुका पाठ्यक्रम मे हिन्दू आ' मुस्लिम विधि तथा बँगला अंतर्भुक्त छल। २९ दिसम्बर, १८४१ कें ईश्वरचन्द्र कें कॉलेजक 'सेरेस्तादार'क पद पर ५० टाका मासिक वेतन पर नियुक्ति देल गेल छलन्हिक यूरोपीय अधिकारीलोकनि कें प्रथम पण्डितक रूप मे बँगला सिखैबाक लेल।

एहि पद पर काज करैत काल ओ एहि उचित निश्चय पर पहुँचल छलाह् जे अंग्रेजीक ज्ञान और नीक जकाँ प्राप्त करबाक चाहियन्हि। कार्यावधिक बाद ओ एहि उद्देश्यक पूर्तिक लेल विशेष पाठ-ग्रहण करैत छलाह, जाहि सँ पश्चिमी शिक्षा प्राप्त करबाक हुनक आंतरिक इच्छाक प्रमाण भेटैत अछि।

चारि वर्षक बाद जा ओ संस्कृत कॉलेजक उप-सचिवक पद पाबि कए कॉलेज छोड़लथिन्ह, ता धरि ओ अंग्रेजी मे एतेक दक्षता प्राप्त कऽ चुकल रहथि जे जी० टी० मार्शल, फोर्ट विलियम कॉलेजक सचिव, विद्यासागरक आवेदनपत्र संस्कृत कॉलेजक अधिकारी-वर्ग कें पठैबा' काल मे अपन सिफारिश-पत्र मे एकर उल्लेख कैने रहथि। एहि मे ओ लिखने छलाह् जे

१. एतस्यैतेषु शास्त्रेषु समीचीना व्युत्पत्तिरजनिष्ट।

विद्यासागर 'अंग्रेजी भाषाक अत्यन्त उच्च स्तरक ज्ञान प्राप्त कऽ लेने छथि', आ' ताहि संग ईहो सामान्य शंसा जोड़ि देने रहथि :

"हमर विचारें हुनका मे एकहि संग असाधारण स्तरक ज्ञानार्जन, बुद्धिमत्ता, श्रमशीलता, सुन्दर स्वभाव और चारित्रिक दृढ़ताक अद्भुत संमिश्रण छन्हि।"

मुदा विद्या सागर वेसी दिन धरि संस्कृत कॉलेजक उप-सचिवक पद पर रहि नहि सकलाह। सचिव रसमय दत्तक संग हुनका पटलन्हि नहि, आ' १६ जुलाइ, १८४७ कें ओ अपन पद सँ त्यागपत्र दऽ देलन्हि।

प्राय: डेढ़ वर्ष धरि ओ बेरोजगार रहलाह। मुदा ई अल्प अवधि बेकार नहि गेलन्हि। ओ पुस्तक-प्रकाशन तथा विक्रय करबाक निश्चय कैलन्हि। ओ संस्कृत प्रेस आ' 'प्रेस डिपोजिटरी'क स्थापना कैलन्हि जे पारस्परिक सहयोगी संस्था छल। प्रेस संस्कृत आ' बंगला मे पुस्तक प्रकाशन करैत छल आ' दोसर संस्था विक्रयार्थ पुस्तक सब जमा करैत छल एवं ताहि पर कमीशन लैत छल। हुनक जीवनक अग्रिम भाग मे ई दुनू संस्था बहुत पैघ भ' उठल छल। इयैह हुनक आयक मुख्य स्रोत बनल एवं एही आय सँ हुनक अनेको तरहक परोपकारी दानक काज चलैत छलन्हि जाहि लेल हुनका 'दयार सागर' अर्थात् दयाक सागरक उपाधि भेंटल छलन्हि।

पुस्तक-प्रकाशनक स्रोत कें संजीवित रखबाक हेतु ओ स्वयं पुस्तक-रचनाक शुभ निश्चय सेहो कैने रहथि। एहि शृंखला मे हुनक सर्वप्रथम पुस्तक छलन्हि 'बेताल-पंचविंशति'क बंगला रूपान्तर। तकर अगिला वर्ष ओ बंगालक तात्कालिक इतिहास पर एकटा पोथी लिखलन्हि। तकर बाद सँ तँ लेखन हुनका लेल मानू व्यसन भऽ गेलन्हि, जे ताहि दिनक व्यस्त नेतृपुरुष हैबाक कारणें अत्यन्त व्यस्त रहितहुँ हुनक अवसर-विनोदक रूपमे सबदिन जारी रहलन्हि।

१८४९क आरम्भ भाग मे फोर्ट विलियम कॉलेजक मुख्य लेखक आ' कोषाध्यक्षक पद खाली भेला पर १ मार्च, १८४६ सँ विद्यासागर कें ताहि पद पर नियुक्ति भेंटि गेलन्हि। एहि तरहें ओ जतए पहिल बेरि नौकरी पओने रहथि ओही फोर्ट विलियम कॉलेज सँ पुन: सम्बद्ध भऽ गेलाह। मुदा ई नौकरी बेसी दिन धरि बनल नहि रहलन्हि, कारण तावत् ५ दिसम्बर, १८५० कें संस्कृत कॉलेज मे संस्कृत साहित्यक अध्यापनक हेतु हुनका बजा

लेल गेलन्हि। तकर बाद छबो सप्ताह नहि भेल कि हुनका १५० टाका मासिक वेतन पर कॉलेजक अध्यक्षक पद पर नियुक्ति भेंटि गेलन्हि।

ई दायित्वपूर्ण पद हुनका ई अवसर देलकन्हि कि हुनक एहि विद्या-मन्दिर कें एहन रूप देल जाय जे ओ पहिने सँ अधिक गुरुत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कऽ सकय। एक दशक धरि एतय छात्रक रूप मे बितैबाक कारणें हुनका एहि प्रतिष्ठानक दोष-त्रुटिक विषय मे सबटा पता छलन्हि। और सुयोग भेंटितहि राष्ट्रीय इतिहासक संक्रमण-काल मे समाजक प्रयोजनादि कें मन मे रखैत ओ एकरा एकटा सुयोग्य प्रतिष्ठानक रूप मे काज करबाक उपयुक्त बनैबाक लेल अनेक सुधार कैलथिन्ह। तकर मूल मे एहि संस्था कें न्यायसंगत ओ समयानुसारी बनैबाक उद्देश्य काज कऽ रहल छलन्हि, जाहि सँ ई सम्पूर्ण शिक्षा दऽ सकय तथा पछुआयल वर्गक लोगक हेतु सेहो अवारितद्वार रहय।

एहि सँ पहिने कॉलेज अन्यान्य देशीय शिक्षा-संस्थासभक धारा कें अपनाबैत प्रत्येक पड़ीब आ' अष्टमी कए बन्द रहैत छल। एहि रीति मे दू टा दोष छलैक। पहिल ई जे रविवारीक छुट्टीक नव-प्रवर्तित नियम सँ भिन्न भेलाक कारणें अनेक तरहक प्रशासनिक असुविधा होइत छल। आ' दोसर, चान्द्र तिथि पर आश्रित रहबाक कारणें छुट्टीक सूची बनायब कठिन छल कारण जे तिथि घटैत-बढ़ैत रहैत अछि। तें विद्यासागर एहि पुरान पद्धति कें छोड़ि कए अंग्रेजी स्कूल मे प्रचलित रवि कें छुट्टीक दिन मानैवला नव रीति कें अपनौलन्हि।

आरम्भ मे संस्कृत कॉलेज मे प्रवेश मात्र हिन्दूक उच्च वर्ण—ब्राह्मण एवं वैश्यक लेल सीमित छल। ओ एकरा अनुचित बुझि कए दूर कैलन्हि। ओ जातिक सीमा कें छोड़ि समस्त शिक्षित वर्गक हिन्दूक लेल एहि सुविधाक विस्तार कैलन्हि। एहि प्रकारें प्रवेशक द्वार पक्षपातहीन भऽ कए समस्त समुदायक लेल खुलि गेल।

पहिने कॉलेज मे प्रनिरार विद्यार्थीसब सँ कोनो फीस नहि लेल जाइत छलन्हि। विद्यासागर अपन अनुभव सँ एहि व्यवस्था कें मनोवैज्ञानिक दृष्टिएँ दोषपूर्ण मानलन्हि। जँ कोनो व्यक्ति कें बिनु पाइ खर्च कैनहि किछु भेंटैत छैक त ओ तकर यथार्थ मूल्य नहि बुझैत अछि, और तें ओकरा पैबाक लेल उत्सुको नहि होइत अछि। ई देखल गेल छल जे बहुसंख्यक छात्र

निःशुल्क शिक्षाक लाभार्थ अपन नामांकन त करबा लैत छल, किन्तु अधिकांश छात्र कक्षा मे नियमित रूपें उपस्थित होयब आवश्यक नहि बुझैत छल। परिणामतः उपस्थिति अत्यन्त असंतोषजनक छल। सन १८५४ मे विद्यासागर एहि छूट कें समाप्त कए दू टाका प्रवेश-शुल्क और एक टाका मासिक शुल्क लेब आरम्भ कैलन्हि। तकर जे परिणाम भेल ताहि सँ हुनका द्वारा लेल गेल ई निर्णय न्यायसंगत सिद्ध भेल।

ई पहिनहि कहल गेल अछि जे एहि कॉलेज मे किछु कालक लेल एकटा नव वस्तु चलाओल गेल छल जाहि मे इच्छुक विद्यार्थीलोकनिक लेल ऐच्छिक अंग्रेजी-शिक्षाक व्यवस्था कैल गेल छलैक। विद्यासागर स्वयं एहि व्यवस्था सँ पूर्ण लाभान्वित भेल छलाह, किन्तु दुर्भाग्यवश सन १८३५ मे ई व्यवस्था समाप्त क' देल गेलैक। विद्यासागर अंग्रेजी शिक्षा कें अत्यन्त मूल्यवान बुझैत छलाह और हुनका विश्वास छलन्हि जे प्राचीनो संस्कृत-शिक्षा-पद्धति सँ पढ़निहार विद्यार्थीक लेल शिक्षा तखनहि पूर्ण भ' सकैत अछि जखन ईहो शिक्षा भेटैक। अन्यथा, ओ सब पृथक्त्वक जीवन यापित करताह और पश्चिमी शिक्षा द्वारा प्रदत्त संस्कृतिक अधिक प्रबल धारा सँ कटि जैताह। सर्वांगीण मनुष्य बनैबाक लेल विद्यार्थी कें दुनूक आवश्यकता अछि, जेना कि हुनक अपन उदाहरण सँ पता चलैत अछि। तैं ओ एहि अतिरिक्त विधानक संग सन १८५२ मे एहि पद्धतिक पुनरारंभ कयलन्हि जे ई पाठ्य-क्रम ऐच्छिक नहि भऽ कए अनिवार्य होयत। एहि नीतिक अनुसार परवर्ती वर्ष सँ ओ पश्चिमी गणितक पाठ्यक्रमक सेहो व्यवस्था कैलन्हि।

१८५३ में बनारस संस्कृत कॉलेजक प्राचार्य डा० बैलन्टाइन कें अधिकारीगण एहि कॉलेजक निरीक्षणक हेतु आमन्त्रित कैलन्हि। ओहि निरीक्षणक विवरण मे विद्यासागरक कार्यक प्रचुर प्रशंसा छल, किन्तु एहि संग किछु पाठ्यपुस्तक कें बदलि कए ओकरा स्थान किछु अन्य ग्रन्थ रखबाक सिफारिस सेहो छलैक। एहि सँ ताहि समयक शासनाधीन शिक्षा-समिति, जे कि सबटा शिक्षण-संस्थाकें चलबैत छल, एवं विद्यासागर, जे संस्तुतिक किछु अंश कें की त गुणक आधार पर वा प्रस्तावित परिवर्तन हुनक देशक लेल अहितकर हैत—एहि आशंकाक आधार पर मानै लेल तैयार नहि छलथिन्ह। एहि दुनूक विवाद आरम्भ भ' गेल। ई विषय विस्तारित आलोचनाक योग्य नहि अछि, किन्तु एकटा पुस्तकक उल्लेख करब आवश्यक अछि जकर विशेष महत्व छलैक।

वैलन्टाइन सुझाव देने रहथि जे बिशॉप बर्कलेक पुस्तक 'प्रिंसिपुल्ज ऑफ ह्यूमन नॉलेज' पाठ्यपुस्तकक रूप मे राखल जाय। मुदा विद्यासागर एकर विरोध एहि आधार पर कैलथिन्ह जे ई हुनक देशक हितक लेल हानिकारक छल। हुनक तर्क एहि प्रकारक छलन्हि : भारतीय मन पहिनहि सँ 'वेदान्त'क पूर्णत: आदर्शवादी और संसारकेँ माया कहि कए उड़ा देमै वला दर्शनसँ आप्यायित छल। हुनका विचारेँ एहिसँ भारतीय जनक जीवन सम्बन्धी दृष्टिकोण पर एहन विपरीत प्रभाव पड़ल छल जे ओकरा भौतिक सुख सँ तटस्थ कऽ देने छल। जेँ कि बर्कलेक विचार एहिसँ किछु मिलैत छलैक, हुनका ई भय छलन्हि जे जँ जीवनक प्रति वैदान्तिक दृष्टिकोण केँ पश्चिमी दर्शनक समर्थन भेंटतैक तँ हुनक देशवासीक भौतिक प्रवृत्तिक प्रति घृणा और प्रगाढ़ भ' जैतैक। अन्ततोगत्वा, विद्यासागरक विजय भेलन्हि। ओ श्री मोआट केँ सशक्त शब्द मे एकटा प्रतिवाद-पत्र पठौलन्हि जाहि मे संस्थानक आभ्यन्तरीण कार्य-कलाप मे एकर प्रभारी हैबाक कारणेँ ओ अपन स्वतन्त्र अधिकारक स्वीकृतिक माँग कैलन्हि। अन्तत:, अधिकारीगण हुनक स्वतन्त्र अधिकार केँ स्वीकृत देलन्हि।

सन् १८५४ मे सर फ्रेडरिक हैलीडे बंगालक लेफ्टिनेन्ट गवर्नर नियुक्त भेलाह। ई विशिष्ट अधिकारी एकर पहिनहि फोर्ट विलियम कॉलेज मे अपन प्रशिक्षणक अवधि मे विद्यासागरक सम्पर्क मे आयल छलाह। तँ ओ पहिनहि सँ आन एहि अध्यापकक प्रशंसनीय गुणावली सँ परिचित छलाह। एहि मे कोनो विस्मयक गप्प नहि जे ओ बंगालक स्कूलसभक शिक्षा स्तरक उन्नतिक लेल अपन एक योजना मे विद्यासागरक सहायता सँ लाभान्वित होमै चाहैत छलाह। ओ चाहैत छलाह जे विद्यासागर एकरा अतिरिक्त कार्यक रूप मे ग्रहण कए एकर प्रारूप प्रस्तुत करथि। कॉलेजक प्राचार्यक पदक संगहि विद्यासागर केँ दक्षिण बंगालक स्कूलक निरीक्षक बना देल गेलन्हि जाहि मे अनुमानत: नदिया, हुगली, वर्धमान आ' मेदिनीपुर जिला अबैत छल। दुनू पदक हेतु हुनका एकत्र मे ५०० टाका महीना देल गेलन्हि।

शिक्षा-स्तरक उन्नति-साधनक हेतु विद्यासागर एकटा स्वकीय नीतिक अनुसरण कैलन्हि। ओ प्रत्येक जिला मे एक-एक आदर्श विद्यालय स्थापित करबाक निर्णय कयलन्हि जकर उद्देश्य ई छल जे आन-आन विद्यालय

सभक लेल एहि तरहक विद्यालयक शिक्षा-मान आदर्श बनि जायत और ओसब सबटा नव प्रवर्त्तन कें अपनाओत। मुदा ओ शीघ्रहि पौलन्हि जे एहि तरहक आदर्श विद्यालयक लेल नीक शिक्षकक आवश्यकता अनिवार्य छल और तेहन शिक्षक भेंटब कठिन अछि। अतएव मूल नीतिक परिपूरकक रूप मे ओ शिक्षक-प्रशिक्षण विद्यालय खोलबाक निर्णय लेलन्हि। एहि विद्यालय-सभक नाम नॉर्मल स्कूल राखल गेल।

ओ कतेक उत्साहपूर्वक अपन योजनाक संग अग्रसर होइत रहलाह तकर प्रमाण हुनका द्वारा प्राप्त सफलतहि सँ स्पष्ट होइत अछि। जुलाइ, १८५५ धरि हुनक अधीनस्थ चारू जिला मे एक-एकटा आदर्श विद्यालयक स्थापना भऽ गेल। ओहि क्षेत्र मे प्रशिक्षित शिक्षकक उपलभ्यता अव्याहत रहबाक हेतु नदिया, हुगली, मेदिनीपुर आ' वर्धमान जिला मे सब मिलाकए चारिटा नॉर्मल स्कूलक स्थापना सेहो कैल गेलैक। एही प्रकारें नारी-शिक्षाक क्षेत्र मे हुनक व्यक्तिगत प्रयास आ' तकर सूत्रपात कम प्रशंसनीय नहि अछि। हुनक अपन प्रयत्न सँ ओ पैंतीसटा कन्या-पाठशालाक स्थापना कैलन्हि, जाहि मे सँ बीसटा हुगली मे, एगारह वर्धमान मे, तीनटा मेदिनीपुर मे, और एकटा नदिया मे छल। जतय प्रयोजन भेलैक, ओ विद्यालय-स्थापना मे शीघ्रताक लेल अपन व्यक्तिगत कोषहु सँ लऽ कए पाइ देलथिन्ह। एहि तरहें हुनक अपन संचय सँ ३,४३६ टाका एहि काजक हेतु अग्रिम देल गेल।

अपन उत्साहक स्रोत मे ओ एतेक भसिया गेल छलाह जे कखनहु हुनका ई आशंका नहि भेलन्हि जे हुनक ई काज हुनका एकटा एहन विवाद मे फँसा देतन्हि जकर परिणाम दूरगामी हैतन्हि। सन् १८५४ मे प्रस्तुत 'वूड्स डेसपैच'क आधार पर शिक्षा-विभागक सांगठनिक रूप मे किछु परिवर्तन कयल गेल। वस्तुतः इएह हमरासभक देशक वर्तमान शिक्षा-पद्धतिक आधारशिला भेल। एकर संस्तुति पर लन्दन विश्वविद्यालयक आदर्श पर भारतवर्ष मे तीनटा विश्वविद्यालयक स्थापना कैल गेल। पहिलुका शिक्षा-समितिक कार्यभार ग्रहण करबाक हेतु निदेशक, लोक-शिक्षा-कार्यालयक स्थापना कैल गेल। डब्ल्यू० गॉर्डन यंग पहिल लोक-शिक्षा-निदेशक बनाओल गेलाह।

दुर्भाग्यवश, एहि युवा अधिकारी कें विद्यासागरक विद्यालय-स्थापनाक ई द्रुतगति पसिन नहि पड़लन्हि। किन्तु विद्यासागर एहि पर अटल रहलाह। एहि सँ दुनू मे मत-विरोधक उत्पत्ति भेल। एकर शमन लेफ्टिनेंट गवर्नर सर फ्रेडरिक हैलिडेक मध्यस्थता सँ भेल, जनिका विद्यासागरक

प्रति ममत्व छलन्हि। कन्या-पाठशाला सबकें अग्रिम रूप मे देल गेल धनराशिक वापसीक प्रश्न लऽ कए ई मत-विरोध चरम पर पहुँचि गेल। यंग निश्चित रूपें एहि वापसीक विरोध कऽ रहल छलाह, जखन कि विद्यासागर अपन एहि धनराशिक वापसीक लेल दृढ़ आग्रह करैत छलाह। विवाद एतेक बढ़ि गेल छलैक जे अन्तिम निर्णयक हेतु एहि विषय कें निदेशक-मण्डलीक समक्ष उपस्थित कैल गेल। अन्ततः, कम्पनी ई धनराशि विद्यासागर कें देब स्वीकार कऽ लेलक, किन्तु एकर बाद एहि अनुदान कें जारी राखब अस्वीकार कऽ देलक।

ई विवाद दुनूक सम्बन्ध कें एतेक कटु बना देलक जे विद्यासागर अपना कें विशेष रूपें असुविधा-ग्रस्त अनुभव कैलन्हि। यंग उच्चतर पद धिकारी हैबाक कारणें सुविधाजनक परिस्थिति मे छलाह और हुनक कार्यकलाप विद्यासागर कें आत्मसन्तुष्टिक संग अपन कार्य करैत रहबामे विघ्न उत्पन्न कैलक। तहजहिं ओ अपन कार्य मे हतोत्साह भऽ गेलाह आ' अन्ततोगत्वा त्यागपत्र देबाक निर्णय क' लेलन्हि।

हुनक त्याग-पत्र मे पद-त्यागक एहन-एहन कारणक उल्लेख छलैक जे दुर्भाग्यवश स्वयं लेफटिनेंट गवर्नरहुक संग हुनका विवाद मे फँसा देलकन्हि। एहि विवाद सँ एहि आश्चर्यजनक व्यक्तिक आन्तरिक सद्गुणावली सेहो स्पष्ट भेल। ओ देशक सर्वोच्च प्रशासकहु कें प्रसन्न करबाक लेल अपन सिद्धांत कें छोड़ऽ लेल प्रस्तुत नहि छलाह। एहि घटनाक प्रसंग किछु विस्तार मे जायब संगत हैत।

५ अगस्त, १८५८ कें लोक-शिक्षा-निदेशक, गॉर्डन यंगक नाम लिखल गेल अपन त्याग-पत्र मे ओ लिखने छलथिन्ह : "एहि सरकारी नौकरी सँ सम्बद्ध अपन कर्तव्यक सम्पादन मे हमरा जे निरन्तर मानसिक श्रम करै पड़ि रहल अछि से हमर सामान्य स्वास्थ्य कें एतेक खराब कऽ देलक अछि जे हमरा बाध्य भए बंगालक माननीय लेफटिनेंट गवर्नरक समीप त्याग-पत्र दाखिल करै पड़ि रहल अछि।"

किन्तु एहि पत्रक चारिम अनुच्छेद मे ओ ईहो महत्वपूर्ण बात लिखने छलथिन्ह : 'जे सब छोट-मोट कारण हमरा एहि प्रकारक गंभीर पदक्षेप लेबा लेल बाध्य कैलक, ओहि मे मुख्य बात अछि भविष्य मे कोनो तरहक प्रगतिक संभावनाक अभाव, और वर्तमान शिक्षा-पद्धतिक लेल तात्कालिक

वैयक्तिक महानुभूति, जे कि विभागक प्रत्येक सचेत व्यक्ति कें रहवाक चाहियन्हि तकर अभाव।" ओ और लिखलथिन्ह जे 'हुनक हृदय आब एहि काज मे संग नहि दए रहलछनि' जाहि सँ हुनक कर्मक्षमतो मे कमी भ' रहल छनि; वातावरण एहन भ' गेल छनि जे ओ आब उद्देश्यक प्रति इमानदारीक निर्वाह नहि कऽ सकैत छथि', जे कि हुनका विचारें 'प्रत्येक विवेकवान सरकारी कर्मचारीक हेतु अनिवार्य गुण हैवाक चाहियन्हि'।

एहन प्रतीत होइत अछि जे अधिकारी-वर्ग त्याग-पत्र त स्वीकार करै चाहैत छलाह, किन्तु ओ सब एहि बात पर जिद कऽ रहल छलाह जे त्याग-पत्र मे उल्लिखित 'गौण कारणसब'क विषय मे जे मन्तव्य छल, तकरा वापिस कऽ लेल जाय; कारण, एहि सँ हुनक वरिष्ठ पदाधिकारी गॉर्डन यंग एवं विदेशी सरकारक मनोभावक प्रति निन्दासूचक कटाक्ष ध्वनित होइत छल। तैं पहिने त गॉर्डन यंग ई प्रयत्न कैलन्हि जे ओ पत्रक एहि अंशक प्रत्याहार कऽ लेथि, मुदा विद्यासागर ताहि लेल प्रस्तुत नहि छलाह। ओ तथ्य कें दबैबाक पक्ष मे नहि छलाह और चाहैत छलाह जे पूर्ण सत्य निपिबद्ध रहय। तैं ओ एहि अनुरोधक प्रत्याख्यान कैलन्हि, मुदा अत्यन्त शिष्ट भाषा मे, कियैक त शिष्टता हुनक रक्त मे छल।

जें कि एहि मे शासक-वर्गक स्वार्थ निहित छल तैं एहि बात कें उच्चतम स्तर धरि पहुँचाओल गेल और तकर बाद मे देखैत छी जे विद्यासागरक पुरातन मित्र आ' संरक्षक सर फ्रेडरिक हैलीडे, जे ओहि समयक बंगालक लेफटिनेण्ट गवर्नर छलाह तनिकहि संग हुनका एहि बात पर गम्भीर विवाद बजरि गेलनि। हैलीडे हुनका त्याग-पत्र मे सँ स्वास्थ्यक कारण कें छोड़ि आर सबटा मन्तव्यक प्रत्याहार करबाक लेल प्रेरित कैलन्हि, मुदा ओहो विद्यासागर कें अपन पत्र मे परिवर्तन नहि करबाक दृढ़ निश्चय सँ विचलित नहि कऽ सकलाह।

एहि विषय कें लऽ कए हैलीडे एवं विद्यासागरक मध्य जे पत्र-विनिमय भेल छलन्हि तकरा पढ़ब अत्यन्त कष्टप्रद अछि, किन्तु एहि सँ बारम्बार एकटा विषय स्पष्ट भ' उठैत अछि आ' से भेल—विद्यासागरक महत् गुणावली। ई सर्वोच्च सत्ता आ' तकर अधीनस्थ कर्मचारीक मध्य इच्छा-शक्तिक एकटा असमान द्वन्द्व छल, किन्तु आश्चर्यक बात ई जे सर्वोच्च सत्ता

कें पराजय स्वीकार करै पड़लन्हि । हैलीडेक लेल ई शासक-वर्गक प्रतिष्ठा कें आघात पहुँचावै बला बात छल । विद्यासागरक लेल ई सत्यक पक्ष-ग्रहण करब छल, जकर मर्यादाक रक्षा कोनहु मूल्य पर कर्तव्य छलन्हि ।

जखन विद्यासागर कें अरुचिकर पत्रांशक प्रत्याहारक अनुरोध हैलीडे सँ भेंटलन्हि, तखन ओ ई जवाव देलथिन्ह : "गहन विचारक उपरांत हम ई पौलहुँ जे संगति वा औचित्य कोनो आधार पर हम ओहि अंश कें हटा नहि सकैत छी जे अहाँ कें अरुचिकर लागल अछि । ई ठीक अछि जे अस्वस्थता एक मुख्य अछि जाहि हेतु हम त्याग-पत्र पठौलहुँ । किन्तु शुद्ध अंतःकरण सँ हम ई नहि कहि सकैत छी जे इयैह एकमात्र कारण थीक । जँ सैह रहैत तँ हम दीर्घ अवकाश लऽ कए हुत स्वास्थ्यक पुनरुद्धार कऽ सकैत छलहुँ ।"[१]

ओ एकरा अपन स्वभावक अनुरूप शालीन रूपें समाप्त कैलन्हि : 'हमरा लेल एहि सँ बढ़ि कए अफसोसक बात दोसर नहि भऽ सकैत अछि जे हमर पत्रक उक्त अंशक कारणें अहाँ कें असुविधा-पूर्ण स्थितिक सामना करै पड़ि सकैत अछि; किन्तु शब्दक द्वारा हमर दुःखद भावना कें व्यक्त नहि कैल जा सकैत अछि जखन हम ई सोचैत छी जे नहि चाहलो उत्तर हम अहाँक कष्ट आ' असुविधाक कारण बनलहुँ ।"

विवाद एतहि समाप्त नहि भेल; एकर बादो दुनूक बीच पत्र-विनियम होइत रहल । अन्ततः बंगाल सरकारक अधस्तन सचिवक २५ सितम्बर, १८५८ कें लिखल लोक-शिक्षा निदेशक कें सम्बोधित पत्र द्वारा एकर समाप्ति भेल, जाहि मे विदयासागरक त्याग-पत्र कें सरकार द्वारा स्वीकार कैल जेबाक संदेश पठाओल गेल छलैक । एहि आदेशक पालन करैत कॉलेज हुनका संस्कृत कॉलेजक प्राचार्यक पद सँ ३ नवम्बर, १८५८ कें मुक्त कऽ देलन्हि । एहि तरहें एहि अप्रिय कथ क समापन भेल जाहि सँ विद्यासागरक नैतिक दृढ़ताक स्पष्ट प्रमाण भेटैत अछि आ' इयैह हुनका अपन प्रतिद्वन्दी सभ सँ ऊपर उठा देलकन्हि । सम्भवतः एना हैव देशक लेल हितकर छल । ई हुनका अपत प्रतिभा कें और पैघ क्षेत्र मे लगैवाक सुयोग देलकनि जे एकटा वैरभावापन्न वरिष्ठ अधिकारीक अधीन मे रहैत भेटब सम्भव नहि छलन्हि ।

१. एफ० आइ० हैलीडे कें सम्बोधित १ सितम्बर, १८५८ क पत्र ।

हुनका लेल अपन मातृभाषाक सेवा करब सब सँ प्रिय काज छलन्हि । हुनक लेल ई दुर्भाग्यपूर्ण छल जे अन्यान्य क्षेत्रमे हुनक प्रतिभा एवं विशेषतया हुनक प्रशासनिक दक्षता सब दिन सँ एहि मे बाधक छल । बात ई भेलैक जे ताहि दिनुका शासन-अधिकारीगण पूर्वहिसँ हुनक प्रतिभा सँ परिचित छलाह, आ' ओसब तकर सदुपयोग शिक्षा-विभागक संचालन तथा विकास मे करै चाहैत छलाह । अपन प्रियतम उद्देश्यक हेतु काज करबाक सब सँ पहिल सुयोग हुनका तखन भेटल छलन्हि जखन ओ संस्कृत कॉलेजक सचिव सँ झगड़ा भेला पर उप-सचिवक पद सँ त्याग-पत्र दऽ देने रहथि । से छल सन् १८४७ क जुलाइ मास । ताहि काल सँ लऽ कए १८४६ क प्रथम मास धरि, जखन हुनका फोर्ट विलियम कॉलेज मे नौकरी भेटल छलन्हि, ओ कतोक दिन स्वतन्त्र रहथि और इच्छानुसार काज कऽ सकलाह ।

ओ एहि स्वल्पकाल-स्थायी अवकाशक केहन सदुपयोग कैलन्हि से एहि अध्यायक आरंभहिमे वर्णित भेल अछि । बंगला साहित्यक उन्नतिक लेल हुनका मात्र ग्रन्थ-रचनेटा नहि करै पड़ल छलन्हि, अपितु ओहि ग्रन्थसभक प्रकाशन तथा विक्रयक उपायो करै पड़लन्हि । एहि तरहेँ प्राय: व्यापारिक ढंग सँ ओ दूटा सहयोगी संस्थानक स्थापना कैलन्हि—मुद्रण तथा प्रकाशनक लेल संस्कृत प्रेस और एकर प्रकाशनक विक्रीक लेल प्रेस डिपोजिटरी । ओ स्वयं त लिखलन्हिए, अन्याय प्रतिभाशाली लेखकहु सबकेँ पुस्तक रचनाक हेतु प्रोत्साहित कैलन्हि जाहिसँ ओ तकरा सबकेँ प्रकाशित कऽ सकथि । उदाहरणस्वरूप हुनक मित्र मदन मोहन तर्कालंकारकेँ लेल जा सकैत अछि, जनिका काव्य-रचनामे रुचि छलन्हि और जनिका धीयापुतासभक लेल रुचिगर 'शिशुपाठ' मालाक अंतर्गत पुस्तक सभक रचना लेल बाध्य कैल गेलन्हि । बंगला साहित्यमे धीयापुता सभक लेल ईसब पहिल पुस्तक छल ।

अत: एहिमे कोनो आश्चर्यक बात नहि जे जखन ओ सरकारी नौकरीसँ पद-त्यागपत्र देबाक विषयमे गंभीरतासँ सोचि-विचारि रहल छलाह तखन जे चिन्ता हुनक मनमे, सर्वोपरि छलन्हि आ' भरिसक पद-त्याग करबाक निर्णय लेबामे अनुप्राणित कैने छलओ छल एहन अखंड अवकाशक आशा जाहिमे ओ अपन मातृभाषाक सेवा कऽ सकथि । हुनक त्याग-पत्रक निम्नोक्त अंशसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे सरकारी नौकरीसँ अवकाश-प्राप्त कैला उत्तर हुनक

कर्म सूचीक परिकल्पना इयैह् छलन्हि : 'जहिना हमर स्वास्थ्य ठीक हैत, हमर इच्छा अछि जे हम अपन समय आ' ध्यान बँगलाक जन-भाषामे ग्रन्थ-रचना और कार्योपयोगी ग्रन्थसभक संकलन करबामे लगावी।'

एहि समयमे ओ वाल्मीकिक तपोवनमे सीताक निर्वासित जीवनक कथाक अवलम्बन क' लिखित भवभूतिक संस्कृत नाटकक आधार पर अपन सर्वप्रसिद्ध कृति 'सीतार वनवास'क रचना कैलन्हि। ई ग्रन्थ १८६१ मे प्रकाशित भेल। एही समयमे ओ सुविख्यात प्राचीन संस्कृत ग्रन्थसभक संपादन और प्रकाशनक काजो कैलन्हि। एहिमे कालिदासक 'कुमारसम्भव', मेघदूत', और 'अभिज्ञान-शाकुन्तल' सन श्रेष्ठ साहित्य-कृति सेहो अछि। परम परिश्रमपूर्वक भारतक विभिन्न स्थान सँ संगृहीत हस्तलिखित पोथीसभक पाठक तुलना करैत ओ जे तकरा सभक पाठोद्धार कैने छलाह् ताहिसँ ईसब और मूल्यवान भऽ गेल छल। जतय हस्तलिखित पोथीसवमे अन्तर छल ततय ओ ओहि पर सतर्कताक संग विचार कए जे पाठ मूलक अधिक निकट प्रतीत होइत छलन्हि तकरहि स्वीकार करैत छलाह्।

किन्तु हुनक अपार शक्ति कोनो एकहि प्रकारक काजमे बान्हल नहि रहि सकैत छलन्हि। साहित्यसँ अत्यधिक प्रेम रहितहुँ ओ अपनाकेँ कैकटा अन्यान्य क्षेत्रहुमे संलग्न पौलन्हि। एहिमे एकटा पैघ काज छल हिन्दू-समाजमे स्त्रीक न्यायपूर्ण अधिकारक लेल संघर्ष द्वारा ओकरा उपयुक्त स्थान दिआयब। इहो आरंभहिसँ हुनक एकटा प्रिय काज छलन्हि। जखन ओ संस्कृत कॉलेजक प्राचार्य छलाह् तखनहु विधवा-विवाहक अधिकारक हेतु हुनका हिन्दू-समाजक अंध-विश्वासी वर्गसँ अनवरत संघर्ष करै पड़लन्हि। हुनक प्रयाससँ सन् १८५६ मे नारीक एहि अधिकारक रक्षाक लेल सरकार द्वारा कानून बनल। एहि विषयमे एक परवर्ती अध्यायमे विस्तारसँ विचार कयल जायत।

बंगाली ब्राह्मण समाजमे बहु-विवाहक समस्या सेहो छल। एकरा नीक जकाँ बुझबाक लेल ई आवश्यक अछि जे पाठकक समक्ष किछु पृष्ठभूमिक परिचय प्रस्तुत कैल जाय। एकटा एहन समय छल जखन बंगालमे कैक शताब्दीसँ बौद्ध धर्मक प्राधान्यक कारणेँ ब्राह्मण-धर्म दुर्दशाग्रस्त भ' गेल छल। बंगालक एक छोट-सन राजा आदिसूर अपन राज्यमे ब्राह्मण-धर्मक पुनरुज्जीवनक हेतु गंभीर रूपेँ आग्रही भेलाह्। ओहि समयमे ब्राह्मण-सभक एतेक

दूर धरि पतन भऽ गेल छलन्हि जे ओसब अपन वैदिको संस्कार बिसरि गेल छलाह; आओर ने ओ लोकनि विवाह पर जातिवादक बंधनक विषयेमे सद्विवेकी छलाह।

पहिल समस्याक समाधानक लेल ओ कन्नौजसँ पाँच वीछल ब्राह्मणकेँ आनलन्हि, जाहिसँ ओसब स्थानीय लोककेँ वेदाचार सिखा सकथि। ब्राह्मणक उच्च वर्गमे रक्तक शुद्धताकेँ सुरक्षित रखबाक हेतु ओ कुलीनवादक प्रवर्त्तन कैलन्हि। ओ किछु संख्यक ब्राह्मण-परिवारकेँ विशेष मर्यादा प्रदान कए हुनका सबकेँ कुलीन आख्या दए गोष्ठीवद्ध कैलन्हि। एहि गोष्ठीक बाहर एहि परिवारस्थ स्त्री-पुरुषक विवाह ओ निषिद्ध कऽ देलथिन्ह।

अपन प्रारंभिक समयमे त ई कुलीनवाद नीक जकाँ चलैत रहल। मुदा कैक पीढ़ीक उपरांत सामाजिक क्रियाकांडमे प्रभूत क्षमताशाली देवीवर घटक नामक एक व्यक्ति सोचलन्हि जे हिनका सबमे एकटा नव नियमक प्रवर्त्तन हैब उचित हैत। ओ पौलन्हि जे एहिमे किछु परिवार अवांछित क्रियासँ संलग्न रहलाक कारणेँ स्खलित भऽ गेल छथि। तँ ओ एहि कुलीन सबकेँ हुनका सभक क्रियाक उत्कर्षक आधार पर उपवर्गमे विभाजित कैलन्हि। जनिका ओ सर्वोत्कृष्ट बुझलथिन्ह तनिका लोकनिकेँ एक वर्गमे आओर जनिका अपेक्षाकृत निकृष्ट बुझलथिन्ह तनिका दोसर वर्गमे—एना कए ओ सबकेँ वर्गीकृत कैलन्हि। ओ एहन एक उपवर्गसँ दोसर उपवर्ग मध्य विवाहो पर प्रतिबंध लगा देलन्हि। एहिमे विवाहक हेतु किछु परिवारक दोसर परिवारसँ संबधन होइत छल, तँ एकरा 'मेल-बंधन'क नाम देल गेलैक।

एहि नव नियमक फलस्वरूप एहि श्रेणीक ब्राह्मणसबमे बहु-विवाहक प्रचलन द्रुतगतिसँ वृद्धि पावै लागल। विवाहकेँ परिवारमे जन्मल कन्याक लेल अनिवार्य बुझल जाइत छल; तँ ई स्वाभाविके अछि जे पितामाता वरक खोजमे सदा उद्विग्न रहैत छलाह। मुदा एहि आरोपित प्रतिबन्धक फलस्वरूप वर बहुत कम भेटैत छल और उपयुक्त वर्गक ब्राह्मण-वरक अत्यधिक माँग छल। स्थिति एतबा धरि पहुँचल जे विवाहक धार्मिक रीति-निर्वाह सर्वाधिक अनिवार्य अंग भऽ गेल एवं वरक आयु तथा ओकर पूर्व-विवाहक विषयक कोनो महत्व नहि देल जाइत छल। एहि प्रकारेँ पाँच वर्षक बालकोक वैह माँग छल जतबा कोनो एक दर्जन जीवित पत्नीबाला सत्तरि वर्षक वृद्धक।

वर्धमानक महाराज महताबचन्द, जे एहि दुर्नीतिक विरुद्ध संग्राममे विद्यासागरक हाथमे हाथ मिलौने छलथिन्ह, हुनक निम्नलिखित संक्षिप्त टिप्पणीसँ एहि समस्याक गंभीरताक पता चलैत अछि :

"कुलीन मात्र टाकाक लेल विवाह करैत अछि; विवाह-संबंधी कर्त्तव्य-पालनक कोनो उद्देश्य ताहिमे नहि रहैत अछि। जे महिला नाम-मात्रक लेल एहि तरहेँ विवाहित छथि, जाहिमे वैवाहिक सुख-भोगक कोनो आशा नहि रहैछ, ओसब या त हृदयमे सहज रूपेँ उमड़ैत प्रेमक लेल कोनो आश्रय नहि पाबि सीदित रहैत छथि वा अपन अशिक्षाक कारण आओर वासनाक आवेगमे अनैतिकताक दिसि चलि जाइत छथि।" [1]

एहन प्रतीत होइत अछि जे कुलीनमे बहु-विवाह पर प्रतिबन्ध लगैबाक लेल आन्दोलन विधवा-विवाहकेँ कानूनी मान्यता भेंटबाक तुरत बादे आरंभ भेल। किन्तु ई आन्दोलन तखन एतेक जोरदार भरिसक एहि लेल नहि भऽ सकल जे ओहि समयमे इतिहास-विख्यात सिपाही विद्रोह देशमे एकटा राजनैतिक उथल-पुथल उपस्थित कए एहन एकटा अस्वाभाविक अवस्थाक सृष्टि कैने छल; जाहिमे कोनो सामाजिक समस्याक विषयमे सोचबाक अवकाश जनता वा सरकार ककरहु नहि छल।

गत शताब्दीक छठम दशकमे आबि ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एहिमे रुचि लेलन्हि आओर आन्दोलनकेँ नेतृत्व देलन्हि। ओ एहि कुरीतिक सटीक विश्लेषण कऽ कए जानलन्हि जे एकरा आमूल समाप्त करबाक लेल देवीवर द्वारा कुलीन उप-वर्गसब पर लगाओल प्रतिबन्ध हँटाबै पड़तैक। ओ प्रस्ताव देलन्हि जे कुलीन सबकेँ अन्य उप-वर्गमे विवाहक छूट हैबाक चाहियन्हि।

अपन स्वभावसिद्ध उत्साहक संग ओ एहि काजक प्रस्तुतिक रूपमे पुस्तिका रचना द्वारा व्यापक प्रचार चलौलन्हि। तत्पश्चात् ओ २१,००० हस्ताक्षरक संग सरकारसँ माँग कैलन्हि जे बहु-विवाह पर कानून द्वारा रोक लगाओल जाए। १८ मार्च, १८६६ तक एहि माँग-पत्र पर नदियाक महाराज सतीश चन्द्र राय, राजा राजेन्द्र मल्लिक, महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर आ' राजेन्द्र लाल मित्र सन विभूतिक हस्ताक्षर छलन्हि। विद्यासागर अपने सबसँ नीचाँमे हस्ताक्षर कैलन्हि। दुर्भाग्यवश, एहि माँग-पत्रक प्रति सरकारक प्रतिक्रिया अनुकूल नहि रहल।

---

१. चंडीचरण बैनर्जी, 'विद्यासागर', आठम अध्याय।

इयेह ओ समय छल जखन विद्यासागर कॉलेजी शिक्षाक प्रसार दिस सेहो गंभीरतापूर्वक ध्यान देलनि। शिक्षा-व्यवस्थाक पुनर्गठन पर वुडक संस्तुति मंजूर करबाक बाद सरकार हिन्दू कॉलेजक प्रबन्ध अपन हाथमे लऽ लेलक आ' ओकर नाम प्रेसिडेन्सी कॉलेज कऽ देलक। कलकत्ता विश्वविद्यालयक स्थापना सेहो भऽ गेल छल आ' अजुके जकाँ ताहिकालमे कालेज सबमे नियमित अध्ययन-अध्यापनक काज शुरू भऽ गेल छल। अंग्रेजीमे उच्च शिक्षा देब मुख्यत: सरकारक कर्त्तव्य भऽ चुकल छल। रेवरेण्ड डफ सेहो अपन विद्यालयकेँ कॉलेज बना देने छलथिन्ह, जे आइकाल्हि स्कॉटिश चर्च कॉलेज नामसँ विदित अछि।

एहो पृष्ठभूमिमे विद्यासागर पुरुषक लेल कालेज स्तरक शिक्षाक काजमे जुटि गेलाह। शंकर घोष लेनमे कलकत्ता ट्रेनिंग स्कूलक नामसँ एकटा स्कूल खोलल गेल। परिचालक समितिक सदस्य लोकनिक आपसी झगड़ाक फलस्वरूप विद्यालयक बन्द भऽ जैबाक स्थिति आबि गेलैक। एहिमे सँ एक वर्ग विद्यासागरक सहायता माँगलक। ओ एहि माँगकेँ स्वीकार करैत १८६४ मे एकर सचिव पदक भार सम्हारलन्हि। ओ एकर नाम 'हिन्दू मेट्रोपोलिटन स्कूल' राखलन्हि। एहि काजक प्रतिक्रिया एहन भेल जे किछुये कालमे ई स्कूलसँ कॉलेज बनि गेल।

विद्यासागरक तत्वावधानमे विद्यालय समृद्ध भेल आ' अनेक विद्यार्थी कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक लेल एण्ट्रेन्स' (प्रवेशिका)क परीक्षा एतहिसँ पास कैलक। ई विद्यार्थी सब हिन्दू समाजक दरिद्रतर वर्गक छल, तेँ ई सभ सरकार द्वारा संचालित प्रेसिडेन्सी कॉलेजमे उच्च शिक्षा प्राप्त करबामे असमर्थ छल। डफक कॉलेजमे फीस तँ कम छल, जे ओ सभ जुटा सकय, किन्तु ताहिमे एकटा बाधा छल। लोकसबमे ई धारणा छल जे एतय छात्र-सबकेँ ईसाइ-धर्ममे दीक्षित करबाक काजकेँ सक्रिय प्रोत्साहन भेटैत छैक।

एहो असमंजस स्थितिकेँ देखैत विद्यासागर स्कूलकेँ कॉलेज बनैबामे बाध्य भेलाह। ओ सोचलन्हि जे एहन स्थितिक समाधान एहीमे अछि जे हिन्दू द्वारा संचालित कम फीस बाला एकटा कॉलेजक स्थापना कैल जाय। २६ जनवरी, १८६२ मे कलकत्ता विश्वविद्यालय सिण्डिकेटक प्रभावशाली सदस्य

ई० सी० बेलीके लिखल पत्रमे जे ओ निर्धोख अभ्युक्ति कयने छथि ताहिसँ ई बात स्पष्ट होइत अछि । पत्रमे एतत्संबंधी अंश एहि प्रकारक छल :

"हम अत्यन्त आग्रह संग अहांके ई अवगत कराबै चाहैत छी जे हम सब अपन संस्थानकें एकटा हाइस्कूल (कॉलेज) मे रूपान्तरित करबाक तीव्र आवश्यकताक अनुभव करैत छी । प्रेसिडेन्सी कॉलेजमे जतेक फीस लेल जाइत छैक से मध्यम वर्गक अनेक युवकक लेल उच्च शिक्षाक मार्गमे अवरोधक भ' जाइत छैक, और ओकरा सभक माता-पिता ओकरा सबकें मिशनरी कॉलेज सबमे पठाबै नहि चाहैत छथि, तँ ओसब मैट्रिकक बादे विद्याध्ययन त्यागि देबा लेल बाध्य होइत अछि । ई संस्थान एहन लोकसभक लेल वरदान हैत ।"

विद्यासागरक प्रार्थना स्वीकार कऽ लेल गेलन्हि और एहि तरहें सन् १८७२ मे संस्थानकें कलकत्ता विश्वविद्यालयक फर्स्ट आर्ट्स (एफ० ए०) क परीक्षा देमैवला विद्यार्थी लोकनिक हेतु अध्यापनक अनुमति भेंटि गेल । शिक्षाक स्तर एतेक उत्कृष्ट छल जे ई खलबली मचा देलक, कियैक त ई क्यो नहि सोचि सकैत छल जे कोनो गैर-सरकारी संस्थान यूरोपियन अध्यापक-लोकनिक सहयोगक बिनहि अंग्रेजीक माध्यमसँ एतेक सफलताकपूर्वक शिक्षा दऽ सकय । मुदा विद्यासागरक संस्थान हुनका निराश नहि होबय देलक । विश्वविद्यालयमे अन्तर्भुक्तिक दुइए वर्षक बाद, १८७४ ई० मे एतुका एकटा विद्यार्थी समस्त आलोचककें चकित करैत एफ० ए० परीक्षामे योग्यताक्रमे द्वितीय स्थान प्राप्त कैलक । एहि कृतित्वक पश्चात् औरो उन्नयन सुगम भ' गेल । विश्वविद्यालय एकरा प्रथम श्रेणीक कॉलेजक स्वीकृति दैत एकरा बी० ए० स्तरक अध्यापनक अधिकार प्रदान कैलक । विद्यासागरक सुयोग्य प्रशासनसँ कॉलेज समृद्धशाली बनैत रहल और १८८७ मे एकर अपन भवनो बनि गेल ।

एहि प्रकारक श्रममय जीवन क्रमशः विद्यासागरकें भग्नस्वास्थ्य बना देलक । जे शक्तिशाली पुरुष अपन मायसँ भेंट करबाक वचनक पालनार्थ अशान्त दामोदरक बाढ़िओक परवाहि नहि करैत छलाह, से आब क्रमशः अपनाकें पंगु होइत पौलन्हि । जीवनक विभिन्न क्षेत्रमे कैल गेल उत्कृष्ट सेवाक लेल हुनका प्रतिष्ठा पर प्रतिष्ठा भेंटैत गेलन्हि । १८६४ मे लंदनक रॉयल एशियाटिक सोसाइटी हुनका अपन सम्मानित सदस्य चुनलक ।

१८८३ क नववर्षोत्सवक प्रथम दिन महारानी हुनका 'कमाण्डर ऑफ इण्डियन एम्पायर' बनौलन्हि।

जीवनक एकहत्तरिम वर्षमे दीर्घ दुःखदायी रोगक पश्चात् २६ जुलाइ, १८६१ कें हुनक देहान्त भऽ गेलन्हि। हुनक पत्नीक देहान्त हुनकासँ तीन वर्ष पूर्वहि भऽ गेल छलन्हि। हुनक देश-वासी हुनक मृतात्माक प्रति योग्य सम्मान प्रदर्शनक हेतु शव-दाहक लेल हजारक संख्यामे आबि कए श्रद्धांजलि अर्पित कैलक। बंगालक लेफ्टिनेण्ट गवर्नर सर चार्लस एलियटक सभापतित्वमे २७ अगस्त, १८६१ कें कलकत्ताक टाउन हॉलमे आयोजित एक सभा द्वारा एहि शोक-प्रदर्शनक उपयुक्त समापन भेल।

३. स्त्री-अधिकारक समर्थक सामग्री

समाजमे कोनो विलक्षण व्यक्तिकें सर्वसम्मतिसँ कोनो उपाधि भेटबाक प्रक्रिया विचित्र अछि। विद्यासागर अपन प्रसिद्ध उपाधि तँ अपन पांडित्यक बलें एकटा लब्धप्रतिष्ठ संस्थानसँ अर्जित कैलन्हि। किन्तु ई क्यो नहि कहि सकैत अछि जे ओ ओतबे प्रसिद्ध उपाधि 'दयार सागर' कोन प्रक्रियासँ प्राप्त कैलन्हि। ई हुनक दयाक असंख्य काजक द्वारा प्राप्त ख्यातियेक परिणाम थीक। जनताक इच्छा ई उपाधि दऽ कए ताहि पर अपन मोहर लगा देलक।

तँ विद्यासागर जे नारी अधिकारक सबसँ पैघ रक्षक भऽ गेल छलाह तकरा बुझब अत्यन्त सहज अछि। हुनक दयालु हृदये हुनका एहि क्षेत्रमे एकटा अप्रतिरोध्य शक्तिक रूपें आकृष्ट कैलक। ओहि समय हिन्दू समाजक शरीरमे कैकटा विकृत घाव छलैक, जाहिमे सँ हुनक ध्यान सर्वप्रथम गेलन्हि समाजमे नारीक निम्न स्थानक दिसि। समाजमे दू प्रकारक आचार-संहिता छलैक, एकटा छल सकल सामाजिक सुख-सुविधाक अधिकारी पुरुष जातिक-हेतु, आ' दोसर छल एहि सुख-सुविधासँ वंचित नारी-जातिक हेतु। एहि प्रकारक भेद-भावक मूल कारण छल स्त्रीगणक पुरुष पर आर्थिक दृष्टियें आश्रित हैब, और एहि स्थितिसँ लाभ उठबैत पुरुषक-वर्ग अपना लेल समस्त सुविधा संरक्षित राखि कए स्त्रीगणकें ओकर न्यायपूर्ण अधिकारो धरि नहि देबऽ चाहैत छल। ओना एक तरहें, समस्त मानव-समाजेक एहन धारा छल, मुदा विद्यासागरकें ई अनुभव छलन्हि जे स्त्रीगणक प्रति बंगाली पुरुषक मनोभावमे ईसब कुलक्षण अत्यन्त प्रबल भऽ उठल छल।

एहि विषयमे हुनक विचारधारा बहु-विवाह-निरोधक लेल लिखल हुनक एकटा पुस्तिकामे स्पष्टरूपें अभिव्यक्त भेल छलन्हि, जाहिसँ एतय किछु उद्धरण देल जा रहल अछि :

"स्त्रीगण अबला छथि और दोषपूर्ण सामाजिक पद्धतिक कारणें ओसब पूर्णतः पुरुष-जातिक अधीन भऽ गेल छथि। एहिसब कारणें हुनका लोकनिकें सुख-सुविधा-रहित दलित वर्ग जकाँ दिन काटै पड़ैत छन्हि। शक्तिशाली पुरुष-वर्ग सुविधाजनक स्थितिकें पाबि अपन इच्छानुसार हुनकासब पर

अत्याचार और अन्यायपूर्ण व्यवहार करैत अछि। एहिसँ बचबाक कोनो उपाय नहि रहलाक कारणेँ हुनकासबकेँ इ सबटा धैर्यपूर्वक सहैँ पड़ैत छन्हि। सम्पूर्णसंसारमे नारीक स्थिति लगभग इयैह अछि। किन्तु एहि दुर्भाग्यपूर्ण देशमे पुरुषक अत्यधिक निर्दयता, स्वार्थपरता, और विचारहीनताक कारणेँ भेल स्त्रीगणक दुर्दशाक कतहु समानान्तर उदाहरण नहि भेँटैत अछि।"

अतएव, एहिमे कोनो आश्चर्यक बात नहि जे हुनक दयालु हृदय अत्यधिक द्रवित भेल छल और स्वार्थी पुरुष-वर्ग द्वारा स्त्रीगण पर जबर्दस्ती लादल एकटा अन्यायपूर्ण समाज-व्यवस्थासँ नारीक न्यायसंगत अधिकारक उद्धारक लेल निरन्तर संग्राम करबाक लेल हुनका बाध्य कैलकन्हि। मुदा एकटा निपुण योद्धा जकाँ ओ अपन एकटा अलगे रणनीति प्रस्तुत कैलन्हि और अपन अभियान सुचारु-रूपसँ चलौलन्हि। ई अभियान हुनक जीवनमे सुदीर्घ काल धरि चलैत रहल और अपन कर्मशक्तिक कथे कोन आर्थिक साधनक सेहो अधिकांश भाग ओ एहीमे लगा देने छलाह।

वस्तुत: स्त्री-अधिकारक लेल प्रचार-अभियानक हेतु ओ एकटा त्रिमुखी युद्धक योजना बनौने छलाह। स्त्रीगण पर प्रतिबंध लगबाक मुख्य कारण छल हुनकासभक शक्तिहीनताक स्थिति। तेँ एहि कुरीतिक विरुद्ध लड़बाक सबसँ नीक उपाय छल एकर जड़ि पर प्रहार करब। स्त्रीगणकेँ शिक्षा भेँटबाक चाही जाहिसँ ओ अपन अधिकारक विषयमे सजग भऽ जाथि और पुरुषक समान भऽ अपन अधिकारक लेल लड़ि सकथि। तेँ हुनक कार्यक्रममे स्त्री-शिक्षाकेँ सर्वाधिक प्राथमिकता देल गेल। तकर बाद अबैछ ओहि असमर्थताकेँ समाप्त करबाक बात जकरा कारणेँ स्त्रीगण पुरुषक समान अधिकार-भोगसँ वंचित रहैत छलीह। अत: हिन्दू-विधवाक पुनर्विवाह अधिकार छल अगिला डेग। हिन्दू पुरुषक बहुविवाह प्रथाकेँ निषिद्ध करब सेहो एही कोटिमे अबैत अछि। सामाजिक न्यायक ई माँग छल जे बहुविवाह प्रथा समाप्त हो, जाहिसँ स्त्री और पुरुष वैवाहिक संबंधक विषयमे समान मर्यादाक भागी भऽ सकथि।

एहन प्रतीत होइत अछि जे हमरासभक समाज पर पश्चिमी संस्कृतिक प्रभावक कारणेँ स्त्री-शिक्षाक दिसि हिन्दू समाजक नेतृवृन्दक ध्यान उन्नैसम शताब्दीक दोसरे दशकमे गेल छलन्हि। शोभाबाजारक राजा राधाकान्त देव एहि विषयमे अग्रणी भऽ कए 'कलकत्ता आ' ओकर लगपासक क्षेत्रक स्त्रीगणक

शिक्षाक लेल [1] एक नारी-समितिक स्थापना कैलन्हि। परन्तु ई आन्दोलन संभवतः असामयिक छल आ' तेँ लोकक पर्याप्त स्वीकृतिक अभावमे निष्फल भऽ गेल।

तकर प्रायः बीस वर्षक बाद स्त्री-शिक्षाक एहि काजक पुनरारम्भ गवर्नर-जनरलक परिषदक कानून विषयक सदस्य एवं एकटा उदारचेता अंग्रेज जे० इब्ल्यू बेथून द्वारा भेल। संयोगवश बेथून ईस्ट इण्डिया कम्पनीक शिक्षा-समितिक सभापति सेहो छलाह। एही सन्दर्भमे ओ एहि काजमे स्वभावतया रुचि लेलन्हि और स्त्री-शिक्षाक लेल एकटा विद्यालय खोलबाक निश्चय कैलन्हि। अतएव हुनक संरक्षणमे उत्तरी कलकत्तामे कॉर्नवालिस टैंक, जकर नाम एखन भेल अछि आजाद हिन्द बाग, तकर पश्चिममे ७ मइ, १८४९ केँ 'कलकत्ता फीमेल स्कूल'क स्थापना भेल। ओकरा सुचारु रूपेँ चलैबाक लेल हुनका एक गोट अखिगर, सहानुभूतिशील और कर्मठ सचिवक आवश्यकता छलन्हि। स्वभावतया हुनका विद्यासागरे एहि योग्य सुझलथिन्ह कारण हुनका मे ईसब गुण प्रचुर मात्रामे छलन्हि। ई उद्देश्य विद्यासागरक हृदयानुकूल भेलाक कारणेँ ओ तत्क्षण ई आमंत्रण स्वीकार कैलन्हि।

एहि दुनू भद्रपुरुषक संरक्षणमे ई विद्यालय दिनानुदिन समृद्ध भेल गेल। बेथून एहि विद्यालयक काजमे ओतबे रुचि लैत छलाह जतबा, एक पीढ़ी पूर्व, डेविड हेयर स्वस्थापित बालक विद्यालयमे लैत छलाह। ओ जखन तखन ओतय जाइत छलाह आ' बालिका सबकेँ उपहार त देबे करैत छलाह संगहि हुनका सबकेँ अपन पीठ पर लादि कए टहलाबैत छलाह। एम्हर विद्यासागर सेहो विद्यालयक सांगठनिक व्यवस्थाक लेल तथा एकरा अडिग न्यो पर ठाढ़ करबाक लेल अत्यन्त विस्तारसँ प्रयत्न कैलन्हि। अपन देशवासी सबकेँ ई मोन पाड़बाक लेल जे अपन पुत्रे जकाँ कन्याओ सभकेँ शिक्षाक सुविधा प्रदान करब हुनक कर्तव्य थिकनि ओ एकटा नव उपाय निकाललन्हि। जाहि घोड़ा-गाड़ीक व्यवहार कन्यालोकनिकेँ स्कूलमे यातायातक लेल होइत छल ओ ताहि पर मनुसंहितासँ एकटा उद्धरण लिखबा देलन्हि, जकर अनुवाद एहि प्रकारक हैत : 'पुत्रीकेँ समान रूपेँ पालन करबाक चाही और अत्यधिक यत्नपूर्वक शिक्षा देबाक चाही।'[2]

१. पैरीचाँद मित्र, 'बायोग्राफी ऑफ डेविड हेयर'।
२. कन्याऽप्येवं पालनीया शिक्षणीयाऽतियत्नतः।

दुर्भाग्यवश, एकटा घातक रोगक कारणें १८५१ ए मे वेथूनक कर्मजीवन समाप्त भऽ गेलन्हि। ई सोचि शोक होइत अछि जे स्त्री-शिक्षाक उद्देश्यक प्रति श्रद्धावश कार्य पर रहैत हुनक ई दुखद अन्त भेल। नदीक पश्चिम तट पर स्थित जनाइ नामक एक गामक कन्या-पाठशालाक निरीक्षणक हेतु ओ आमंत्रित भेल छलाह। एहि लेल एकटा गाड़ीमे सुदूर यात्रा करै पड़लन्हि। बाटमे भारी वर्षाक कारणें हुनका ज्वर भऽ गेल छलन्हि, जे बादमे घातक प्रमाणित भेल। ओ अपन वसीयतमे स्थापित विद्यालयक लेल अपार धन-राशि छोड़ि गेल छलाह, जाहिसँ ओहि विद्यालयक स्वीय भवनक निर्माण-व्ययक आंशिक पूर्ति भय सकल। हुनका प्रति गंभीर आभार-प्रदर्शनक हेतु अधिकारी-वर्ग बादमे एकर पुनर्नामांकन 'वेथून स्कूल' कैलन्हि। एकरा परवर्त्ती-कालमे सरकारी कन्या महाविद्यालयमे रूपान्तरित कैल गेल।

एकर पहिलुका अध्यायमे दक्षिण बंगालक विद्यालय-समूहक निरीक्षकक रूपमे स्त्री-शिक्षामे विद्यासागरक योगदानक उल्लेख कैल गेल अछि। ओ अपन प्रयत्नसँ नदिया, मेदिनीपुर, हुगली आ' वर्द्धमान एहि चारि जिलामे अनेको बालिका-विद्यालयक स्थापना कयलन्हि। एतवे नहि सरकारी अनुदानक प्रतीक्षामे नहि रहि ओ एहि काजक लेल अग्रिम सहायताक रूपमे निजी धनसँ सेहो पाइ उधार देने रहथि। तँ एहि विषयमे एतय अधिक विवरण देबाक प्रयोजन नहि अछि।

१८६७ मे जहन स्त्री-शिक्षाक अन्यतम संरक्षिका मिस मेरी कार्पेन्टर एहि समस्याक अध्ययनक लेल भारत अइलीह तँ एहि आन्दोलनकें और अधिक बल प्राप्त भेल। अपन जिनगीक प्रारंभिक क्षणमे ओ इंगलैंडमे राजा राममोहन रायक निकट संपर्कमे आइलि छलीह आ' तखनहिसँ हुनका मनमे भारतक लेल एकटा विशिष्ट भावना बनि गेल छल जे हुनका भारतमे ऐबाक लेल प्रेरित कैलक। मद्रास आ' बंबइक यात्रा करैत वर्षक अन्तमे ओ कलकत्ता पहुँचलीह। ओ अधिकारी-वर्ग द्वारा अतिशय सम्मानित छलीह आ' जहिना ओ विद्यासागरसँ मिलबाक इच्छा प्रकट कैलन्हि, दुनूक भेंटघाट लेल वेथून स्कूलमे प्रबंध कैल गेलैक।

तदुपरान्त हमसब हुनका दुनूकें कन्या-पाठशाला सबमे जा कए ओकरासभक समस्या सब पर विचार-विमर्श करैत पवैत छियन्हि। एहने एक अवसर पर विद्यासागर एकटा गंभीर दुर्घटनाक शिकार बनलाह जकर हुनक

स्वास्थ्य पर स्थायी रूपसँ कुप्रभाव पड़ल। उत्तरपाड़ाक कन्या-पाठशालाक निरीक्षणक तैयारी भेल छल। एहि निरीक्षक-दलमे मेरी कार्पेण्टर, विद्यासागर तथा शिक्षा-विभागक दू गोट उच्च पदाधिकारी—ऐटकिन्सन आ' वुड्रॉ छलाह। एहन प्रतीत होइत अछि जे विद्यासागर दुनू अधिकारीक संग एकटा ताँगामे जा रहल छलाह और मेरी कार्पेण्टर हुनका लोकनिक पाछाँ एकटा दोसर ताँगामे रहथि। बालीक पासमे एकटा तीक्ष्ण मोड़ पर विद्यासागरक ताँगा उनटि गेलन्हि और ओ बाहर फेका गेलाह ओ अत्यधिक घायल भऽ गेलाह। समाचार-पत्र सबमे एहि दुर्घटनाक व्यापक विवरण छपल; एतेक धरि जे ओहि समयक सुप्रसिद्ध संगीतकार 'धीरज कबियाल' एहि विषय पर एकटा गीतो रचलन्हि।[1]

कलकत्ता और निकटवर्ती विद्यालय सबक निरीक्षण करबाक बाद मेरी कार्पेण्टर अनुभव कैलन्हि जे शिक्षण-स्तरक उन्नयनक हेतु प्रशिक्षित शिक्षिकाक अत्यधिक आवश्यकता अछि। एहन प्रतीत होइत अछि जे ओ सरकारक समक्ष बेथून स्कूलमे शिक्षिका-प्रशिक्षण आरम्भ करबाक एकटा प्रस्ताव राखलन्हि। तत्कालीन बंगालक लेफ्टिनेंट गवर्नर सर विलियम ग्रे एहि प्रस्तावकेँ विद्यासागरक पास हुनक विचार जानै लेल पठौलन्हि। विद्यासागरकेँ लिखल पत्रमे ओ एहू बात दिसि संकेत कैलन्हि जे बेथून स्कूलकेँ प्रशिक्षण-संस्थानमे परिवर्त्तित कैल जा सकैत अछि, कियैक तँ सरकार द्वारा ओहि पर कैल गेल खर्चक अनुपातमे परिणाम संतोषजनक नहि भेल अछि।

एहि प्रस्ताव पर विद्यासागरक दीर्घ मन्तव्यक रूपमे लिखल गेल पत्र कैकटा कारणसँ महत्वपूर्ण अछि। हुनक टिप्पणी सहज आ' स्पष्टे नहि छलन्हि अपितु एहिसँ इहो सिद्ध भेल जे ओ स्थितिकेँ यथार्थवादी ढंगसँ देखि कए उचित परामर्श देबामे कतेक सक्षम छलाह आ बेथून द्वारा स्थापित विद्यालयक महत्त्वकेँ ठीकसँ बुझैत सेहो छलाह, आ' जँ हुनका द्वारा विरोध नहि कैल जाइत त एकर स्वरूपे बदलि जाइत जाहिसँ सम्पूर्ण बंगालमे स्त्री-शिक्षाकेँ आघात पहुँचितैक।

संक्षेपमे विद्यासागर ई कहलथिन्ह : मेरी कार्पेण्टरक शिक्षिका-प्रशिक्षण संस्थान खोलबाक सुझाव सैद्धान्तिक दृष्टिएँ उचित रहितहुँ व्यावहारिक दृष्टिएँ सम्भव नहि अछि। कारण जे किछु दुर्भाग्यशाली विधवाक अतिरिक्त

१ चण्डिकाचरण बैनर्जी, 'विद्यासागर,' अध्याय-७।

एहि प्रकारक शिक्षाक लेल कोनो पूर्णवयस्का नारी तैयार नहि हैत कारण जनमत नारीकें एहि व्यवसायमे नियोजित करबाक विरुद्ध छैक। एक पत्रमे ओ लिखलन्हि : "अहांकें ई विश्वास दियैबाक शायदे कोनो आवश्यकता हो जे हम कन्या-शिक्षाक हेतु शिक्षिकाक प्रयोजन और महत्त्वकें नीक जकां बुझैत छी, किन्तु जँ हमर देशवासीक सामाजिक पूर्वाग्रह एहि मार्गमे अटल बाधा नहि होइतैक तँ हम एहि प्रस्तावक समर्थन करबाक आ' एकरा कार्यान्वित करबाक लेल हार्दिक सहयोग देनिहार प्रथम व्यक्ति होइतहुँ।"

अपन तर्ककें स्पष्टतर करैत पत्रक अन्य अंशमे ओ ई लिखलन्हि : "अहां सहजहि ई बुझि सकैत छी जे सम्मानित हिन्दू वर्ग कोना अपन स्त्रीगणकें अध्यापनक व्यवसायमे जाय देताह् बियैक त एहि लेल स्त्रीगणकें एखुनका बन्धनकें निश्चित रूपें तोड़िकें बहिरावै पड़तन्हि, जखन कि ओसब दस वा बारह वर्षक बालिकाओ सबकें विवाहक बाद घरसँ बाहर नहि होमै दैत छथि। केवल अरक्षित आ' असहाय विधवे सब एहि काजक लेल आगां बढ़ि सकैत छथि। नैतिकताक दृष्टिएँ शिक्षा-संबंधी काजमे ओसब नियोजित हैबाक योग्य छथि वा नहि से त विवेचनाक विषय अछिए, अपितु एहि संदर्भमे हमरा ई कहबामे संकोच नहि जे हुनक सभक जनाना-घरकें छोड़ि कए जन-अध्यापिकाक रूपमे बाहर आबै हुनका लोकनिकें संदेहास्पद आ' अविश्वसनीय बना देत आ' एहि प्रकारें एहि लाभप्रद काजक प्रभावोकें समाप्त कऽ देत।"

बेथून स्कूलकें समाप्त करबाक सुझावक ओ दूटा ठोस आधार पर विरोध कैलन्हि। प्रथम त ई जे ई विद्यालय ओहि महान मानवतावादीक स्मारकक रूपमे बनल रहबाक चाही जनिक स्मृतिमे विद्यालयक नाम राखल गेल छन्हि। द्वितीयतः, ई निकटवर्त्ती सहयोगी कन्या-विद्यालय समूहक लेल एकटा मानक प्रतिष्ठानक रूपमे काज करैत स्त्री-शिक्षाक क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण योगदान कैलक अछि। पत्रक एतत्संबंधित अंश मूलतः उद्धृत करबाक योग्य अछि :

"हम एकर पूर्ण उन्मूलनक संस्तुति नहि कऽ सकैत छी। भारतमे स्त्री-प्रबोधनक उद्देश्यसँ सेवा कैनिहार ओ महान मानवतावादी, जनिकर नाम ई प्रतिष्ठान वहन कऽ रहल अछि, तनिक स्मारकक रूपमे एकरा सरकारी सम्पोषण भेटबाक चाही। एकर अतिरिक्त ईहो वांछनीय अछि जे शहरक

केन्द्रीय स्थानपर एकटा सुसंगठित कन्या पाठशाला हो जे अन्यान्य दूर-दूरान्तरक सहयोगी प्रतिष्ठानक लेल एकटा आदर्श होअय।"

एहि टिप्पणीसँ ई पता चलैत अछि जे विद्यासागर कतेक विज्ञ छलाह। बंगालक स्त्री शिक्षाक आन्दोलनकेँ ओ एहि प्रकारेँ मेरी कार्पेण्टरक सुझावसँ बचौलन्हि जे कि अन्यथा विहाड़ि जकाँ एकरा ध्वंस कऽ दितैक, कियैक त हुनकामे एकर यथार्थ महत्व बुझवाक सामर्थ्य नहि छलन्हि। एहि प्रकारेँ बेथून कॉलेज त बचि गेल, किन्तु एहन लगैत अछि जे सरकार मेरी कार्पेण्टरक सुझावक अनुसार एकटा शिक्षिका-प्रशिक्षण संस्थान खोलवाक लेल दृढ़-प्रतिज्ञ छल जाहिसँ बंगालमे स्त्रीशिक्षाक कार्यभार प्रशिक्षित शिक्षिकागण ग्रहण कऽ सकथि।

अतः १८६६ मे मेरी कार्पेण्टर द्वारा प्रस्तावित 'फीमेल नार्मल स्कूल' कलकत्ता मे खोलि देल गेल। जेना कि विद्यासागर पहिनहि अनुमान क' गेल छलाह, जनताक सहयोग प्राप्त नहि भेलाक कारणेँ १८७२ मे एकरा बन्द करँ पड़ल, आ एहि तरहेँ संयोगवश एकर प्रमाण भेटल जे विद्यासागरक सलाह केहन ठोस होइत छल। ई योजना असफल एहि लेल भेल जे देशवासी तखनहु धरि एहि लेल प्रस्तुत नहि छल।

स्त्री-जातिक उच्च-शिक्षा लेल विद्यासागर कतेक चिंतित छलाह, तकर एकटा उत्कृष्ट उदाहरण भेटैत अछि एहि क्षेत्र मे अग्रगामी स्त्रीगणमे सँ एक विद्यार्थीक जीवनक प्रति हुनक अभिरुचि सँ। कलकत्ता विश्वविद्यालयक स्थापनाक बीस वर्ष बाद १८७८मे सीनेटक २७ अप्रैलक निर्णयक अनुसार विश्वविद्यालयक द्वार नारिओक लेल उन्मुक्त भऽ गेल। कादम्बिनी और चन्द्रमुखी वसु नामक दुनू बहीनि एहि निर्णयक लाभ उठौलन्हि आ' उच्च शिक्षाक लेल प्रवेश लेलन्हि। १८८३मे ओ दुनू कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ बी० ए०क परीक्षा मे सफलता प्राप्त कैलन्हि। अगिला वर्ष चन्द्रमुखी वसु बंगाल मे एम० ए०क उपाधि पौनिहार सर्वप्रथम नारी भेलीह।

विद्यासागर एहि अवसर केँ एकटा विशेष घटना मानि क' एकर अभिनन्दन कैलन्हि। एहि अवसर पर ओ एहि महिला केँ 'कैसल्स इलस्ट्रेटेड शेक्सपीयर'क एक प्रति व्यक्तिगत उपहारक रूप मे पठौलन्हि। हुनक अपन लिखल प्रशस्ति हुनक हस्ताक्षर सहित एतय देल जा रहल अछि :

श्रीमती कुमारी चन्द्रमुखी बसु,
कलकत्ता विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर कलानिष्णातक उपाधि पौनिहारि प्रथम बंगाली महिला छथि हुनक यथार्थ शुभ-चिन्तक ईश्वरचंद्रशर्माक दिसिसँ

एहिमे कोनो आश्चर्यक बात नहि जे हुनक मृत्युक उपरान्त हुनक महिला-प्रशंसिकागण एकटा समितिक स्थापना कैलन्हि जकर नाम 'लेडीज विद्यासागर मेमोरियल कमेटी' रहल आ' ई यथेष्ट धनराशि संग्रह करबामे सफल रहल जकर उपयोग बेथून स्कूलक कोनो एहन हिन्दू छात्राकें दू वर्षक लेल छात्रवृत्ति देबाक हेतु कैल गेल जे कि तृतीय कक्षाक वार्षिक परीक्षामे पास कए एण्ट्रेन्सक परीक्षाक तैयारी करै चाहैत हो। 'ई उपहार अधिकारी वर्ग कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार कैलन्हि और हुनका सभक एहि सत्कार्यक खूब प्रशंसा कैलन्हि जे ओ लोकनि एहिसँ बंगालमे स्त्री-शिक्षाक उन्नतिक लेल एतेक काज कयनिहार महापुरुषक उचित सम्मान प्रदर्शन कैलन्हि।'[1]

स्त्रीगणक दशा सुधारबाक लेल हुनका द्वारा कैल गेल प्रयत्नमे सबसँ कष्टकर काज छलन्हि विधवाक पुनर्विवाहक हेतु प्रयास। जेनाकि हुनक विशिष्टता छलन्हि, ओ एकटा शृंखलाबद्ध योजनाक परिकल्पना कैलन्हि। ओ अपन कल्पनानुसार एहि क्रान्तिकारी सुधारक लेल जन-मानस के प्रस्तुत करबाक हेतु लेख लिखलन्हि और पुस्तिका प्रकाशित करौलन्हि। हुनका एकर पूर्वाभास छलन्हि जे प्राचीनपन्थी हिन्दुए लोकनि एकर सर्वाधिक विरोध करताह आ' एहि वर्गकें नैतिक दृष्टिएँ निरस्त करबाक हेतु ई आवश्यक छल जे ओ हुनके सभक तर्क द्वारा हुनका सबकें परास्त करथि। विधवा सभ पर लगाओल प्रतिबंध अन्याय थीक—एहि दयात्मक तर्कसँ हिनका सभक हृदय द्रवीभूत नहि हैतन्हि। जँ ई प्रमाणित कैल जाय जे शास्त्रमे विधवाकें पुनर्विवाहक अधिकार देल गेल अछि तँ एहिसँ ओ सब अंशतः डोलि सकैत छथि। एकर दोसर लाभ ई हैत जे एहिसँ सरकारकें ई विश्वास कराबैमे सुविधा हैत जे सरकार सामाजिक नियमक उल्लंघन बिनु कैनहि कानूनी स्तर पर एहन विवाहकें स्वीकृति देबाक व्यवस्था कऽ सकैत अछि। तकर बाद ओ सरकारसँ आवश्यक कानून बनयबाक लेल अपीलो कऽ सकताह।

ओ जनैत छलाह जे जँ ओ शास्त्रसँ विधवा-विवाहक समर्थनमे कोनो प्रमाण वचन खोजि निकालि सकथि तँ एहिसँ हुनक प्रचार सहजहि सार्थक भऽ सकैत अछि। तें ओ आरम्भहिसँ एहि काजमे लागि गेलाह। संस्कृत कॉलेजक पाठागार, जतय संस्कृत पोथीसभक नीक संकलन छल, एहि विषयमे

---

१. चण्डीचरण बैनर्जी, 'विद्यासागर', अध्याय—७।

अत्यन्त सहायक सिद्ध भेल। अपन पदीय काजसँ जतवा समय ओ बचा सकैत छलाह से एहीमे व्यतीत होइत छलन्हि। कार्यकालक बादहु अधिक राति धरि ओ एहि विषयसँ संबधित सबटा पोथीक गहन अध्ययन-मनन करैत रहैत छलाह। एहन सनिष्ठ कठिन परिश्रम असफल नहि भऽ सकैत छल। अंततोगत्वा, 'पराशर-संहिता'मे हुनका ओ श्लोक भेटलन्हि जे कोनो कोनो स्थितिमे स्त्रीगणक पुनर्विवाहक विधान देने अछि और ओ ई देखि कऽ अत्यन्त प्रसन्न भेलाह जे एहि तालिकामे विधवा सेहो अन्तर्भुक्त अछि। मैथिलीमे अनुवाद कैला सँ एहि श्लोकक अर्थ एहि प्रकारक हैत—

"पाँच तरहक दुर्घटना भेला पर स्त्रीगणकेँ दोसर पति ग्रहण करबाक अधिकार छन्हि—जँ पति पागल भऽ जाथि वा स्वर्गीय भऽ जाथि वा संन्यासी भऽ जाथि वा जातिच्युत भऽ जाथि।"[1]

हुनक हाथमे सबसँ योग्य अस्त्रक रूपमे छलन्हि ई श्लोक जतय विधवाक पुनर्विवाहक अधिकारक समर्थन स्पष्ट रूपें कैल गेल अछि। एहि तरहें प्रस्तुत भेलाक बाद ओ सोचलन्हि जे पहिने पिता-माताक आज्ञा लेबाक चाही। ओ पहिने डेराइत-डेराइत अपन प्रस्ताव पिताक लग रखलन्हि और घोषणा कैलथिन जे ओ विधवा-विवाहक समर्थनमे सरकारी कानूनक लेल आन्दोलन शुरू करऽ चाहै छथि। एहिसँ पहिने विधवा-पुनर्विवाहक समर्थनमे अपन तर्ककेँ उपस्थापित करैत और अपन मतक पक्षमे संस्कृत श्लोकक उद्धृति दैत अत्यन्त यत्न सँ एकटा पुस्तिकाक रचना कैने रहथि। कहल जाइत अछि जे तकर बाद हुनक पिता हुनकासँ तत्काल एकटा प्रश्न कैलन्हि। ओ पुछलन्हि जे 'जँ हम एहि प्रस्तावकेँ अस्वीकृत कऽ देब तँ अहाँ की करब? एकर उत्तर ओ एतवे निःशंक आ' स्पष्ट रूपें देल। पुत्र कहलन्हि 'तखन तँ जावत अहाँ जीवित छी ता' ई प्रचार नहि चलायब मुदा अहाँक परोक्ष भेला पर अपन अभिरुचिसँ एहि दिसि बढ़ब।' तखन ठाकुरदास विद्यासागरकेँ ओ पुस्तिका पढ़ै कहलथिन्ह जे ओ एहि विषय पर लिखने रहथि और ध्यान सँ सुनलाक बाद ओ हुनका आशीर्वाद देलथिन्ह आ' एहि विषयमे आगाँ बढ़ै कहलथिन्ह।[१]

---

१. नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे च पतिते पतौ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते॥

२. चण्डीचरण बैनर्जी, 'विद्यासागर', अध्याय—७।

एहि तरहे एहि काजक कठिनतर अंशमे सफल भेलाक बाद ओ माताक सम्मतिक लेल प्रयत्नशील भेलाह। ई स्वाभाविके छल जे ओ अत्यन्त सहज भावेँ अपन परमप्रिय संतानकेँ अनुमति द' देलन्हि। सदय-हृदय रहबाक कारणेँ ओ जनैत छलीह जे हिन्दू विधवाक भाग्यमे केहन कष्टप्रद जीवन लिखल रहैत अछि आ' तेँ ओ अपन पुत्रक एहि उद्देश्यक हेतु आन्दोलनकेँ हृदय सँ समर्थन देलथिन्ह। मुदा ओ निश्चित नहि छलीह जे एहि बात पर हुनक पतिक प्रतिक्रिया की हैतन्हि और तेँ ओ विद्यासागरसँ कलथिन्ह जे ओ ई बात अपन पिताकेँ नहि बूझय देथि। मुदा, जखन पुत्रसँ ई पता चललन्हि जे हुनक अनुमति पूर्वहि ल' लेल गेल छन्हि, तखन ओ आश्चर्यान्विते नहि अपितु आनन्दितो भेलीह।

एहि प्रकारेँ आन्दोलनक पक्षमे मंच प्रस्तुत कैलाक बाद १८५५ मे ओ विधवा-विवाहक विषय पर अपन पुस्तिकाक प्रकाशन कैलन्हि। कहल जाइत अछि जे कैक दिनक अभ्यन्तरे एहि पुस्तकक १५.००० प्रति बिका गेल।[१] आओर विस्मयक बात ई जे हुनका अनेक अप्रत्याशित स्थानहुसँ समर्थन भेटलन्हि। ओहि युगक एक गोट प्रमुख कवि ईश्वरचन्द्र गुप्त एहि आंदोलनक समर्थन कैलन्हि आ' विद्यासागरक प्रयासकेँ आशीर्वाद दैत एहि विषय पर एकटा कविता सेहो लिखलन्हि। मैथिलीमे अनुवाद कैलासँ एकर सारभूत पंक्ति सब एहि प्रकारक हैत :

विधवाक वियाह हैत, थीक ई कर्त्तक महत्त्वक फल।
नहि भोगै पड़त ओकरा अधर्मक फल॥
जे क्यो विरोध करै अछि से सब थिक खल।
ईश्वरक लेखनीसँ सब जाएत अतल॥

मुदा, शान्तिपुरक जोलहा समाज एहि आन्दोलनक समर्थनमे प्रचारक एकटा अभिनव पद्धति ग्रहण कए सबकेँ चौंका देलक। साड़ीक पाढ़ि आ' आँचर पर ओसब विद्यासागरक विधवाकेँ पुनर्विवाहक अधिकार दियैबाक

१. विनय घोष, 'विद्यासागर ओ बंगाली समाज', खंड—२।

प्रयासक समर्थक एकटा कविताक पंक्ति काढ़ै लागल। एहि कविताक अनुवाद एतय देल जा रहल अछि:

जीवथु विद्यासागर, जीवथु चिरकाल।
विधवा-विवाह ले जे सरकारसँ कैलन्हि सवाल।
कहिया ओ शुभ दिन आओत कहिया ई कानून हैत पास
देश-देश जिला-जिलामे पठाओल जायत ई हुकूम।
आ' विधवा-रमणीक विवाहक मचि जायत धूम।

एहि साड़ीक जनप्रियता अत्यंत वेसी भेल छल आ' वादमे विद्यासागरक नामसँ एकर नाम पड़ल।

ई कहव अनावश्यके हैत जे समाजक कट्टरपंथी वर्ग एकर विरुद्ध एकटा प्रतिगामी आन्दोलन शुरू कऽ देने छल आ' ओसव विद्यासागरसँ एतेक घृणा करैत छलाह जे शारीरिक आक्रमणहुक आशंका छल। अपन पितृदेवक आदेश कें मानैत विद्यासागर किछु दिन धरि अपना लेल एकटा आरक्षीक व्यवस्था कैने रहथि। मुदा हुनक पद्धति एतेक सफल छलन्हि और जाहि कारण लेल ओ लड़ि रहल छलाह से एतेक उपयुक्त छल जे प्रतिरोध अत्यन्त असफल प्रमाणित भेल।

एहि तरहें पृष्ठभूमि प्रस्तुत भ' गेलापर, विधवाविवाहकें वैध घोषित करऽ वला कानून वनयवा लेल सरकारक पास अपील करब वाकी रहि गेल। एहि उद्देश्यसँ कैल गेल हस्ताक्षर-अभियानमे विद्यासागर समाजक सकल प्रगतिशील नेताक हस्ताक्षर लेबामे सफल भेलाह। आन-आन लोकक अलावे एहिमे देवेन्द्रनाथ ठाकुर, द्वारकानाथ मित्र, अक्षय कुमार दत्त, प्रेमचाँद वड़ाल, श्रीश चन्द्र विद्यारत्न, राजनारायण वसु, महेन्द्र लाल सरकार तथा-सुप्रसिद्ध कवि ईश्वरचन्द्र गुप्तो छलाह।

अपील पठाओल गेल "वंगाल प्रदेशक हिन्दू नागरिक लोकनिक दिसि सँ भारतक सम्माननीय विधान परिषदक ओतय" एहिमे कहल गेल जे विधवाक पुनर्विवाह एकटा सामाजिक प्रथा द्वारा वर्जित अछि, और "ई प्रथा स्वयं अत्यन्त क्रूर आ' अस्वाभाविक तँ अछिए, नैतिकताक दृष्टियहुसँ ई पूर्वाग्रह-ग्रस्त अछि और एहिसँ समाजक लेल अत्यन्त दूषणीय परिणामक सम्भावना अछि।" एहिमे ईहो महत्त्वपूर्ण तथ्य लिखि देल गेल जे "ई नियम अशास्त्रीय थीक और हिन्दू कानूनक सही व्याख्याक अनुकूल नहि अछि।"

विद्यासागरकें ई पहिनहि सँ पता छलन्हि जे जखनहि शासकवर्गकें एहि बातक पता चलि जैतन्हि जे विधवाक पुनर्विवाह शास्त्र-सम्मत अछि, एहि मागक सहानुभूतिपूर्ण स्वागत हैतैक आ' सैह भेल । सम्माननीय जे० पी० ग्रान्ट, जनिकापर विधवा-विवाहकें वैध बनैबाक विधेयक प्रस्तुत करबाक भार छलन्हि, अत्यन्त उत्साहक संग एहि माँगक समर्थन कैलन्हि और विधेयक कें प्रस्तुत करैत ई मन्तव्य देलन्हि :

"ई (विधेयक) कोनो मनुक्खक अपन नियममे हस्तक्षेप नहि करैत अछि; मुदा ई भिन्न आ' अधिक मानवीय विचार रखनिहार पड़ोसी परिवार पर कोनो वर्गविशेष द्वारा दुःख आ कष्ट थोपबाक अधिकारक विरोध अवश्य करैत अछि ।

एहि प्रकारें २६ जुलाइ, १८५६ ई० कें '१८५६क कानून १५' क रूपमे हिन्दू विधवाकें पुनर्विवाहक अधिकार देबय बला ई विधेयक पास भऽ गेल । कुशल रणनीतिज्ञ जकाँ विद्यासागर विचार कैलन्हि जे कानून बनलाक बादे उच्च वर्गमे हिन्दू विधवाक एकटा विवाह करा देल जाय ।

संस्कृत कॉलेज मे विद्यासागरक एक तरुण सहपाठी रहथिन्ह श्रीशचन्द्र विद्यारत्न जे तखन विपत्नीक भ' गेल छलाह । अन्यान्य लोक लेल उदाहरण स्थापनक हेतु हुनका एकटा विधवा कन्यासँ विवाह करबाक लेल प्रेरित कैल गेलन्हि । वधू दस वर्ष अवस्थाक कलिमती देवी छलीह ।

विद्यासागर ई विवाह एहन ढंगसँ करावै चाहल जे एकर व्यापक प्रचार हो । एहिमे हुनका और कैक तरहक सहायता भेंटलन्हि । हिन्दू समाजक तत्कालीन इतिहासमे ई एकटा नवीन घटना छल, तें एहि दिसि अनेक लोकक ध्यान आकृष्ट भेल । ई विवाह प्रेसीडेन्सी कॉलेज, कलकत्ताक एक गोट अध्यापक राजकृष्ण चौधरीक उत्तरी कलकत्ताक १२ नंबर सुकिया स्ट्रीटक वासस्थान मे ७ दिसंबर, १८५६ कें सम्पन्न भेल । विद्यासागर अपनहि कन्याक पिताक भूमिका ग्रहण कैलन्हि और स्वागत-सत्कारक भार उठौलन्हि । वधूक विधवा माताक दिसिसँ संस्कृतमे निमंत्रण-पत्र प्रस्तुत कैल गेल जाहिमे विशेष रूपसँ एहि बातक उल्लेख छलैक जे कन्या विधवा छथि । विद्यासागरकें यथेष्ट संतोष भेलन्हि ई देखि कए जे एहि विवाहमे आशीर्वाद देबाक लेल अनेक परम्परावादी पंडितो आयल छलाह । एहि घटनाक प्रचार जेहेन अपेक्षित छल तेहने भेल । वर आ बरियातक भव्य

स्वागतक लेल रास्ताक दुनू दिसि बहुत रास लोक जमा भेल छल। ओहि दिनक एकटा प्रमुख समाचार-पत्रक अनुसार, भीड़ एतेक वेसी भेल छल जे पुलिसक सहायता लेमै पड़ल।[1]

विद्यासागरकें सबसँ वेसी खुशी एकर बादक घटनासँ भेलन्हि। श्रीशचन्द्र द्वारा स्थापित उदाहरण सँ हुनक अपने परिवारक एकटा सदस्य अत्यन्त प्रभावित भेल छलाह, और ओ आर क्यो नहि हुनक अपने पुत्र नारायणचन्द्र छलाह। अपन पसन्दक एकटा विधवा सँ विवाहक लेल ओ अपनहि उन्मुख भेलाह। जखन अपन जेठ जमाय गोपाल चन्द्र समाजपतिक माध्यमे हुनक ई प्रस्ताव पहुँचाओल गेलन्हि, त विद्यासागर अत्यन्त प्रसन्नताक संग अपन स्वीकृति दऽ देलथिन्ह। मुदा पूर्वाग्रहक अन्त एतेक शीघ्र नहि होइछ। परिवारक अन्यान्य सदस्य एकर घोर विरोध कैलन्हि और एहि विरोधकें मुखर कैलन्हि हुनक छोट भाय शम्भुचन्द्र विद्यारत्न।

विद्यासगर अनुष्ठान सम्पन्न हैवा धरि प्रतिक्षा कैलथिन्ह आ' तकर बाद अपन भायकें एहि विषय पर अपन विचार प्रगट करैत एकटा अत्यन्त सम्मान्य पत्र लिखलन्हि। एहि सँ मात्र एही बातक पता नहि चलैत अछि जे ओ अपन पुत्रक एहि सिद्धान्त सँ कतेक प्रसन्न छलाह, मुदा ईहो जे कियैक ओ एहिमे अपन पूर्ण स्वीकृति देने छलाह। ओहि स्मरणीय पत्रक एकटा अंशक मैथली अनुवाद एतय देल जा रहल अछि :

"नारायण भवसुन्दरी सँ वृहस्पतिवार, २७ श्रावण कें विवाल कैलक अछि। माँ कें एकर सूचना दऽ दिहक।

"पहिने तों हमरा ई लिखने छलह जे जँ नारायण (विधवा) विवाह करत त हमरासभक सब सर-संबंधी सामाजिक संबंध ताड़ि लेत तँ हुनका एहि विवाह करबा सँ रोकि लेब उचित हैतन्हि, एहि विषय मे हमर उत्तर ई अछि : नारायण एहि विवाहक विषयमे स्वयं निर्णय कैलक अछि, हमर इच्छा अथवा अनुरोधसँ नहि। जखन हमरा पता चलल जे ओ विवाह करवाक निश्चय कय लेल अछि और वधुओ लऽ आनलि गेलि अछि, तखन अपन स्वीकृति नहि दऽ कए एहि काजमे बाधा देब हमरा उचित नहि लागल। हम स्वयं विधवा-विवाहक प्रचलन कैलहुँ, कतेको विधवाक विवाहक

---

1. ईश्वरचन्द्र गुप्तक 'संवाद-प्रभाकर'।

हेतु प्रयत्न कलहुँ; एहि परिस्थितिमे जँ हमर पुत्र कोनो विधवासँ विवाह नहि कए कुमारि कन्यासँ विवाह करितैक, त हम ककरहु अपन मुँह नहि देखा सकितहुँ और उच्च समाजमे हम नीच एवं असम्माननीय प्रमाणित होइतहुँ। स्वेच्छासँ ई विवाह स्थिर कऽ नारायण हमर माने नहि बढ़ौलक, अपितु अपनाकेँ हमर पुत्र कहयबाक अधिकारो प्राप्त कैलक। विधवा विवाह प्रचलन करायब हम अपना जीवनक सर्वश्रेष्ठ काज मानैत छी और भविष्य मे एहिसँ महान काज हम शायदे कऽ सकब; हम एकर प्रचलनक हेतु अत्यन्त कठिन परिश्रम कैलहुँ आ' जँ दरकार होयत त एहि लेल हम अपन प्राणो उत्सर्ग करबाक हेतु प्रस्तुत छी।"

विधवा विवाहक विषय पर विद्यासागरक अंतरतम चिन्ता और अनुभूतिकेँ एहिसँ स्पष्ट शब्दमे व्यक्त करब असंभव छल। यथार्थ ओ एकरा अपन जिनगीक सबसँ महत्त्वपूर्ण कृतित्त्व कहलनि।

बहुविवाहक, विशेषतया बंगालक कुलीन ब्राह्मणसभक मध्य प्रचलित बहुविवाहक विरुद्ध विद्यासागर द्वारा कैल गेल आन्दोलनक विषयमे पहिनहि कहल गेल अछि, तैं एतय विस्तारमे जैबाक कोनो प्रयोजन नहि अछि, मुदा एहि विषयक संग संबंधित एकटा रोचक घटनाक उल्लेख कथनयोग्य अछि।

जखन विद्यासागरक उत्साहक फलस्वरूप बहुविवाह-निरोधक हेतु आन्दोलन कलकत्ता और तकर आस-पड़ोसमे जोरदार रूपसँ चलि रहल छल तखन हुनका ढाका केर रासबिहारी मुखर्जी सन एक प्रमुख व्यक्तिक समर्थन भेंटल छलन्हि जे कि पूर्वी बंगालमे एकर समानान्तर आन्दोलन चला रहल छलाह एवं एहि अंचलक प्रमुख व्यक्ति हैबाक कारणेँ आकर्षणक केन्द्रबिन्दु बनि गेल छलाह। ता धरि सिपाही विद्रोहक दमन भऽ चुकल छल आ' कम्पनीक शासन समाप्त भऽ गेल छल। महारानी विक्टोरिया तखन भारतक सम्राज्ञीक रूपमे प्रशासन अपन हाथमे लऽ लेने छलीह। एहि आन्दोलनक प्रति बंगालक तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर कैम्पबेलक मनोभाव सहानुभुतिपूर्ण छलन्हि।

विधवा-विवाहकेँ वैध घोषित करबाक आन्दोलनक बाद जे सफलता भेटल से एहि बातक प्रमाण छलैक जे लोकक दृष्टिकोण प्रगतिशील छल और नारीक प्रति सामाजिक वैषम्यक समाप्तिक हेतु कैल गेल आन्दोलनक

समर्थन करबाक लेल लोक प्रस्तुत छल। ढाकाक स्थानीय कवि रामचन्द्र चक्रवर्त्ती छन्द-वीरगाथाक शैलीमे एहि विषय पर कविता लिखने छलाह। किछु पंक्तिक मैथिली अनुवाद एतय देल जा रहल अछि—

हे महारानी, कैम्पबेलकेँ आदेश दिअह युद्धमे योग देबा' लेल
(राजा) बल्लालक सेनाकेँ ध्वस्त करबा' लेल
एहि लेल ने सिक्ख फौज चाही
ने कमान पड़त दागै;
काज भऽ जायत क़ानून-तरुआरिकेँ कनेक चलौनहि,
(कारण) विद्यासागर छथि सेनाध्यक्ष
आ' (हमरसभक) रासविहारी बनताह जनरल
आ' हमसब, कुलीन कन्या दल, सैनिक बनि जायब।[1]

१. कौलीन्य प्रथा केँ मानै बला अंधविश्वासी वर्गकेँ बल्लाल राजकें सेनी कहल गेल छन्हि। राजा बल्लाल बहुत दिन पहिने एहि प्रथाक प्रचलनमे कैने छलाह। अन्यान्य वाक्यक अभिप्राय स्पष्टे अछि।

४. शिक्षाविद्

पहिनहि एक अध्यायमे शिक्षाविदक रूपमे विद्यासागरक जीवनक विषयमे आलोचना कैल गेल अछि—स्कूल सभक इंसपेक्टर और संस्कृत कॉलेजक अध्यक्ष रूपमे कैल गेल हुनक काज, स्त्रीगणक लेल हुनक वीरतापूर्ण संग्राम एवं बंगालमे स्त्रीशिक्षाकेँ जनप्रिय बनैबाक हेतु हुनक प्रयास। बंगाली मध्यवर्गक युवककेँ कम खर्चमे अँग्रेजी शिक्षा दिआबक इच्छासँ ओ 'मेट्रोपॉलिटन इन्सटियूशन' केर स्थापनाक लेल प्रवृत्त भेल छलाह। ई सब पहिनहि आलोचित भऽ चुकल अछि, तैं प्रश्न ई उठैत अछि जे एहि विषय पर पृथक् रूप सँ आलोचनाक लेल एहन किछु नव वस्तु की अछि जाहिसँ ई आलोचनाक योग्य प्रमाणित भऽ सकय।

असलमे तेहन नव बात छैक। पहिलुका वर्णनमे एहि विषयक बहुत रास मुख्य-मुख्य बात छुटल रहि गेल। अपन सकल कार्यकलापमे विद्यासागर पूर्वनियोजित परिकल्पनाक अनुसार चलैत छलाह, जाहि सँ काज नियोजित ढंग सँ आगाँ बढ़य। विशेषत: शिक्षाक क्षेत्रमे हुनक कार्यकलापमे ई बात चरितार्थ अछि। हुनक अपन योजनानुसार ओ ओहि कालक युवावर्गकेँ प्राय: सम्पूर्ण शिक्षा प्रदानक हेतु सचेष्ट भेल छलाह जाहिसँ ओ सब एक-एकटा दीपक जकाँ ज्ञानक आलोककेँ विकीर्ण कऽ सकय। शिक्षा-प्रतिष्ठानक स्थापना करब आ' तकरा सबकेँ सफलतापूर्वक चलायब एक बात भेल, मुदा एकर आरो एकटा पक्ष अछि। उदाहरणस्वरूप, पाठ्यपुस्तकादिक नियोजित उत्पादन एकर एकटा ध्यातव्य अंश भेल। शिक्षाक विषय और विद्यार्थी लोकनिक अभिव्यक्ति बढ़ैबाक प्रश्न एहिसँ कम जरूरी नहि छल। ई नीक जकाँ बूझि लेब उचित हैत जे हमरा सभक इतिहासक ओहि संक्रमणकालमे ओ कोन तरहेँ एहि समस्यासभक समाधानक प्रयत्न कैने छलाह।

उन्नैसम शताब्दीक मध्यमे हमसब अपन इतिहासक एकटा अत्यन्त आकर्षक अध्यायसँ गुजरि रहल छलहुँ। पश्चिमी संस्कृतिक प्रभाव कतेको नव शक्तिक जन्म देने छल जकर ढेउक घात-प्रतिघातसँ स्थिति अत्यन्त जटिल भऽ गेल छल। धर्मक क्षेत्रमे एक दिस चर्चमे चलैबला निराकारवादी पूजा आ दोसर दिस इसाइ मिशनरीलोकनि द्वारा मूर्त्ति-पूजा कहि निन्दित साकार

उपासनाक बीच विवाद मचि गेल छल। एहि स्थितिसँ एकटा नवीन धर्मक जन्म भेल। एहि दुविधापूर्ण स्थितिमे ताहि दिनुका हिन्दू युवा अपनाकेँ जटिल समस्याक मध्य पौलक। की ओ मूर्ति-पूजाक हेतु हिन्दू धर्मकेँ त्याग करैत डिरोजिओक शिष्यलोकनि जकाँ इसाइ बनि जाय ? की ओ बहिरा बनि कऽ मिशनरीलोकनिक आह्वानक उपेक्षा करैत धर्मक रूढ़िसँ अपनाकेँ जोड़ने राखय ? अथवा तेसरे एकटा मार्गकेँ अपनबैत ओ महर्षि देवेन्द्रनाथ द्वारा प्रतिष्ठित नवीन धार्मिक भ्रातृत्व स्वीकार करय जे कि मध्य मार्ग धयने छल ? एहि समस्याक समाधान करब ओकरा लेल कठिन छल और एक आर पीढ़ी धरि ई समस्या ता धरि बनले रहल, जखन कि रामकृष्ण और हुनक शिष्य विवेकानन्द आविर्भूत भऽ एकर समाधान प्रस्तुत कऽ देलथिन्ह।

ताहि दिनुका युवा-वर्गक सामने एहि तरहक आर एकटा परिस्थिति ई छल जे कोन तरहक शिक्षा-पद्धतिक ग्रहण करब उचित हैत। एक दिसि छल शिक्षाक पुरातन पद्धति जकरा लेल विदेशियो सरकार अनेक सुविधा कऽ देने छल। दोसर दिसि छल हिन्दू कॉलेज और मिशनरी कॉलेज सबमे प्रचालित पश्चिमी शिक्षाक आकर्षक आह्वान। वैह विदेशी सरकार एहि बीचमे एकर प्रचार हेतु आशीर्वादस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रमे जिला स्कूलसभक स्थापना कैने छल। की ओकरा एहन स्कूलमे जैबाक चाही ? शिक्षाक एकटा महत्वपूर्ण उद्देश्य भेल अभिव्यक्तिक क्षमताकेँ प्राप्त करब। की ओकर अपन मातृ-भाषा बंगले ओकर अभिव्यक्तिक माध्यम हैत ? जँ ई मानि ली जे ओ सैह करय तँ ओकरा सफलता कोना भेटतैक ? तहिया धरि की बंगला गद्य अविकसित नहि छल ? तखन की एहि स्थितिमे ओकरा अँग्रेजीकेँ माध्यम बनायब उचित हैत ? कैकटा कारणेँ ई आकर्षणीय छल। एहिमे उच्चकोटिक गद्य-साहित्य छल। शासकक भाषा होयबाक कारणेँ एकर विशेष प्रतिष्ठो छल। ई निर्णय करब अत्यन्त कठिन छल जे कोन पथ अपनाओल जाय।

विद्यासागर एहि समस्याक गहन अध्ययनक बाद अंततोगत्वा एहन एकटा पथ खोजि निकाललन्हि जे छल तँ असनातनी, मुदा निश्चित रूप सँ गम्भीर अन्तर्दृष्टि पर आधारित छल। ओ ई निश्चय कैलन्हि जे शिक्षित बंगालीक अभिव्यक्तिक भाषा बंगले हैत, मुदा जेँ कि तखनहु धरि पूर्णरूपसँ विकसित नहि भेल छल, तँ विद्यार्थीलोकनिकेँ संस्कृतक अध्ययनो करै पड़त। संस्कृतक आधार बनि गेलासँ ओ बंगलाकेँ अभिव्यक्तिक माध्यमक रूपमे और नीक जकाँ नियोजित कऽ सकत। ओकरा सभक काज हैत यथार्थ वैज्ञानिक ज्ञानक

विस्तार करब। अतएव ई आवश्यक छल जे ओ सब अँग्रेजी तामे दक्षता प्राप्त करै जाहिसँ वैज्ञानिक ज्ञानक क्षेत्रमे ओकरा सबके प्रवेश भेटय। हुनका मतें एहन सिद्धान्त सब पर आधारित शिक्षासँ एहन एकटा छात्र-दल प्रस्तुत हैत जे कि यथार्थमे ज्ञानक वाहक हैत। अँग्रेजी शिक्षा सँ ओ सब ज्ञानार्जन कऽ सकत आ' संस्कृत पर अधिकार कऽ लेबाक कारणें मातृभाषामे मनोभावना व्यक्त करबाक क्षमताकें बढ़ा सकत।

हुनक एहि योजनाक स्पष्ट आभास तत्कालीन शिक्षा-समितिक सचिव डॉ० मोअटकें लिखल हुनक एक पत्रमे पाओल जाइछ। एहि योजनाक जन्म ओहि विवादसँ भेल छल, जाहिमे विद्यासागर डॉ० वैलेण्टाइनक कलकत्ता स्थित संस्कृत कॉलेजक परिदर्शनोपरान्त देल गेल संस्तुतिक बाद पड़ि गेल छलाह। कॉलेजक अध्यक्षक रूपमे विद्यासागर हुनक कतोक संस्तुतिकें प्रयोग मे अनबामे असुविधाक अनुभव कयलन्हि और जखन अधिकारी-वर्ग हुनक इच्छाक विरुद्ध ओकर कार्यान्वियनक हेतु दवाव देमै लगलथिन्ह, हुनक भीतर जे सशक्त मनुक्ख छल से प्रतिवाद कऽ उठल। और एहिसँ ओहि विवादक आरम्भ भेल जकर उल्लेख पहिने एकटा अध्यायमे कैल जा चुकल अछि। एतय मात्र एहि बात दिसि दृष्टि देबाक अछि जे ओ अपन शिक्षा-सम्बन्धी योजनाक विषयमे की कहने छलाह। एहि विषय पर हुनक विचार कें स्पष्ट कयनिहार एहन एकटा पत्रसँ एतय उद्धरण देल जा रहल अछि—

"जँ हमरा ई स्वतन्त्रता देल जाय जे पहिने बंगला पर अधिकार प्राप्त करबाक लेल संस्कृत पढ़ाबी आ' तकर बाद अँग्रेजीक माध्यमसँ ओकरा सबके यथार्थ ज्ञान दिऐक आ' जँ हमरा अपन कार्यमे शिक्षा-समितिक दिसि सँ प्रयोजनीय सहायता आ' प्रोत्साहन भेटय, तँ हम अहाँकें ई आश्वासन दऽ सकैत छी जे कैक वर्षमे हम एहन एक छात्र-दलकें प्रस्तुत कऽ सकैत छी जे जनतामे शिक्षा-प्रसारक काज लिखबा-पढ़बाक क्षमता रहबाक कारणे ओहि छात्र सबसँ नीक जकाँ कऽ सकत जे सब अहाँ सभक अंग्रेजी अथवा भारतीय कॉलेजमे विशिष्ट योग्यता प्रदर्शन कैलक अछि।"[1]

एहिसँ हुनक शिक्षा-सम्बन्धी योजनाक तात्त्विक विशेषता स्पष्ट भऽ जाइत अछि। हुनका विचारें विद्यार्थीकें अभिव्यक्तिक क्षमता प्राप्त करबाक चाही, जे ओ अपन मातृभाषाक माध्यमहिसँ नीक जकाँ कऽ सकैत अछि।

---

१. डॉ० मोअटकें लिखल पत्र, तारीख—५-१०-१८५३।

ताहि पर अपेक्षित अधिकार प्राप्त करबाक लेल ई आवश्यक जे संस्कृतक आधार सुदृढ़ हो कारण जे निःसन्देह शास्त्रीय साहित्य सबहुमे संस्कृतक स्थान एक समृद्धतम साहित्यक रूपमे अछि और बंगलाक संग संस्कृतक सम्बन्ध घनिष्ठ अछि। मुदा ज्ञानक प्रसारक हेतु यथार्थ माध्यम रूपमे काज करबाक लेल विद्यार्थीके अँग्रेजिओक शिक्षा भेटबाक चाही, कारण एहि भाषाक सहायतासँ वैज्ञानिक गवेषणमे नवीनतम प्रगतिक विषयमे ओकरा जानकारी भेटि सकत।

एहि योजनाकेँ आगाँ बढ़ैबाक लेल विद्यासागर संस्कृतक शास्त्रीय ग्रन्थ आ' बंगलामे उपयुक्त श्रेणीवद्ध पाठ्यपुस्तकक प्रकाशनक एकटा परिकल्पना ग्रहण कैलन्हि। एहि दिशामे पहिल काज छल एहि सभक प्रकाशनक लेल एकटा प्रेसक स्थापना। एहि तरहेँ १८४७मे संस्कृत प्रेसक स्थापना कैल गेल—पहिने हुनक मित्र मदन मोहन तर्कालंकारक संग, मुदा वादमे मात्र हुनक अपने तत्वावधानमे एकर काज चलय लागल। संगहि एकर सहयोगी संस्थानक रूपमे संस्कृत प्रेस डिपोजिटरी स्थापना सेहो भेल जकर काज छल प्रेस द्वारा प्रकाशित पुस्तक सभक संरक्षण और विक्रय करब।

एहि तरहेँ व्यवस्था सम्पूर्ण भऽ गेलाक बाद ओ नियोजित ढंगसँ पुस्तक प्रकाशन लेल एकटा विस्तृत योजना प्रस्तुत कैलन्हि, जकरा तीनटा भागमे विभाजित कैल जा सकैत अछि। एक भागमे छल हुनक अपन लिखल संस्कृत व्याकरण पोथी सब, दोसरमे अत्यन्त सावधानतापूर्वक सम्पादित संस्कृत साहित्यक शास्त्रीय ग्रन्थसमूह, और तेसरमे ओ पुस्तक सब अबैत छल जे ओ स्वयं श्रेणीवद्ध ढंगसँ प्रस्तुत कयने छलाह—प्राइमरी (प्राथमिक) स्तरसँ लऽ कऽ ओहि स्तर धरिक लेल जतय जा कऽ छात्रकेँ भाषाक ज्ञान पूर्ण भऽ जाइत अछि।

क्यो ई पूछि सकैत अछि जे विद्यासागर संस्कृत व्याकरण विषयक पाठ्य-पुस्तक लिखबाक भार अपनहि कियेक उठौलन्हि ? एकर कैकटा ठोस कारण छल। संस्कृत साहित्यक बोधक हेतु व्याकरण पर अधिकार हैब आवश्यक छल। मुदा एहि व्याकरणक सूत्रावली एतेक जटिल छलैक और विभिन्न कारक आ' क्रियाक लेल शब्दक रूप एतेक बेसी छलैक जे एकर ज्ञान प्राप्त करब अत्यन्त समयसाध्य आ' कठिन काज भऽ जाइत छल। छात्र-सभक कष्टकेँ सरिपहुँ बढ़ैबाक लेल पारम्परिक व्याकरण एहन एकटा सूत्र-शैलीमे लिखल जाइत छल जे नीक टीकाक बिना तकरा बूझब असम्भव छल।

ताहि दिनमे साधारण पद्धति ई छल जे तरुण विद्यार्थी-लोकनि कें तीन वर्ष धरि बोपदेवक 'मुग्धबोध-व्याकरण' पढ़ाओल जाइत छल। अर्थ बिनु बुझनहि हुनका सबकें एकर सूत्र सब कंठस्थ करऽ पड़ैत छलन्हि। प्रक्रिया छल अत्यन्त कष्ट-साध्य और एहिसँ व्यय कैल गेल समय आ' उपयोगक तुलनामे लाभ थोड़ होइत छल। विद्यासागर अपनहि एहि कष्टप्रद प्रक्रियाक भुक्तभोगी छलाह आ' तकरें परिणामस्वरूप ओ एहि निष्कर्ष पर पहुँचल छलाह जे संस्कृत व्याकरण पर अधिकार प्राप्त करबाक समस्या समाधानक हेतु एकटा अधिकतर तर्कसंगत प्रक्रियाक आवश्यकता अछि।

तैं ओ बंगालमे दू स्वरूप मे संस्कृत व्याकरणक रचना कैलन्हि। पहिल स्वरूप छल प्राथमिक स्तरक जाहिमे छात्रसबकें संस्कृत व्याकरणक अनिवार्य तत्त्व सभक परिचय देल गेल छल। एकर नाम 'उपक्रमणिका' सँ ई बात ध्वनित अछि। ई एकटा नींव जकाँ छल जकर आधार पर व्याकरणक व्यापक स्वरूपक अध्ययन कैल जा सकैत अछि। व्यापक स्वरूपक नाम छल 'व्याकरण-कौमुदी' जे कि संस्कृत व्याकरणक संपूर्ण क्षेत्रकें ग्रहण करबाक हेतु तीन भागमे प्रकाशित भेल छल। एहि व्याकरणक रूपरेखा एतेक तर्कसंगत छल एवं विषय-विन्यास एतेक सुसम्बद्ध छल जे छात्रसभक लेल एहि पर अधिकार प्राप्त करब अत्यन्त सहज छल। एहि दूनू पुस्तकक प्रशंसनीय विशिष्टताक सबसँ नीक प्रमाण ई अछि जे बंगलाक स्कूलमे एखनहु इयैह सर्वाधिक जनप्रिय संस्कृत व्याकरण पुस्तक अछि। एक सय वर्ष पुरान भेलाक बादो ई दुनू अपरिहार्य अछि।

संस्कृत व्याकरणक शिक्षणकें सहज बनैबाक काज विद्यासागर अपन हाथमे कियैक लेलन्हि तकर विषय मे एकटा रोचक कथा अछि। राजकृष्ण बैनर्जी हुनक एक घनिष्ठ मित्र छलाह और ओ प्रायः हुनक घरमे भेंटघाँट करबाक हेतु अबैत रहैत छलाह। एक बेर जखन ओ ऐलाह त विद्यासागरक कनिष्ठ भ्राता दीनबंधुकें कालिदासक 'मेघदूत' संस्कृतमे उच्च स्वर मे पढ़ैत सुनलथिन्ह। शब्दक स्वर हुनका एहन मुग्ध कऽ देलकन्हि जे ओ संस्कृत सिखबाक उत्कट इच्छा व्यक्त कैलन्हि जाहिसँ ओ संस्कृत साहित्यक रस साक्षात् ल' सकथि। मुदा बोपदेवक व्याकरणक प्राथमिक बाधाकें पार करबाक साहस ओ जुटा नहि सकलाह। मित्र विद्यासागर हुनक सहायताक लैल आगाँ बढ़लाह और एके रातिमे बंगालामे एकटा संक्षिप्त व्याकरण लिखि लेलन्हि। कहल जाइत अछि जे ओ बादमे छोटका

व्याकरण लिखबाक लेल एही नोटसभकें आधारक रूपमे व्यवहार कैनें छलाह ।[1]

एहि तरहें संस्कृत व्याकरणक आरंभिक बाधाकें सफलतापूर्वक पार कैलाक बाद विद्यासागर संस्कृतक शास्त्रीय साहित्यसँ चुनल अंश सभ ल' ल' श्रेणीबद्ध पाठक संकलनक काजमे लगलाह, जाहिमे संकलन सब सुगम पदसँ शुरू कए कठिन पदमे पहुँचि कए शेष होइत छल । संस्कृतक शास्त्रीय ग्रंथ सभ सँ संकलित ई सब रचना 'ऋजुपाठ' नामक तीन भागक एकटा पुस्तक मे १८५१-५२ मे लिखल गेल छल । एहिसँ संस्कृतक बोध प्राप्त करब पहिने सँ बहुत सहज भऽ गेल । एहि मे कोनो आश्चर्यक बात नहि अछि जे तैं ई सब पोथी अत्यन्त जनप्रिय भेल छल । संस्कृत साहित्यक प्रथम रसास्वादन रवीन्द्रनाथकें अपन पितृदेवक देखरेखमें ऋजुपाठ'क माध्यमें भेलन्हि । दोसर भागमे मूल वाल्मीकिरामायणसँ किछु अंश संकलित भेल छल । रवीन्द्रनाथकें ई सोचि कए एतेक हर्ष भेल छलन्हि जे ओ भारतक आदिकविक लिखल एहि महाकाव्यक पाठ स्वय कऽ रहल छथि, जे ओ अपन माँक सामने एहि पर अधिकार प्राप्त करबाक प्रदर्शन करऽ लगलाह ।[2]

तकर बाद विभिन्न हस्तलिखित पोथीक पाठ सभक तुलनात्मक अध्ययन करैत विद्यासागर अत्यन्त यत्नक संग संस्कृतक शास्त्रीय ग्रंथ सभक नवीन संस्करणक प्रकाशन-कार्यमे जुटि गेलाह । एहिमे मात्र कालिदासेक कृति नहि, अपितु बाण-कृत 'कादम्बरी' आ' 'हर्षचरित', भवभूतिक, 'उत्तररामचरित', भारविक 'किरातार्जुनीय' और माघक 'शिशुपाल-वध' सेहो छल ।

बंगलाक क्षेत्रमे विद्यासागरकें एकदम शून्यसँ आरम्भ करऽ पड़ल छलन्हि और संपूर्ण रूपसँ अपनेहि शक्ति-क्षमतासँ काज चलाबै पड़लन्हि । असलमे ताहि दिनमे बंगलामे अ आ, क, ख सिखैबाक पुस्तक नहि छल । प्राथमिक स्तरक प्रत्येक शिक्षककें लिपि सिखैबाक अपने अपने पद्धति होइत छलन्हि । तैं हुनका एकदम शुरूसँ आरम्भ करै पड़लन्हि । अतएव ई भार हुनकहि पर पड़लन्हि जे नेना-भुटकाक लेल लिपिक रहस्य-भेद कएनिहार बंगला साहित्यक पहिल प्राइमर लिखथि । एहि तरहें १८५५ मे बंगलाक पहिल प्राइमर 'वर्णपरिचय' क नामसँ प्रकाशित भेल । एकर पहिल भागमे

१. चंडीचरण बैनर्जी, 'विद्यासागर,' अध्याय-५ ।
२. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, 'जीवनस्मृति' ।

स्वर आ' व्यजन लिपि एवं व्यंजन-संयोगसँ स्वरक आकार-भेद सिखाओल गेल अछि और दोसर भागमे संयुक्त व्यंजनक आकार चिन्हाओल गेल अछि। प्रत्येक सवकक वाद पढ़वाक लेल आदर्श पाठ संयोजित पाओल जाइछ। ई दुनू प्राइमर अत्यन्त जनप्रिय भेल और एखनहु धरि अन्यान्य सचित्र सुसज्जित रंगीन 'अ आ क ख' क पुस्तक रहितहुँ एहि क्षेत्रमे अपन स्थान सुरक्षित कैने अछि। एहि दूनू प्राइमरक कतेक संस्करण एखन धरि छपल अछि तकर गणना करव असंभव अछि।

एकर वाद आयल ओ सब श्रेणीबद्ध पुस्तक जतय छात्र सभक लेल क्रमशः सुगमसँ कठिन पाठक समावेश कैल गेल। एहि शृंखलाक पहिल कड़ी छल 'वोधोदय' जाहिमे वाल-मानसक लेल वर्णमालाक ज्ञानक बादे वैज्ञानिक ज्ञानक प्रदानक साहसिक प्रयास कैल गेल छल। तकर वादे आयल इशप-कथाक पद्धतिमे लिखल 'कथामाला' और तदुपरांत महापुरुष लोकनिक जीवनीक 'चरितावली'। एहि दुनू पुस्तकक रचना विशेष उद्देश्यसँ कैल गेल। पहिल पुस्तकमे विभिन्न स्थितिमे विभिन्न प्राणीक विषयमे कथाक माध्यमे नवीन मस्तिष्कमे सांसारिक बुद्धि देवाक प्रयास कैल गेल और दोसरमे महापुरुष लोकनिक जीवनक आदर्श सामने राखल गेल छल जाहिसँ ओ सब अपन जिनगीमे तकर अनुसरण करय।

अन्तिम स्तरक पाठक हेतु जखन कि छात्रके भाषा पर अधिकार प्राप्त भऽ जाइत अछि, विद्यासागर और दू टा पुस्तकक रचना कैलन्हि--'शकुन्तला आ' 'सीतार वनवास'। लैम्बक 'टेलस फ्रॉम शेक्सपीयर'क नमूना पर मुदा आओर विस्तृत ढंगसँ कालिदास और भवभूतिक लिखल संस्कृत साहित्यक दू टा श्रेष्ठ नाटकक गद्य-रूपान्तर कैल गेल। ई दूनू एतावत कालमे बंगला साहित्यक शास्त्रीय ग्रन्थ वनि गेल अछि आ' तेँ आन सन्दर्भमे एहि विषयमे आलोचना कैल जायत।

पहिनहि कहल जा चुकल अछि जे विद्यासागर परिकल्पित योजनामे त्रिमुखी कार्यक्रम छल। एहिमे संस्कृत साहित्य पर अधिकार प्राप्तिक माध्यमे बंगलामे अभिव्यक्तिक क्षमता प्राप्त करायब, बंगला साहित्यसँ परिचित करायब एवं जेना हिन्दू कॉलेज आ' मिशनरी सभक द्वारा स्थापित कॉलेजमे कराओल जाइत अछि तहिना अँग्रेजी शिक्षाक क्षेत्रमे प्रवेश करायब—एहि

तीनूक व्यवस्था छल। विद्यासागरक अपन आचरणहिसँ पता चलैत अछि जे ओ पश्चिमी शिक्षा पर एतेक जोर एहि लेल दैत छलाह जे ताहिमे वैज्ञानिक ज्ञानक खजाना छल। विद्यार्थीक रूपमे संस्कृत साहित्यक विभिन्न पाठ्य-क्रमक अध्ययन करैत ओ वैकल्पिक आधार पर अँग्रेजी पढ़बाक सुविधाक सम्पूर्ण लाभ ग्रहण कैने छलाह। परवर्त्तीकालमे ओ व्यक्तिगत रूपसँ अँग्रेजीक पाठ लैत रहलाह जा धरि हुनका ई सन्तोष नहि भेलन्हि जे हुनका अंग्रेजीमे अभिव्यक्तिक पर्याप्त क्षमता भऽ गेलन्हि। हुनक अँग्रेजीमे लिखल चिट्ठीक भाषा, जकर उद्धरण एहि पुस्तकमे देल अछि, एहि बातक प्रमाण अछि जे एहि भाषा पर हुनक अधिकार कोन स्तरक छलन्हि।

दुर्भाग्यवश, संस्कृत कॉलेजमे अँग्रेजी शिक्षाक ई सुविधा १८३५मे प्रत्याहृत भऽ गेल, जेना कि पहिनहि कहल गेल अछि। स्पष्टतः ई एकटा पश्चाद्-गामी निर्णय छल। तेँ हमरा देखैत छी जे संस्कृत कॉलेजक अध्यक्षक रूपमे कार्य-भार ग्रहण करितहि विद्यासागर पुनः एकर व्यवस्था कैलन्हि। तकर बाद ओ एहि नव विभागक पुर्नगठन कैलन्हि जाहिसँ अँग्रेजी पर अधिकार प्राप्तिक लेल ई प्रभावशाली माध्यम बनि सकय आ' एकरा अपन कॉलेजक विद्यार्थी सभक लेल अनिवार्य विषय बना देलन्हि। एहि तरहेँ ओ दू टा संस्कृतिक मिलनक पथ उन्मुक्त कऽ देलन्हि।

५. बंगला गद्यक स्रष्टा

बंगला साहित्यक सुदीर्घ इतिहास अछि। यद्यपि ई बात विवादास्पद अछि, तथापि एकर प्रमाण भेटैत छैक जे बारहमसँ लऽ कए पन्द्रहम शताब्दीक भीतर बंगला काव्य अपन कलात्मक शिखर पर पहुँचि गेल छल। पहिलुका बंगला साहित्यक इतिहासग्रन्थमे विद्यापति बंगलाक कविक रूपमे मानल गेल छलाह, मुदा आब ई निश्चित रूपसँ प्रमाणित भऽ गेल अछि जे ओ मैथिलीमे लिखने छलाह और मैथिलीक बंगलाक संग अनेक साम्य अछि आ' लिपिओ कनेक परिवर्तित रूपमे वैह अछि। विद्यापतिकेँ जँ छोड़ियो देल जाइन्ह त चण्डीदासकेँ बंगलाक एक एहन कवि मानल जा सकैत अछि जे असाधारण स्तरक रचना देने छलाह।

दुर्भाग्यवश एहि चण्डीदासक काल आ' परिचितिक विषयमे कैकटा परस्परविरोधी प्रमाण भेटल अछि। कमसँ कम दू गोट चण्डीदास रहथि। एककेँ 'श्रीकृष्णकीर्त्तन'क रचयिता मानल गेलन्हि। ओ अपनाकेँ एहि पुस्तकमे वड़ु चण्डीदास कहैत छथि। एक और चण्डीदास रहथि जनिका 'पदावली'क लेखक मानल जाइत छन्हि। दुनूक रचना-कौशल अत्युच्च स्तरक छलन्हि, यद्यपि पदावलीक कवि एक-एक स्थान पर एहन स्तरकेँ प्राप्त करैत छथि जे रवीन्द्रनाथ ठाकुरोक श्रेष्ठ रचनाक समकक्ष प्रतीत होइत अछि। ईहो पता चलैत अछि जे एकटा आर चण्डीदास छलाह जे 'गीत-गोविन्द'क रचयिता जयदेव और पूर्वोल्लिखित विद्यापतिक स्तरक ख्यातिक अधिकारी छलाह और जे चैतन्यसँ प्राचीन छलाह। एतबहि तथ्यक प्रमाण भेटैत अछि; बाकी सबटा रहस्यावृत अछि।

तैं एहिमे कोनो आश्चर्यक बात नहि जे शोधकर्त्ता लोकनि एहि विषयमे एकमत नहि भऽ सकलाह। एहि विषयमे मतपार्थक्य अनेक अछि। किछु विद्वान इयैह मानैत छथि जे दूटा चण्डीदास छलाह। अर्थात् 'श्रीकृष्णकीर्त्तन' आ 'पदावली'क लेखककेँ पृथक्-पृथक् व्यक्ति मानल जाइत अछि। क्यो-क्यो एहनो छथि जे 'श्रीकृष्णकीर्त्तन'क लेखककेँ चैतन्य पूर्व मानैत छथि। आर एकटा मत ई अछि जे एहि दुनू पुस्तकक रचयिता एके व्यक्ति छलाह।

एहि अनुमान सभकें जँ नहियो ग्रहण करी त ई निश्चित रूपसँ कहल जा सकैत अछि जे षोड़श शताब्दीक पहिनहि बंगला काव्य प्रौढ़त्व प्राप्त कऽ चुकल छल। श्रीचैतन्यक नेतृत्वमे नवद्वीपमे जे वैष्णव-आन्दोलन शुरू भेल छल ताहि परम्परामे लिखल गेल कवितामे उच्चस्तरीयताक परम्परा बनल रहल। उन्नैसम शताब्दीक आरम्भ धरि बंगला साहित्य समृद्धतर होइत रहल यद्यपि ताधरि एहिमे चरित्रगत परिवर्त्तन आबि गेल छल। तकर बाद पतनक चिह्न दृष्ट होमऽ लागल—विषयसँ अधिक महत्त्व रचना-रूपकें देल जाय लागल। अनुप्रास, श्लेष आदि विभिन्न कौतुक दिसि परवर्त्ती कविलोकनिक ध्यान अधिक गेलन्हि।

कविताक तुलनामे बंगला गद्य बहुत बादमे आविर्भूत भेल। अठारहम शताब्दीक अंत धरि बंगला गद्यक नमूना स्वत्व-लेख अथवा व्यापार-वाणिज्य संबंधी दस्तावेज धरि सीमित छल। अर्थात्, उन्नैसम शताब्दीक आरम्भ धरि बंगलामे गद्य साहित्यक अस्तित्वे नहि छल।

विदेशी शक्तिक आगमनसँ बनल नव वातावरणसँ साहित्यिक गद्यक जन्म भेल। जखन १७७३मे रेगुलेटिंग ऐक्ट पारित भेलाक बाद शासन-भार विधिवत इष्ट इंडिया कम्पनीक हाथमे चलि गेल, तखन अपेक्षित पृष्ठभूमि प्रस्तुत भेल आ दूटा नवीन शक्ति एहि दिशामे आगाँ बढ़ल। ब्रिटिश शक्तिक प्रसरण-कालमे अपन धर्मक प्रचार हेतु मिशनरीलोकनि एहि देशमे ऐलाह। कैरी और हुनक दल श्रीरामपुरमे बैप्टिस्ट मिशनक मुख्य कार्यालयक स्थापना कैलन्हि। ताही समयमे देशक प्रशासनक लेल ब्रिटिश अफसरक एक दलकें प्रशिक्षित करबाक आवश्यकता प्रतीत भेल। हुनकासभक आवश्यक प्रशिक्षणक हेतु कलकत्तामे फोर्ट विलियम कॉलेजक स्थापना भेल।

नव प्रशासन आ' मिशनरीलोकनि—दुनूक ई सामान्य उद्देश्य छल जे जाहि देशमे काज करबाक छलन्हि ततहुका भाषाक व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होन्हि। जखन बंगलामे गद्य-पुस्तके नहि छल त ई काज कोना संभव भऽ सकैत छल? एहि समस्याक समाधान खोजि निकालब आवश्यक छल और तें दुनू पक्ष स्वतंत्र रूपें बंगलामे गद्य-साहित्य सृष्टिक प्रचेष्टा कयल। एहि तरहें बंगला गद्यक उद्भव निश्चित रूपसँ बंगाल पर पश्चिमी प्रभावक फल छल। अठारहम शताब्दीक अंतमे जँ ई शक्ति सब अपन काज शुरू नहि कैने रहैत त बंगला गद्यक जन्ममे आर देरी भऽ जाइत।

बगला गद्यक पहिल पुस्तक उत्पादनक श्रेय श्रीरामपुरक बेप्टिस्ट मिशनेकें छैक। केरी रामराम बसुकें अकबरक समकालीन दक्षिण बंगालक महाराज प्रतापादित्य पर एक पुस्तक लिखबाक हेतु प्रोत्साहित कैलन्हि। एहि पुस्तकक नाम छल 'प्रतापादित्य-चरित्र' और ई प्रकाशित भेल छल १८०१ ई० मे। १५ जून, १८०१कें डॉ० रायलैंडकें लिखल केरीक एकटा पत्रसँ ई पता चलैत अछि जे ई पुस्तक निश्चित रूपें केरीक प्रोत्साहनेसँ लिखल गेल छल। उद्धृत अंश एहि प्रकारक अछि—"हम रामराम बसु द्वारा हुनकासभक राजालोकनिक इतिहास लिखौलियन्हि और ई बंगला भाषामे लिखल गद्यक सर्वप्रथम पुस्तक थिकैक।"

फोर्ट विलियम कॉलेजक अधिकारी-वर्गो बेसी पछुआयल नहि रहलाह। ओलोकनि ओहि कॉलेजक अध्यापक मृत्युंजय विद्यालंकारकें किछु बंगला पुस्तक लिखबाक भार सौंपने छलाह। हुनक लिखल पहिल पुस्तक छलन्हि न्यायक रक्षक विक्रमादित्यक लोक-कथा पर आधारित 'बत्तीस सिंहासन'। एहि पुस्तकक प्रकाशन तकर अगिला वर्ष १८०२मे भेल। तकर छओ वर्ष बाद लिखल और दू टा पुस्तक छपल 'हितोपदेश' आ' 'राजा बली' नामक।

उन्नैसम शताब्दीक दोसर आ' तेसर दशकमे अनेको क्षेत्रमे आन्दोलन चलाबै बाला राममोहन राय ई देखा देने छलाह जे धार्मिक आ' दार्शनिक विषयक अभिव्यक्तिक हेतु माध्यमक रूपमे बंगलाक व्यवहार कैल जा सकैत अछि। पौराणिक हिन्दू धर्ममे प्रचलित अवतारवादकें मूर्त्ति-पूजा कहि भर्त्सना करबाक जे विवाद मिशनरी द्वारा आरम्भ कयल गेल छल, ओ ताहिमे संपूर्ण योगदान देने छलाह। ओ पूजाक एहि पद्धतिकें कनेको पसिन्न नहि करैत छलाह; मुदा अपन संस्कृतिक प्रति प्रगाढ़ प्रेम हुनका ई आविष्कार करबाक लेल बाध्य कैने छल जे हुनक अपने परम्परामे अवतारकें नहि मानैबला ईश्वर-उपासनाक पद्धति वर्त्तमान अछि। संस्कृत साहित्यसँ घनिष्ठ परिचय रहलाक कारणें ओ धर्म और दर्शनक प्राचीन पुस्तक सभकें उकटा पुकटा कए 'ब्रह्मसूत्र'क आधार पर प्रतिष्ठित मूर्तिरहित सामूहिक पूजा-पद्धतिक पक्षमे मत प्रस्तुत कैलन्हि।

संक्षेपमे कहल जाय त हुनक प्रस्तावना एहि तर्क पर आधारित छलन्हि जे ब्रह्मसूत्रमे ५०० सूत्र अछि और एहि ग्रंथमे ब्रह्मकें छोड़ि कए और कोनो मनुक्खकें ईश्वर वा देवताक अवतारक रूपमे उल्लेख नहि भेटैत अछि। एहिसँ ओ एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे वेदान्तमे मूर्त्ति-पूजाक समर्थन नहि कैल गेल अछि।

अपनहि द्वारा आरम्भ कैल गेल एहि नव आन्दोलनक लेल मत प्रस्तुत करवाक उद्देश्यसँ ओ बंगलामे वेदान्त पर एकटा पुस्तक रचना कैलन्हि जाहिमे ओ अपन तर्कसभक स्पष्टीकरण कैलन्हि। एहि तरहें १८१५मे धर्म आ दर्शन सन गम्भीर विषयपर बंगलामे हुनका द्वारा लिखल पहिल पुस्तक प्रकाशित भेल।

एतेक कुशल प्रयास भेलहु पर तखन धरि बंगलामे एहन प्रौढ़ गद्य-शैलीक जन्म नहि भेल छल जाहिमे एकहि संग कथा आ' उपन्यास सनक रचनात्मक साहित्य एवं वैज्ञानिक तथा दार्शनिक विषयक अभिव्यक्ति संभव हो। संपूर्ण अभिव्यक्तिक योग्य शैलीक समस्याक प्रभावशाली समाधानक लेल बंगालकें और एकटा पीढ़ी धरि प्रतीक्षा करऽ पड़ल। एकर समाधान करब रामराम बसु अथवा मृत्युंजय विद्यालंकार सनक लोकक वशमे नहि छल, कारण हुनका सभक शिक्षा प्राचीन रूढ़िवादी पद्धतिसँ भेल छलन्हि जतय अंग्रेजी साहित्यक संग संपर्क स्थापित नहि होइत छल। और ई हिन्दू कॉलेजमे शिक्षित ओहि नव पीढ़ीक लोक द्वारा सेहो सम्भव नहि छलैक, कारण जे हुनका सभक आँखि पश्चिमी चिन्तनसँ एत्तेक चौन्हिया गेल छलन्हि जे ओ सब भारतीय वस्तु मात्रक विरुद्ध पूर्वाग्रह विकसित कऽ लेने छलाह। प्रत्युत ओसब ताहि दिन अँग्रेजी भाषा और साहित्य पर दक्षता-प्राप्तिए अपन लक्ष्य बुझैत छलाह।

जे बंगला-गद्यकें एहि नवीन गुणसँ योजित क' सकथि एहन व्यक्तिकें मात्र अंग्रेजिएमे कुशल होमै पड़तन्हि सैह नहि, ओकरा संगहि-संग अपन देशक संस्कृतक पुरातन शास्त्रीय साहित्यक ज्ञानी सेहो होमै पड़तनि। एहि व्यक्तिकें संस्कृत पर अधिकार एहन गम्भीर हैवाक चाही जे एकर साहित्यिक गुणक दिसि ओकर ध्यान जा सकय एवं एकहि संग ओकरा अंग्रेजी पर सेहो अधिकार एहन होमक चाही जे अंग्रेजीक शास्त्रीय ग्रंथ सब आ' तकरा-सभक उत्कर्षक विषयमे बोधक क्षमता रहैक। एकर संगहि मातृभाषाक प्रति प्रेम सेहो रहवाक चाही। एहि तीन-तीनटा अनिवार्य गुणक सहावस्थान एक व्यक्तिमे भेटब मोसाकिले : तें ई सुखद घटनाक निष्पत्ति ताधरि लम्बित रहल, जाधरि ठीक समयपर ठीक व्यक्ति ईश्वरचन्द्र विद्यासागरक रूपमे आविर्भूत नहि भेलाह।

संस्कृत साहित्यक संग हुनक घनिष्ठ संबंध और गम्भीर अन्तर्दृष्टि हुनका एहि विशाल भांडारसँ यथेष्ट उधार ल' ल' क' बंगला गद्य-साहित्यक उन्नति-

साधन करवाक लेल प्रेरित कैलकन्हि। हुनका ई पता छलन्हि जे जें संस्कृत शास्त्रीय भाषा सबमे सबसँ समृद्ध अछि और बंगलाक अत्यन्त निकट अछि तें एकर साहित्यक सुविशाल शब्द भण्डारसँ बंगाली साहित्यकार सहजहि सहायता लऽ सकैत अछि। हुनका एकहिटा बातक ध्यान रखवाक छलन्हि जे एहि प्रक्रियामे बंगला भाषाक पृथक् चरित्र ने विनष्ट भऽ जाय। वांछित इयैह छलैक जे दुनूक समन्वय हो जाहिसँ बंगला अपन रूप-विलक्षणताकें बचा कए रखैत संस्कृत शब्द-भण्डारसँ ऋण-ग्रहण कए अपन शब्द-संभारकें समृद्धतर कऽ सकय। आ एहिमे विद्यासागर सफल भेलाह।

एकरा प्रमाणित करवाक सबसँ नीक उपाय ई हैत जे उन्नैसम शताब्दीक मध्यभागमे विद्यासागर द्वारा परिष्कृत गद्य शैलीक संग ऊपरमे उल्लिखित बंगलाक अन्यान्य अग्रगामी गद्यकार लोकनिक गद्य-शैलीक तुलना कैल जाय। एहि लेल हुनका लोकनिक मूल बंगला रचनासँ उद्धरण देमै पड़त मुदा विषयसँ एकर प्रत्यक्ष संबंध रहलाक कारणे एकरा छोड़ि नहि सकैत छी।

बंगला गद्यमे लिखल पहिल पुस्तक १८०१ मे प्रकाशित राम-राम बसुक 'प्रतापादित्य-चरित्र' क उद्धरण सँ शुरू कैल जा सकैत अछि:

"जे काले दिल्लीर तक्ते होमाङु बादसाह तखन छोलेमान छिलेन केवल वंग ओ बिहारेर नवाव परे होमाङु वादसाहेर ओकात हइले ब्याज हईल ए कारणे होमाङु छिलेन वृहत् गोष्ठि ताहार अनेकगुलिन सन्तान ताहादेर आपनादेर मध्ये आत्म कहल हइया बिस्तर बिम्तर झकरा-लड़ाइ काजिया उपस्थित छिल इहाते सुवाजातेर तहशिल तगेदा किछ हइयाछिल।"

शैलीक दरिद्रताकें जँ छोड़ियो दी, जकरा कि एहि लेल माफ कैल जा सकैत अछि जे ई पहिल प्रयास छल, जे बात तुरत दृष्टिकें आकृष्ट करैत अछि से ई छल जे एहि महक अनेक वाग्व्यवहार अपरिचित अछि। एकर कारण ई अछि जे एकर पहिने धरि अरवी और फारसी छल अदालतक भाषा आ' एकर फलस्वरूप कथ्य बंगलामे एहि दुनू स्रोतसँ बहुत रास शब्द आबि गेल छल।

एखन हम मृत्युंजय विद्यालंकारक लिखल 'हितोपदेश' सँ एकटा **उद्धरण देब :**

"प्राज्ञलोक अजर ओ अमरेर न्याय हइया विद्या एवं अर्थचिन्ता करिबेक। आर सकल द्रव्येर मध्ये विद्याइ अत्युत्तम द्रव्य इहा पण्डितेरा कहियाछेन जेहेतु विद्यार सर्वकाले चौरादि द्वारा अहरणीयत्त्व ओ अमूल्यत्त्व ओ अक्षयत्त्व।"

एहिमे ध्यान देबाक बात ई अछि जे रामराम बसुक रचनाक उपर्युक्त नमूनाक विपरीत एतय अरबी अथवा फार्सीसँ आयल शब्दक व्यवहार नहि कए तकर बदलामे संस्कृतसँ बहुत रास शब्द ग्रहण कयल गेल अछि। एहि प्रक्रियामे ई संस्कृत वाक्रीतिक भारसँ अत्यन्त दबल बुझना जाइछ जाहिसँ ई कहल जा सकैत अछि जे मानू बंगलाक सुगन्ध छिना गेल हो।

आब राममोहन रायक पुस्तक 'वेदान्त-ग्रंथ' सँ एक उद्धरण देल जा रहल अछि जे कि हुनक पुस्तकक भूमिकाक अंश थिक।

"किञ्चित मनोनिवेश करिले सकले अनायासे निश्चय करिबेन जे यदि रूपगुण विशिष्ट कोनो देबता किम्बा मनुष्य बेदान्त पञ्चाशदधिक पाँच शत सूत्रे कोनो स्थाने से देबतार सूत्रे मनुष्येर कोनो प्रसिद्ध नामेर किम्बा रूपेर बर्णन अवश्य हइत। किन्तु एइ सकल सूत्र ब्रह्मबाचक शब्द बिना देबता किम्बा मनुष्येर कोनो प्रसिद्ध नामेर चर्च्चार लेश नाइ।"

प्रारम्भिक प्रयास छल एहि दृष्टिसँ राममोहनक शैली अत्यन्त उत्कृष्ट छलन्हि, यद्यपि कतहु-कतहु वाक्य-रचनामे भूल और सौन्दर्याभाव परिदृष्ट होइछ। एतहु ध्यानाकर्षक बात ई अछि जे ओहो संस्कृत शब्द-भण्डारसँ प्रचुर शब्द ग्रहण कैने छलाह।

सजग पाठकक ध्यानसँ ई बात छूटल नहि हैतन्हि जे एहि रचनासबमे विराम-चिह्नक व्यवहार अत्यन्त विरल अछि। ताहि दिन बंगलामे एकहिटा विराम-चिह्नक व्यवहार होइत छल जे छल एकटा ऊर्ध्वाधर रेखा जकर प्रयोग अंग्रेजीक फुल स्टॉपसँ मिलैत-जुलैत छल। वाक्यक भीतर अनुभूति-निर्भर विरतिक सूचनाक लेल विराम-चिह्न व्यवहारक कोनो नियम नहि छल। मुदा सहज रूपसँ पढ़बाक आ बुझबाक लेल ई सब अत्यावश्यक सहायक छल। एतय ध्यान देव उचित हैत जे पहिल उद्धरणमे, जतय रामराम बसुक रचनांशक उदाहरण देल गेल अछि, उक्त उपलब्ध चिह्नोक प्रयोग सबसँ कम भेटैत अछि। एतय पूर्णविराम केवल अनुच्छेदक अन्तमे देल गेल अछि जाहिसँ ताहि महक वाक्य सबक आदि-अंत किछु बुझाइ नहि पड़ैत

अछि। एकर तुलना मे आन दुनू उदाहरणमे पूर्णविरामक प्रयोग बहुत बेसी भेटैत अछि।

पढ़बाक आ' बुझबाक काजकें सहज बनैबाक लेल ईश्वरचन्द्र विद्यासागरकें विराम-चिह्नक प्रयोजनक अनुभव भेलन्हि। देशक कोनो साहित्यमे ई प्राप्त नहि छल, अतः अंग्रेजीसँ एहि प्रयोजनीय वस्तुक ऋण्-ग्रहण मे हुनका कनेको संकोच नहि भेलन्हि। तैं वाक्यान्त-सूचनाक लेल पूर्णविरामक व्यवहारकें चालू रखैत ओ अपन पुस्तक 'बेताल पंचविंशति'क दोसर संस्करण मे सर्वप्रथम अंग्रेजीक विराम-चिह्न पद्धतिक प्रयोग कैलन्हि।[1]

तुलनाक लेल आब हम हुनक पुस्तक 'सीतार वनवास' सँ उद्धरण देब जतय हुनक शैलीक प्रौढ़ता परिदृष्ट होइत अछि:

"रजनी अवसन्न हइल। महर्षि वाल्मीकि स्नान आह्निक समापित करिया, सीता, कुश, लव, ओ शिष्यवर्ग समभिव्याहारे सभामण्डपे उपस्थित हइलेन। सीताके कङ्काल मात्रे पर्यवसित देखिया रामेर हृदय बिदीर्ण हइबार उपक्रम हइल। अति कष्टे तिनि उच्छलित शोकावेगेर संवरणे समर्थ हइलेन, एवं ना जानि आज प्रजालोक किरूप आचरण करे, एइ चिन्ताय आक्रान्त हइया, एकान्त आकुल हृदये काल-यापन करिते लागिलेन।"

एहि शैलीक उत्कृष्टता अत्यन्त स्पष्ट अछि। ई सुस्निग्ध आ' सुपाठ्य अछि। बंगलाक विशिष्टता सबकें रखैत संस्कृतसँ शब्द-ग्रहण कए ई भाषाक अभिव्यक्तिक क्षमताकें बढ़ाओल अछि। एकर उत्कृष्टता एतेक स्पष्ट अछि जे एहि विषयमे अधिक विस्तारसँ आलोचना अनावश्यक प्रतीत होइत अछि।

संक्षेपमे ई भेल बंगला गद्य-शैलीक जन्म-कथा। आइ धरि इयैह शैली उपयुक्त मानल जाइत अछि। एकर परवर्ती पर्यायमे प्रमथ चौधरी ओकरामे किछु सामान्य परिवर्त्तन अनलन्हि जान्हिमे 'साधु' क्रिया-पदक स्थान पर 'चलित' बंगलाक क्रियापदक प्रयोग कैल गेल। एहिसँ स्वरसंगतिक सूत्र द्वारा ध्वनि-विज्ञानक नियमकें मानैत शब्दक रूप किछु ह्रस्व भऽ जाइत अछि। तैयो आइ धरि जे सब लेखक विद्यासागर द्वारा सर्जल शैलीमे परिवर्त्तन करब पसिन नहि करैत छथि से सब दीर्घ साधु क्रियापदक व्यवहार करितहिँ

१. चण्डीचरण बैनर्जी, 'विद्यासागर', अध्याय—५

छथि । एहि तरहेँ आइ दूनू शैलीक सह-अस्तित्त्व अछि, और पुरान शैली 'विद्यासागरक शैली' एवं नव शैली प्रमथ चौधरीक छद्म-नाम 'विरवलक शैली' क नामसँ परिचित अछि । एतय ई उल्लेख कैल जा सकैत अछि जे अपन सवटा पहिलुका कृतिमे रवीन्द्रनाथ ठाकुर पुरान शैलीक प्रयोग कैलन्हि, मुदा पश्चात् नव शैलीक प्रतिष्ठाक बाद ओ एकर प्रति पक्षपात देखौलन्हि । ओम्हर शरच्चन्द्र चटर्जी तँ विद्यासागरक शैली अपनओलन्हि ।

आब हमसब ओहि स्थितिमे पहुँचि गेलहुँ जतय विद्यासागरक एहि महत्त्वपूर्ण कृतित्त्वक विषयमे प्रशंसाक एक-दूटा उद्धरण दऽ सकैत छी । स्थानाभावक हेतु एकरा बंगलाक दू गोट महत्त्वपूर्ण साहित्यिक—बंकिमचन्द्र चटर्जी और रवीन्द्रनाथ ठाकुरक विचारक उद्धरणे धरि सीमित राखब ।

पैरी चाँद मित्रक रचनाक भूमिकामे बंकिमचन्द्र चटर्जी उन्नैसम शताब्दीक प्रारम्भिक समयमे प्रचलित गद्य-शैलीक विषयमे बतावैत छथि जे कोना ई दीर्घ संस्कृत शब्दक तरमे दवल छल और तकर बाद कहैत छथि: "संस्कृत शब्दसँ लदल एहि शैलीक प्रथम व्यवहार ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और अक्षयकुमार दत्तक हाथेँ भेल छलन्हि । यद्यपि हुनकालोकनिक शैली संस्कृत-निर्भर छलन्हि, तैयो तकरा बुझवामे कोनो असुविधा नहि होइछ: विशेषतया विद्यासागरक शैली त अत्यन्त मधुर आ' चित्ताकर्षक छलन्हि । हुनकासँ पहिने क्यो एत्तेक उन्नत मानक बंगला गद्य लिखबामे समर्थ नहि भेल छलाह ।"[१] आन एक अवसर पर, कहल जाइत अछि जे ओ मन्तव्य कैने छलाह : "विद्यासागर द्वारा विकसित और व्यवहृत शैली हमरा सभक ओ पूँजी थीक जकर प्रयोग हमसब करैत छी । हमसब हुनक अर्जित सम्पत्तिक मात्र देखभाल कऽ रहल छी ।"[२]

बंकिमचन्द्रक कलमसँ विद्यासागरक शैलीक गुणक यथार्थ मूल्यांकन भेल अछि । विद्यासागर प्रदत्त नव शैलीक अनुपस्थितिमे बंकिमचन्द्रक लेखनी ततेक शक्तिशाली नहि भऽ सकैत छलन्हि जतेक कि भेल छलन्हि । विद्यासागरक नींवहि पर ओ ओहि भव्य प्रासादक निर्माण कैने छलथिन्ह जाहि सँ बंगला गद्य-साहित्यकेँ विशिष्ट सम्मान भेटल ।

---

१. चंडीचरण बनर्जी, 'विद्यासागर,' अध्याय-६ ।

२. उपरोक्त ।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा प्रदत्त श्रद्धांजलि हुनक शैलीक ललित गुणक वर्णन अचूक शब्दमे कैने छल। ओ लिखने छलथिन्ह: "वंगला साहित्यक क्षेत्रमे पहिल यथार्थ शिल्पी विद्यासागरे छलाह। एहिमे कोनो सन्देह नहि जे वंगलाक गद्य-साहित्यक जन्म हुनकासँ पहिनहि भेल छल, मुदा वैह सर्वप्रथम वंगला गद्यमें कलात्मकताक प्रदर्शन कैलन्हि। ठोस उदाहरणक सहायतासँ विद्यासागर ई प्रमाणित कैलन्हि जे भापा विचारक एकटा पेटी मात्र नहि थीक जाहिमे लेखक जेना-तेना अपन कर्त्तव्य-पालनक नाम पर किछु भावकेँ ठूसि देथि। ओ देखौलन्हि जे अभिव्यक्ति-योग्य विचारकेँ सरल, गरीयान और क्रम-सामंजस्यक संग अभिव्यक्त कैल जायब उचित हैत।[1]

---

१. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, 'चरित्र-पूजा'।

६. मूलतः मानवतावादी

जनताक सहमतिसँ ककरहु अकारण लोकप्रिय नाम नहि भेटि जाइत छैक। ई ओहि प्रत्येक छोट-छीन काजक लेल भेटैत छैक जकरा साधारण रूप सँ आँख देखि नहि पबैत अछि मुदा सब मिला कए जकर प्रभाव एतेक बेसी होइत अछि जे एहि तरहक नामकरणक अनुप्रेरण भेंटि जाइछ। एहि तरहें एहन नामकरणक संग असाधारण महत्त्व जुटल रहैत छैक और ई ओहि व्यक्ति-विशेषक विशिष्टताक परिचायक प्रमुख गुणक द्योतक होइत छैक। गांधीकें एहिना महात्माक उपाधि भेटल जाहिसँ हुनक चरित्रक प्रमुख गुणक संकेत होइत अछि। ओहिना विद्यासागरकें जनता एकटा दोसर खिताब देने छल —'दयार सागर' जाहिसँ हुनक सबसँ असाधारण गुण, हुनक अतिशय दयाशील हृदयक परिचय भेटैत अछि।

तँ एहिमे कोनो आश्चर्यक बात नहि जे हमसब हुनका असंख्य मानवता मूलक कार्यावली मे तल्लीन पबैत छियन्हि। यद्यपि शिक्षा, समाज-सुधार और साहित्य-सेवा हुनक अधिकांश समय आ' कर्मक्षमताक ग्रास कैने छल, तथापि एहि सब काजक लेल सेहो हुनका पास अवसर छलन्हि। कखनहु ओ सेवा करबाक पात्रसबकें स्वयं खोजि लैत छलाह, आ' कखनहु सहायता माँगऽ बाला हुनका खोजि लैत छल। एहिमे महत्त्वपूर्ण बात ई थीक जे जतय हुनका एहि संधानक स्वाधीनता रहैत छलन्हि ततय निश्चित रूपसँ वंचित और दुरवस्था-ग्रस्त लोकेकें सहायताक लेल चुनैत छलाह।

चरम रूढ़िवादी वातावरणमे पालित भेलो सन्ताँ विद्यासागर बाह्योपचारी क्रियाकर्मसँ कंटकित पूजा-पद्धतिक प्रति कखनहु उत्साह प्रदर्शन नहि कैलन्हि। असलमे ओहि युगक लेल ई बहुत महत्त्वपूर्ण बात छल, कारण ओ ओहि कालमे जीबैत छलाह जखन धर्म सबसँ ज्वलन्त प्रश्न छल आ' महान् धार्मिक आन्दोलनक सूत्रपात भेल छल। एहि आन्दोलनक इतिहासक एक पर्यायमे दक्षिणेश्वरक संत रामकृष्ण परमहंस आकर्षणक केन्द्र बनि गेल छलाह। ओहि युगक अधिकांश महत्त्वपूर्ण व्यक्ति और धार्मिक नेता हुनका सँ भेंट करबाक लेल ओतऽ जाइत छलाह। मुदा विद्यासागरकें ओतऽ जैबाक इच्छा कहियो नहि भेलन्हि। प्रत्युत, हुनक ख्याति दय सुनि कए ओहि महान संतहिकें इच्छा भेलन्हि जे ओ हुनक घरमे जा कए

हुनकासँ भेंट करथि। ई कहब अनावश्यक बुझाइत अछि जे विद्यासागर अपन स्वभावसुलभ विनम्रता और शालीनताक संग हुनक स्वागत कैलन्हि। एहि पृष्ठभूमिमे ई निष्कर्ष तर्कहीन नहि हैत जे मानवतामूलक काजे हुनका लेल धर्मक रूप छलन्हि। ओ अंतःकरणसँ मानवतावादी छलाह।

ई अनिवार्य रूपसँ हमरा सबकेँ ओहि प्रश्न धरि लऽ जाइत अछि जे धर्मक विषयमे हुनक विचार की छलन्हि! एहि विषयमे अनुमान अनेक तरहक भेल छल, कारण हुनक आचरण सँ स्पष्टरूप सँ किछु पता नहि चलैत छलन्हि। एतबा स्पष्ट छल जे ओ 'धर्मभीरु' लोक नहि छलाह; प्रार्थना और धार्मिक अनुष्ठानक प्रति हुनका कोनो आकर्षण नहि छलन्हि। प्रत्युत हुनका हमसब ब्रह्म-समाजक गतिविधिमे रुचि लैत पबैत छियन्हि। असलमे लोक केँ हुनक आचरणसँ कोनो संकेत नहि प्राप्त होइत छल। पुनः, धर्मक विषय मे हुनक अपन मत-प्रकाशमे मौनता और ओहि समयमे देशक सशक्त धार्मिक आन्दोलन सबमे हुनक रुचि नहि लेब—एहि सबसँ किछु लोककेँ ई भ्रम भेलन्हि जे ओ नास्तिक छलाह।

उदाहरण-स्वरूप, विद्यासागरक एक कनिष्ठ समकालीन कृष्ण कमल भट्टाचार्यक निश्चित मतकेँ लऽ सकैत छी जतय ओ विद्यासागरकेँ नास्तिक कहने छलाह। विपिन विहारी गुप्तक संस्मरणमे एकर उल्लेख भेटैत अछि।[1] इयैह लेखक एहि पुस्तकमे देवेन्द्रनाथ ठाकुरक ज्येष्ठ पुत्र द्विजेन्द्र-नाथ ठाकुरोक मतकेँ दर्ज कैने छथि, जे हुनक समकालीन छलाह। लेखकक एहि प्रश्न पर जे विद्यासागर नास्तिक छलाह वा नहि, द्विजेन्द्रनाथक उत्तर छलन्हि—"हँ, एहि अर्थमे जे ओ संशयवादी छलाह।"[2]

मुदा नास्तिकता और संशयवादितामे जमीन-आसमानक फरक छल। एहिमे सँ पहिल मत ईश्वरक अस्तित्वकेँ संपूर्ण रूपसँ अस्वीकार करैत अछि, और दोसर एहन कोनोमे निष्कर्षमे नहि पहुँचि पैबाक नाम थिक, जाहि सँ ने ई कहल जा सकैछ जे ईश्वर छथि और ने ई दाबी कैल जा सकैत अछि जे ईश्वर नहि छथि। संशयवादीक तर्क मनुक्ख केँ कोनो

१. विपिन विहारी गुप्त, 'पुरातन प्रसंग' पहिल कड़ी, १५।
२. विपिन विहारी गुप्त, 'पुरातन प्रसंग,' पहिल कड़ी, १४

निश्चित निष्कर्षमे पहुचबामे सहायता नहि करैत अछि आ' ओकर फल-स्वरूप ओ निर्णय करैत अछि जे अन्तिम सत्यक सरूप अज्ञात और अज्ञेय अछि।

जे किछु अल्प सामग्री प्रत्यक्ष और अखंड्य स्रोतसँ उपलब्ध होइछ ताहिसँ एहि बातक कोनो प्रमाण नहि भेंटैत अछि जे विद्यासागर नास्तिक अथवा संशयवादी छलाह। हमसब ओहि सामग्रीक दिसि पहिले दृष्टिपात करब जकरा एहि विषयसँ सीधा संबंध अछि।

ताहि दिन पत्रक ऊपर ईश्वरक नाम लिखबाक रीति छलैक जे कि आइयो धरि धर्मप्राण बंगाली हिन्दू परिवारमे प्रचलित अछि। एकर प्रमाण भेंटैत अछि जे विद्यासागर अपन पत्रमे एकर प्रयोग करैत छलाह। ताहिमे ओ सर्वप्रथम हरि-नाम ग्रहण करैत छलाह। जँ ओ नास्तिक अथवा संशयवादी रहितथि त एहि रीतिक परित्याग करितथि। ओ एहन लोक नहि छलाह जे एहन कोनो काज शुरू करता जकरा ओ तन-मनसँ ग्रहण नहि कऽ सकैत छलाह।

जखन विद्यासागर संस्कृत कॉलेजक विद्यार्थी छलाह त मायर नामक एक गोट ब्रिटिश सज्जन संस्कृत साहित्य आ' संस्कृत कॉलेजक संचालनक काज मे रुचि लैत छलाह। १८३८ मे कॉलेजक परिदर्शन करैत काल ओ विभिन्न विषयमे संस्कृतमे सर्वश्रेष्ठ पद्य-रचनाक लेल कैकटा पुरस्कार देबाक घोषणा कैने छलाह। एहिमे सँ एकटा विषय छल भूगोल और नक्षत्र-विज्ञान, जाहिमे एकहि संग भारतीय और पाश्चात्य वैज्ञानिक-लौकिक विचार देबाक छल। विद्यासागर एहि प्रतियोगितामे अंशग्रहण कैल और प्रथम पुरस्कार प्राप्त कैलन्हि। एहि अवसर पर हुनका द्वारा लिखल गेल पद्यक नाम छल "भूगोल- खगोल-वर्णनम्"। हुनक मृत्युक बाद १८९२ मे हुनक पुत्र नारायण चन्द्र विद्यारत्नक द्वारा एहि रचनाक प्रकाशन कैल गैल छलन्हि।

एहि रचनाक पहिले पद्य-पंक्तिमे वर्तमान विषयमे निर्णायक संकेत भेंटैछ। एकर मैथिली अनुवाद एहि प्रकारक हैत:

ई अद्भुत ब्रह्माण्ड जनिक क्रीड़ा कन्दुक सम
तहि असीम महिमामय प्रभुवरकेँ प्रणाम मम ॥[1]

---

१ यत्-क्रीड़ाभाण्डवत् भाति ब्रह्माण्डमिदमद्भुतम्।
असीममहिमानं तं प्रणमामि महेश्वरम्॥

एहि विषयक पहिनहि उल्लेख कैल गेल अछि जे विद्यासागर प्राइमरी स्तरक विद्यार्थीसभक शिक्षाक लेल 'वोधोदय' नामक एकटा ग्रन्थक रचना कैने छलाह। ई एहन योजना सँ वनाओल गेल छल जे वाल पाठककेँ भौतिक तत्त्व, प्राकृतिक पदार्थ, वृक्ष, पशु-पक्षी, मनुक्ख और अंकगणित पर्यन्तक नीक परिचय कराओल जा सकय। एकरा संपूर्ण रूपसँ व्यापक वनैवाक लेल एतय ओ ईश्वर-विषयक एकटा पद्य सेहो जोड़ि देलथिन्ह जकर मैथिली अनुवाद एतय प्रस्तुत कैल जा सकैत अछि :

"ईश्वर चेतन आ' जड़ वस्तु, गाछ-विरीछ और अन्यान्य सब तरहक वस्तुक सृष्टि कैलन्हि, तैं हुनका स्रष्टा कहल जाइत छन्हि। हुनक कोनो मूर्त्त रूप नहि छन्हि, और ओ विज्ञानस्वरूप छथि। हुनका क्यो देखि नहि सकैत अछि; मुदा ओ सर्वत्र सर्वदा उपस्थित छथि। हमसब जे किछु करैत छी ओ तकरा देखि सकैत छथि; हमसव जे किछु सोचैत छी ओ से जानि सकैत छथि ओ सव जीवकेँ भोजन प्रदान करैत छथि और हुनक रक्षा करैत छथि।"

एतवा प्रमाणित करवाक लेल ई यथेष्ट सामग्री थीक जे विद्यासागर ने नास्तिक छलाह आ' ने संशयवादी। जेँ कि ओ स्पष्टतः ईश्वरक अस्तित्त्व स्वीकार करैत छथि, तैं ओ नास्तिक नहि भऽ सकैत छथि। हुनका ईश्वरक स्वरूपक विषयमे स्पष्ट धारणा छलन्हि और एतय उद्धृत दुनू उद्धरण मे कतहु ओ ईश्वरकेँ अज्ञेय नहि कहने छथि। तैं ओ संशयवादी सहो नहि भऽ सकैत छलाह।

हुनक अंकित ईश्वरक चित्रसँ ई देखल जा सकैत अछि जे ओ ओहि आस्तिकतावादी विचारसँ सहमत नहि छलाह जाहिमे ई कहल जाइत अछि जे ईश्वर पितृसमान थिकाह जे एहि दुनियाक सृजन कैने छथि किन्तु स्वयं अपने एहि दुनियासँ पृथक् छथि। ओ उल्लिखित उद्धरणसँ ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे ओ ईश्वरकेँ प्रकृतिमे कर्मरत एकटा अन्तर्निहित शक्तिक रूपमे कल्पना कयने छलाह। ई विचार-धारा एही देशक प्राचीन उपनिषदक पाठमे भेंटैवाला सर्वेश्वरवादसँ साम्य रखैत अछि। हुनक मानवतावादक आधार वैह सामान्य स्रोत थीक जाहि लेल हुनक पूर्वसूरिलोकनि ओहि युग मे विद्यार्थी लोकनिकेँ तीनटा अपरिहार्य गुणक अभ्यास करवाक उपदेश दैत छलाह– दम, दान और दया, अथवा तीनटा 'द' केर शिक्षा, जेना कि

वृहदारण्यक उपनिषद मे विवृत भेल अछि।¹ ई सव ब्रह्माण्डक विषयमे सर्वेश्वरवादी विचारसँ उद्भूत भावना थिक जाहि मे पृथ्वीक सब मनुक्खमे एकटा घनिष्ठ संबंध मानल जाइत अछि जे साधारण पारिवारिक संबंधसँ वेसी गंभीर होइछ।¹

दयालु हृदयक अधिकारी हैवाक कारणेँ विद्यासागर कष्टमे पड़ल जाहि-कोनहुँ व्यक्तिक सहायताक लेल प्रस्तुत रहैत छलाह। ई सहायता आर्थिके नहि, अपितु अन्यान्य रूपोमे आवि सकैत छल। एकर फलस्वरूप हुनका हमसव प्रायः रोग वा सामान्य आर्थिक दुरवस्था किंवा, जेना कि प्रायः होइत छल, अर्थकष्टमे पड़ल विभिन्न व्यक्तिकेँ पाइ पठवैत पवैत छियन्हि। एहि सत्कार्यमे हुनक अवकाशक समय और शक्तिए नहि, अपितु ओहि कालक भारतीय स्तरक तुलनामे, प्रचुर धनराशि सेहो खर्च होइत छल। अनुमान लगाओल जाइत अछि जे हुनक प्रकाशित पुस्तकक रॉयल्टीक रूपमे हुनका दूसँ तीन हजार टाका प्रति मास भेटैत छलन्हि। एकर सिंहभाग दान-ध्यानेमे खर्च होइत छल। एतय हम सव किछु ठोस उदाहरण दऽ सकैत छी जे ओ आन-आन लोकक कतेक तरहसँ सहायता करैत छलाह जकरा लेल हुनका संपूर्ण रूपसँ अपनहि आय पर निर्भर करै पड़ैत छलन्हि।

हुनक जीवनीकार चण्डीचरण बनर्जी² द्वारा वर्णित एकटा आख्यान ई छल जे एक वेरि ओ विद्यासागरकेँ अत्यन्त भग्नस्वास्थ्य पौलन्हि। तैँ ओ हुनका ई सुझाव देलथिन्ह जे ओ कोनो स्वास्थ्य-वर्द्धक स्थान पर किछु सप्ताह रहि कए पुनः स्वास्थ्य-लाभ करथि। मुदा विद्यासागर अपन असमर्थता प्रकट करैत वजलाह जे से कैने जाहि खगल लोकसभके ओ आर्थिक सहायता करैत छथि, हुनका सवकेँ टाका नहि पहुँचतन्हि। स्वभावतः प्रश्न उठल जे कोनो मित्रकेँ ई काज कियैक नहि सौंपल जाय। ताहि पर ओ अत्यन्त पीड़ाकर उत्तर सुनलनि जे पहिनहि एक वेरि ओ से प्रयास कैने छलाह, मुदा जनिका आर्थिक सहायताक कार्यभार देल गेल छलन्हि ओ से पाइ आत्मसात् कऽ गेलाह आ' पाइ ओहि व्यक्ति सवकेँ नहि पहुँचलन्हि। एहन तिक्त अनुभवक बाद विद्यासागरकेँ ई काज अपनहि सम्पन्न करव छोड़ि कए आर कोनो उपाय नहि रहलन्हि। एही

१. ॐ तदेतदेवैषा दैवी वाग् वदति स्तनयित्नु दं द द इति।
तदेतत्त्रयमभ्यसेद् दमं दानं दयां चेति॥

२. चण्डीचरण बनर्जी, 'विद्यासागर', अध्याय १०।

अवसरपर ई प्रकट भेल जे लोककें प्रतिमास पठाओल जायवाला राशि ८०० टाकाओसँ वेसी छल। एहिमे समय-समयपर व्यक्तिविशेष वा स्कूल वा अस्पताल आदि स्थायी संस्थान सबकें देल जायवाला दान-राशिकें जोड़ल नहि गेल अछि।

व्यक्ति तथा संस्था सबकें सहायता देवाक हुनक प्रतिवद्धता कतेक छलन्हि से हुनक अन्तिम इच्छापत्र और वसीयतनामासँ पता चलैत अछि। वाकी सवटाकें छोड़ियो कए, एहिमे संबन्धी सबकें लऽ कए ४५ व्यक्तिक लेल मासिक वृत्तिक व्यवस्था कैल गेल छल, जकरा जोड़लासँ ५६१ टाका होइत अछि। एकर अतिरिक्त, आर छओ व्यक्तिक लेल मासिक सहायताक व्यवस्था कैल गेल छल जकर परिमाण छल १०५ टाका। हुनक गाममे अपना द्वारा स्थापित स्कूलक लेल प्रतिमास १०० टाका, ओ ओतहि अपन द्वारा स्थापित दातव्य चिकित्सालयक हेतु प्रति मास ५० टाका अनुदानक व्यवस्था सेहो कैल गेल छल।

१८६७मे दीर्घ समय धरि रौदीक कारणें विहार और वंगालक विस्तृत अंशमे अकाल पड़ि गेल छल। विद्यासागरक अपन गाम तथा जिलो गम्भीर रूपें एहि लपेटमे आवि गेल छलन्हि। गामसँ सहायताक लेल याचना भेला पर ओ तत्काल तकर उत्तरमे अपने संचयमेसँ व्यापक त्राण-व्यवस्थाक आयोजन कैने छलाह। ओ दुर्भिक्ष-पीड़ित परिवारक वीच सिद्धान्न वाँटवाक लेल लंगर खोलवा देलथिन्ह जे कि चारि मास धरि चालू रहल। कहल जाइत अछि जे एहि लंगरखानाक वनल भोजनसँ हजारो लोकक जान वचल छल।[1]

विद्यासागरक सेवाक दिसि सरकारक ध्यान आकृष्ट भेल छल और वर्धमान मंडलक कमिशनर सी० टी० मोट्रेसरक हस्ताक्षरसँ हुनका लेल सरकारक गम्भीर कृतज्ञता एकटा पत्र द्वारा पठाओल गेल छल जाहिमे ई कहल गेल छल: "वंगाल सरकारक सचिवक एहि मासक २० तारीखक (२० मार्च, १८६७क) निर्देशक अनुसार हमरा ई कहल गेल अछि जे हुगली जिलाक अन्नाभावसँ पीड़ित गरीव जनताक दु:खमोचनक हेतु उदार सहायताक लेल अहाँक प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करी।"

---

१. चण्डीचरण वनर्जी, विद्यासागर', अध्याय ११।

लगैत अछि जे मानवीय पीड़ा केँ समाप्त करबाक आन्तरिक इच्छा विद्यासागर केँ होमिओपैथीक डाक्टरी प्रशिक्षण प्राप्त करबाक लेल प्रेरित कैल। एहि चिकित्सा पद्धतिक कैकटा गुणक दिसि हुनक ध्यान गेलन्हि और हुनका ई बड़ रोचक बुझि पड़लन्हि। एहिमे एकटा बात ई छल जे एकरा सिखबाक लेल नियमित पाठ्यक्रमक आवश्यकता नहि अछि। ई इलाजक सस्त उपाय अछि आ' तेँ समाज-सेवाक रूपमे कोनो बड़ आर्थिक भारमे बिनु पड़ने एहन डाक्टरी कैल जा सकैत अछि। तेसर बात ई छल जे एहि दवाइक खोराक एतेक कम होइत अछि जे कोनो भ्रान्ति भैलो पर एहिसँ नोकसान नहि पहुँचि सकैत अछि।

एहि तरहेँ एकरा गरीब जनताक रोग बेमारीसँ लड़बाक एक नीक हथियार जानि कए ओ एहि क्षेत्रक विशेष ज्ञाता राजेन्द्रनाथ दत्तसँ प्रक्षशिण प्राप्त करबाक निश्चय कैलन्हि। तकर बाद हमसब हुनका अत्यन्त उत्साहक संग अपन एहि सद्यः प्राप्त ज्ञानक व्यवहार विशेषतया गरीब तथा मित्र, संबंधी एवं परिवारक सदस्य लोकनिओ पर करैत पबैत छियन्हि।

कोनहु क्षेत्रमे हुनक काज करबाक पद्धति कतेक योजना-बद्ध होइत छलन्हि तकर पता एकटा रजिस्टरसँ चलैत अछि जे हुनका द्वारा छोड़ल असंख्य दस्तावेजमे सँ एक छल।[1] ई एकटा अत्यन्त सुन्दर सजिल्द कॉपी अछि जाहिमे ओ होमिओपैथिक पद्धतिसँ उपचार कैल गेल लोकसभक विस्तारित विवरण लिपिबद्ध करैत छलाह। प्रत्येक रोगीक लेल पृथक् पृथक् पृष्ठ छल। अंग्रेजीमे हुनक अपन हाथसँ भरल प्रत्येक पृष्ठमे रोगीक नाम, रोगक लक्षण, रोगनिर्णय और देल जाय बाला दबाइक विवरण लिखल अछि। एहि उपचारक परिणामो ओतहि दर्ज कैल गेल अछि। मजेदार बात ई अछि जे एहि पंजीकृत तालिकामे हुनक पुत्रवधू बामासुन्दरी देविओक नाम रोगिणीक रूपमे अछि जनिक उपचार हुनक कुशल ससुर द्वारा भेल छलन्हि।

जाहि तरहेँ ओ माइकेल मधुसूदन दत्त द्वारा आर्थिक सहायताक हेतु अपीलक प्रतिक्रिया देखौलन्हि से हुनक महान व्यक्तित्वक परिचय दैछ। मधुसूदन दत्त एक नीक समृद्ध परिवारक छलाह। प्रारंभिक जीवन मे पश्चिमी

---

१. ई पुस्तक रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालयसँ संबद्ध संग्रहालयमे संरक्षित अछि।

शिक्षा-गृहण करबाक बाद ओ ईसाइ धर्म-गृहण कयलन्हि । अंग्रेजी भाषा पर हुनक दक्षता असाधारण छलन्हि और ओ अंग्रेजीमे काव्य-रचना करै लगलाह। हमसब जनैत छी जे बादमे ओ बंगलामे साहित्य रचना करै लगलाह और ओहि शताब्दीक सर्वाग्रगण्य कविक रूपमे अपनाकें प्रतिष्ठित कैने छलाह। मुदा प्रतिभाशाली होइतहुँ ओ मितव्ययी व्यक्ति नहि छलाह, जकरा लेल ओ गभीर संकट मे पड़ि जाइत छलाह। एहने एकटा अवसर पर ओ सहायता माँगने छलाह।

तखन ओ बैरिस्टर बनबाक लेल यूनाइटेड किंगडम मे गेल छलाह। अपन दुर्व्यसनक आदतक कारणें ओ दुइ वर्षक बाद वार्साई मे रहैत आर्थिक संकट मे पड़ि गेल छलाह। दिवालिया भऽ गेलाक कारणें ओतुका स्थानीय प्रशासन हुनका सिविल जेल मे बंद कऽ देबाक धमकी देने छल। ई ओएह अवसर छल जखन ओ विद्यासागर कें सहायताक लेल लिखने छलाह, जाहि सँ ओ जनता मे बदनामी सँ बचि सकथि। हुनका लेल एहि सँ नीक चुनाव नहि भऽ सकैत छलन्हि, कारण विद्यासागर सन दयालु-हृदय व्यक्ति एहि सहायताक लेल निश्चित रूप सँ तैयार भऽ जैताह। बेस मोट रकमक प्रार्थना करैत ओ लिखने छलाह : "हम फ्रांसक जेल मे जा रहल छी एवं हमर पत्नी और धीया-पुतासबकें कोनो दातव्य आश्रममे स्थान लेमै पड़तन्हि कारण भारत मे हमरा पर चारि हजार टाका ऋण अछि।

'अहीं टा एहन मित्र छी जे हमरा एहि दुःसह स्थितिसँ मुक्त कऽ सकैत छी और ताहि लेल अहाँकें अपन ओहि महान शक्तिक प्रयोग करै पड़त जे कि अहाँक प्रतिभा आ' हृदयक पौरुषक संगिनी अछि। एकहु दिन नष्ट नहि होअय।"

ई कहब अनावश्यक थीक जे एहि करुण पत्र पर तुरत कारवाइ भेल, यद्यपि ई काज कठिन एहि लेल छल जे विद्यासागरक पास तखन पाइ नहि छलन्हि। मुदा अपन स्वभावज उत्साहक संग ओ उपाय कैलन्हि और उधार कऽ कए १५०० टाका एकत्रित कैलन्हि और से वार्साई में पठा देलन्हि।

मधुसूदनकें बड़ बेरपर ई पाइ भेटलनि। २८ अगस्त, १८६४कें ई पाइ हुनका पहुँचलन्हि जखन हुनका लग सब मिला कए मात्र तीन फ्रां रहि गेल छलन्हि। ई सब बात ओ विद्यासागर कें एहि धन-राशिक प्राप्ति-स्वीकार

करैत एकटा पत्रमे लिखने छलाह। एही पत्रमे विद्यासागरक प्रति ओ अपन श्रद्धांजलि अर्पित कैने छलाह, जे अमर भऽ गेल कियैक त ई शब्दसब विपत्ति मे पड़ल एकटा मनुक्खक हृदय सँ बहिरायल छल और सबटा सत्य छल। ओ लिखने छलाह :

"हम कहलियन्हि¹ 'डाक आइ अवश्य आओत और हमरा निश्चित रूपें खबरि भेंटत, कारण हम जाहि मनुक्ख सँ सहायता मांगने छियन्हि, हुनका मे एक्कहि संग प्राचीन ऋषिक बुद्धि आ' विवेक छनि, एकटा अंग्रेजक उत्साह छनि और एकटा बंगाली जननीक हृदयं छन्हि।' हमर बात सत्य प्रमाणित भेल; एक घण्टाक बाद हमरा अहाँक लिखल पत्र आ' अहाँक पठाओल १५०० टाका भेंटल। हम कोना अहाँक प्रति आभार व्यक्त करी, हमर उदार, समुज्ज्वल और महान मित्र ? अहाँ हमर उद्धार कैलहुँ।"

बाद मे सिविल जेलक धमकी सँ हुनका बचैबाक लेल विद्यासागर के और राशि पठाबऽ पड़ल छलन्हि, कारण हमसब देखैत छी जे एही वर्षक १८ दिसंबरक एकटा पत्र मे माइकेल २.४६० फ्रां केर प्राप्ति-स्वीकर कैने छलाह।

अंततोगत्वा माइकेल बैरिस्टरीक परीक्षा मे उत्तीर्ण भऽ कए घुरि ऐलाह, मुदा ओ कहियो अपन काज नीक जकाँ सम्हारि नहि पओलन्हि। एहिमे आश्चर्यक कोनो बात नहि जे ओ विद्यासागरकें उधारक राशि कहियो घुरा नहि सकलाह। जें कि विद्यासागरो ई टाका कर्ज कए एकत्रित कैने छलाह, तैं हुनका ई कर्ज अपनेहि आयक स्रोतसँ चुकबै पड़लन्हि। केओ ई तँ सोचि सकैत छी जे कोनो उदार व्यक्ति अपन मित्रकें दुरवस्थामे पड़ल देखि कए अपना संचयसँ सहायता करैत अछि। मुदा एहन त कदाचिते कहियो-काखनहु होइछ जे केयो अपन मित्रकें संकट - मुक्त करबाक लेल प्रचुर धन-राशि उधार लैत अछि। एहि मे कोनो संदेह नहि अछि जे विद्यासागरक एहने सुकृतिक लेल माइकेल एतेक अधिक प्रशंसा कैने छलाह।

कलकत्तासँ लगभग १५० मील दूर हावड़ा-पटनाक मुख्य रेल-मार्ग पर आदिवासी संथालसभक वासभूमिक हृदय कार्माटार नामक एकटा स्थान पर

१. एतय हुनक पत्नीक दिसि संकेत कैल गेल छन्हि। एहि प्रसंगमे माइकेल मधुसूदन दत्तक विद्यासागरकें लिखल २ सितंबर, १८६४ तारीखक पत्र द्रष्टव्य।

विद्यासागर एकटा बंगला बनवौने छलाह। ओसब अत्यन्त साधारण और हृदय सँ सरल अवोध लोक होइत अछि, और चलि आयल प्रथाक अनुसार परती भूमिक छोट टुकड़ा पर प्रचंड परिश्रम द्वारा कष्टपूर्ण जीवन-निर्वाह करैत अछि। एहि जगहक शुष्क तथा आनन्दप्रद जलवायु विद्यासागर केँ बड़ पसिन पड़लन्हि। कलकत्ताक कठिन आ' तनावपूर्ण जीवनसँ क्षणिक विरामक लेल ओ एतऽ चलि अबैत छलाह किछु दिन रहि कए स्वास्थ्य-उद्धार तथा स्नायु-तंत्रकेँ पुनरुज्जीवित करबाक लेल।

गामक ई मकान तेहन ठाम छल जे हुनका एहि सरल-स्वभाव लोकसभक निकट संपर्कमे ऐबाक अवसर भेटलन्हि जाहिसँ असुविधा-ग्रस्त श्रेणीक लोकसभक सेवा करबाक एक रास्ता खुजि गेल। ओ निश्चिन्त हृदयसँ एहि लोकसभक सँग मिलैत-जुलैत छलाह, धन-राशि आ' खाद्य दऽ कए सहायता करैत छलाह और अस्वस्थ लोकसभक चिकित्सा करैत छलाह। एहि मे कोनो आश्चर्यक बात नहि जे शीघ्रे ओ ओकरासभक प्रिय मित्र बनि गेलाह, जनिक प्रेमक ओसब कदर करैत छल और सेवाक सोच्चार प्रशंसा करैत छल।

संथालसभक संग विद्यासागरक जीवनक चित्रक विवरण बंगलाक विशिष्ट सुपुत्र हरप्रसाद शास्त्रीक लेखन मे पाओल जाइत अछि।[1] हुनका लखनउ केर कैनिंग कॉलेज मे अस्थायी अध्यापकक पद देल गेल रहलन्हि। अपन एहि नवीन कर्मस्थानक पथ मे हरप्रसाद शास्त्री यात्रा-भंग करैत विद्यासागरक संग कार्माटारक हुनक बंगला मे एक दिन रहलाह। अधिक स्थान नहि लागय तेँ हुनक ओतुका अनुभवक सारांशे एतय दऽ रहल छी। ई एहि असाधारण व्यक्तिक एकटा बहुते मूल्यवान विवरण थीक।

पहुँचलाक बाद भोरे बंगलाक निरीक्षण करितहिँ हरप्रसाद शास्त्री केँ एहि घरसभक एकटा अद्भुत विशिष्टताक दिस ध्यान गेलन्हि—ओ देखलन्हि जे एकटा घरक चारू दिसि स्थायी रूप सँ अलमारी लगाओल अछि एवं सबटाक तखहा खालिए अछि। ओ बुझि नहि रहल छलाह जे एना कियैक अछि, मुदा शीघ्रे हुनका कारणक पता चललन्हि। जखन दिवालोक आर

1. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या सम्पादित 'वर्क्स ऑफ हरप्रसाद शास्त्री,' दोसर खंड, पृष्ठ ७।

पसरैल त संथालसब पृथक-पृथक झुण्ड मे आबि कए अपन अपन खेतमे उपजल मकइ विद्यासागरक ओतऽ बेचऽ चाहल। ओ ओकरहि सभक बतायल दाम पर से सबटा कीनि कए एहि कमराक अलमारीमे राखि देलथिन्ह। तखन हुनका बुझबामे ऐलन्हि जे एहि अलमारी सभक सहायता सँ संथाल समाजक अन्न जमा करब.क काज लेल जाइत छल। मुदा दोसर एकटा प्रश्न अनुत्तरिते रहि गेल : विद्यासागर एतेक रास अनाज लऽ कए की करताह ? कियैक त एसगर त ओ एतेक अन्नक भोग नहि कऽ सकैत छलाह।

हरप्रसाद शास्त्री सोचलथिन्ह जे प्रतीक्षा कऽ कए देखल जाय जे की होइत अछि। कनेके काल मे हुनका प्रतीक्षाक फल भेंटलन्हि। दुपहर होइतहि संथालक आर एकटा दल आयल। देखनहि सँ पता चलैत छल जे ओकरा सभक हाल पहिलुका दलसब सँ बदतर छल। ओकरा सभक पास बिक्रीक लेल किछु नहि छल; ओसब खाली हाथ आयल और भोजन हेतु भीख मङलकन्हि। विद्यासागर भोरुका कीनल मकइ बाहर आनि कए ओकरा सब मे बाँटै लगलाह। संथाल-सब सूखल पात और काठ संग्रह कऽ कए आगि पजारलक आ' ओही आँच मे मकइ केँ ओराहि कऽ खाय-पीबि कए भूख मेटओलक। तकर बाद ओसब चलि गेल। एहि तरहेँ दुनू घटनाक संबंधक पता चलल और दोसरो प्रश्नक संतोषजनक उत्तर भेंटि गेल।

एकर कनेक काल बाद शास्त्री गृहपति केँ गायब पौलन्हि आ' संपूर्ण बंगला खोजलाक बादो हुनकर पता नहि चललन्हि। स्पष्ट छल जे विद्यासागर ककरहु खबरि बिनु देनहि चुपचाप बाहर चलि गेल छलाह। जखन शास्त्री सम्मुखस्थ उन्मुक्त बाध दिसि देखैत ओ गृहपतिक टोह पयबाक ध्यानमे छलाह त विद्यासागर खेतक आड़ि धयने घर घुरैत देखि पड़लथिन्ह। हुनक हाथमे एकटा छोट सनक डिब्बा छलन्हि। मकानमे घुरैक बाद बिनु बतौनहि सहसा चलि जैबाक लेल शास्त्री सँ क्षमा-याचना करैत बतौलन्हि जे हुनका एकटा संथाल माता बजा पठौने छलि जकर संतानक नाकसँ दहो बहो खून बहि रहल छल आ' तेँ हुनका जल्दीसँ ओतऽ जा कए होमिओपैथिक चिकित्साक द्वारा एहि रक्त-प्रवाहकेँ बन्द करै पड़लन्हि। आर पुछलाक बाद हुनका पता चललन्हि जे ओहि रोगीक घर गृहपतिक एहि बँगला सँ डेढ़ मील दूर अछि। ई १८७८ क बात थिक जखन कि विद्यासागर ५८ बर्क अवस्थाक भ' गेल छलाह।

७. मूल्यांकन

एतवा दूर धरि, विद्यासागरक चरित्र-चित्रणक प्रयास जीवनक विभिन्न क्षेत्रमे हुनक अपने क्रियाकलापक आधार पर करैत रहलहुँ। एहिसँ हमरा सबकेँ कोनो व्यक्तिक विषयमे मात्र दूरसँ आ' ऊपर-ऊपरसँ पता चलैत अछि और तेँ एकरा पर्याप्त नहि कहि सकैत छी। यदि हमसब विद्यासागरक मनोजगतमे प्रवेश कऽ कए हुनक समस्त गतिविधिक नियंत्रण करै वाला कर्म-स्रोत केँ जानि सकितहुँ, तऽ ओ हमरासब केँ एहि व्यक्तिक भितरका मनुक्खक सठिक छवि दैत और वर्ड्सवर्थक शब्दमे यन्त्रक नाड़ी-स्पर्श करा सकैत।

एहि तरहक सुविधा जेँ कि हमरा सब केँ नहि भेटै वाला अछि, तेँ एकर वाद सबसँ नीक इयैह बात हैत जे हुनक चरित्रक निर्माण करै वाला गुणसभक एकटा मूल्यांकन प्रस्तुत करी। इहो काज करब कठिन अछि, कारण विद्यासागर साधारण मनुक्ख नहि छलाह। अनेक गुणसँ सम्पन्न और जीवनक विभिन्न पथ पर अपन उपस्थितिक अनुभव करावैत अपूर्व एकाकिताक संग चलबाक अभ्यासी विद्यासागर केँ महत्त्वपूर्ण एवं साधारण दुनू तरहक लोकसभक विनम्र श्रद्धांजलि भेटल अछि। हुनक चरित्रक जटिलताक कारणेँ ई काज कठिन भऽ जाइत अछि और हमसब अचिरहि देखब जे कतेक प्रमुख व्यक्ति हुनक चरित्रक सब पक्ष केँ समटैत एकटा संपूर्ण चित्र प्रस्तुत करबामे असफल भेलाह अछि।

हमसब अपन काज हुनक समकालीन व्यक्तिसभक मूल्यांकनसँ शुरू कऽ सकैत छी। हुनक एक मित्र आ' हुनका प्रति अनेक वैयक्तिक कारणेँ कृतज्ञ रहनिहार एक व्यक्तिक श्रद्धांजलिक विश्लेषणसँ ई काज शुरू करब उपयुक्त हैत। हमसब पहिनहि देखि चुकल छी जे कोन तरहक स्थितिमे माइकेल मधुसूदन दत्त ओहि स्मरणीय पत्रक रचना कैने छलाह जतय हुनका "प्राचीन ऋषिक जकाँ प्रतिभा आ' ज्ञान, अंग्रेज जकाँ उत्साह तथा बंगाली माँ-सनक हृदय" बाला कहल गेल छन्हि। एतय विद्यासागरक चरित्रक चारिटा मुख्य गुणक उल्लेख कैल गेल अछि, यथा. ओ प्रतिभाशाली, ज्ञानी, परिश्रमी और

दयालु व्यक्ति छलाह। ई विश्लेषण कतेक यथायथ छल तकर परिचय एहि पुस्तकक पहिलुका अध्याय सबटामे वर्णित हुनक गतिविधिएसँ भेटैत अछि। एहि सबटा चारित्रिक गुण केँ आर प्रकाशित करबाक लेल किछु अतिरिक्त तथ्य एतय जोड़ल जा सकैत अछि।

हुनक बुद्धि कतेक प्रखर छलन्हि तकर प्रमाण त हुनक भास्वर शैक्षिक जीवनहिमेँ भेटैत अछि जाहि लेल संस्कृत कॉलेजक अधिकारी वर्ग हुनका 'विद्यासागर'क उपाधि देने छलथिन्ह। एहि विषयमें विस्तारमे जैबाक प्रयोजन नहि अछि। मुदा जे कि कहल जाइत अछि जे भोरेसँ दिनुका पता लगैत अछि, हम सब हुनक शैशवक एकटा घटनाक उल्लेख कऽ सकैत छी जाहिसँ पता चलि गेल छल जे एकटा प्राइमरी पास बालकक अवस्थेमे ओ कतेक प्रतिश्रुतिपूर्ण छलाह। १८२८मे जखन ओ मात्र आठ वर्षक छलाह, ग्राम्य विद्यालयक सबटा पाठ ओ पूरा कऽ लेने छलाह। तँ हुनक पिता हुनका कलकत्ता लऽ जैबाक निर्णय कैलथिन्ह। ईश्वरचन्द्र अपन पितृदेवक संग गामसँ कलकत्ताक दिसि रवाना भेलाह। ई यात्रा पैदले तय करबाक छल आ' पूर्वाभिमुख पथक बहुत दूर धरि मीलक पाथर गाड़ल छल जाहिपर अंग्रेजी अंकमे कलकत्तासँ दूरी लिखल छल। एहि तरुण बालकक तेज दृष्टिसँ पहिलो पाथर नहि बचि सकल। एकर अभिप्रायसँ अनवगत रहलाक कारणेँ ओ एकरा मसाला पीसैक पाथर सिलौट बुझि लेलन्हि। तेँ ओ पितासँ पुछलथिन्ह जे ई पाथर एतय बाटक कातमे कियैक गाड़ि देल गेल अछि?

पिता हुनका एकर स्वरूप आ' अभिप्राय समझा देलन्हि। एहि ज्ञानसँ हुनक मनमे एकटा अद्भुत प्रतिक्रिया भेलन्हि। हुनका बंगला अंकसबक आकृति सिखले छलन्हि। तेँ हुनक मनमे ई भावना ऐलन्हि जे कलकत्ता जाइत-जाइत एहि मीलक पाथर सभक सहायतासँ अंग्रेजीक अंकक ज्ञान सेहो हुनका भऽ सकैत छन्हि। एहि उद्देश्यसँ ओ पितासँ एकटा अतिरिक्त जानकारी लेलन्हि जे अमुक मील-पाथर पर १९ लिखल अछि।

तकर बाद पिताकेँ प्रत्येक अंकक परिचय देबाक लेल बिनु कहनहि ओ सहजहिं अनुमान-भित्तिक सिद्धान्तक सहायतासँ अंग्रेजीक नवो अंकक आकृतिक ज्ञान प्राप्त कऽ लेलन्हि। जा ओ सब दसम मील धरि पहुँचलाह ता धरि ओ सबटा अंग्रेजी अंक जानि गेल छलाह आ' ओ पितासँ ई बात कहलथिन्ह। पिताकेँ एहि बातक विश्वास नहि भेलन्हि, मुदा परीक्षा लेलाक

बाद हुनका ई जानि कए अत्यन्त प्रसन्नता भेलन्हि जे सत्ये हुनक पुत्रकेँ अंक ज्ञान भऽ गेल छलन्हि ।

हुनक बुद्धिमत्ताक एकटा आदर्श उदाहरण अछि हुनक ओ परामर्श जे कन्या-शिक्षाक लेल हिन्दू महिलाकेँ प्रशिक्षित करबाक मेरी कार्पेण्टरक प्रस्तावकेँ कटैत देने छलाह । एहि विषयमे पहिलुका एकटा अध्यायमे विस्तृत विवेचन कैल जा चुकल अछि, तेँ एतय संक्षिप्त सदर्भसँ काज चलि जायत । मेरी कार्पेण्टरक ई विचार अत्यंत संगत छलन्हि जे कन्या-विद्यालयसभमे प्रशिक्षित शिक्षिकाक प्रयोजन छल । विद्यासागर एहि प्रस्तावकेँ संगत जनितो एहि आधार पर एकर विरोध कैलन्हि जे हिन्दू समाज तखनहु धरि कन्या-सभक लेल एहन पेशावर शिक्षा-व्यवस्थाक लेल प्रस्तुत नहि छल आ' तेँ ओ एकर विरोध करत । मुदा सरकार हुनक एहि प्राज्ञ विचारकेँ नहि मानैत हुनक परामर्शक विरुद्ध शिक्षिका-प्रशिक्षण-विद्यालयक स्थापना कैलक । हुनक परामर्शक यथार्थताक प्रमाण तिनिए वर्षमे भेटि गेलन्हि कारण प्रशिक्षण लेनिहारि महिलाक अभावमे विद्यालय वन्द भऽ गेल ।

विद्यासागरकेँ अत्यंत परिश्रमी कहब पूर्ण संगत अछि । हुनक अनेकानेक व्यस्त कार्यकलापसँ भरल सम्पूर्ण जीवने एकर प्रमाण थीक । हुनक क्रिया-कलापक विविधता तथा विशालताक विषयमे जानबाक लेल संस्कृत कॉलेज, कलकत्ताक अध्यक्षक रूपमे १८५१सँ १८५८ धरिक संक्षिप्त कालमे हुनक गतिविधिक दिसि दृष्टिपात कऽ सकैत छी ।

संस्कृत कॉलेजक प्रशासन कार्यक संगहि, ओ तखन दक्षिण बंगालक चारि टा जिलाक विद्यालयसमूहक परिदर्शक सेहो छलाह । एहि लेल हुनका निरन्तर निरीक्षण और भ्रमणमे व्यस्त रहै पड़ैत छलन्हि । हुनक रचनात्मक प्रवृत्ति हुनका कैकटा प्रशिक्षण-विद्यालय, आदर्श विद्यालय तथा कन्या-विद्यालय स्थापित करबाक लेल प्रेरित कैलकन्हि । प्रतिष्ठित संस्था सभक तुलनामे एहि तरहक संस्थानक दिसि प्रारम्भिक अवस्थामे अधिक रक्षणा-वेक्षण तथा ध्यान देबाक प्रयोजन होइछ । एहि संगठन-कालमे विद्यासागर एकरा सभक दिसि बिना कोनो प्रतिवाद कैनहि समुचित ध्यान देलन्हि । एकहि संग कलकत्तामे बेथूनक नामसँ सद्य:-प्रतिष्ठित कन्या-विद्यालयक ओ सचिव छलाह ।

एहि समयमे ओ विभिन्न स्तरक छात्र-सभक शैक्षिक जीवनमे अपेक्षित पाठ्य-पुस्तकक अनवच्छिन्न आपूर्तिक हेतु संस्कृत और बंगलामे पाठ्य-पुस्तक रचनाक कार्यमे जुटि गेलाह। एहि समयमे ओ संस्कृत व्याकरणक दू-दू टा पाठ प्रस्तुत कैलन्हि---एकटा प्रारंभिक विद्यार्थीसभक लेल आ' दोसर उच्चतर अध्ययनक हेतु। बंगला पाठ्य-पुस्तकक जे शृंखला वर्णमाला-पुस्तकसँ शुरू कए 'बोधोदय', 'कथामाला' तथा अन्यान्य पुस्तकक संग 'शकुन्तला'मे आबि कए शेष भेल, से सबटा एहि पर्यायमे लिखल गेल।

एहि अवधिमे, हुनक गतिविधिक अन्तिम किन्तु बेस गुरुत्वपूर्ण एकटा कार्य छलन्हि, सरकार द्वारा हिन्दू विधवाक पुनर्विवाहक लेल आन्दोलन। जँ ई सब बात ध्यानमे राखल जाय जे एहि लल प्राचीन ग्रंथसबमे विधवा-विवाह समर्थक वचन सभक अन्वेषण, सामान्य जनताक लेल एकर सपक्षमे साहित्य-रचना एवं जन-समर्थनक लेल जन सभाक आयोजन करबाक आवश्यकता छलैक, तऽ ई सोचब स्वाभाविक हैत जे एहिसबमे कोनहु परिश्रमी व्यक्तिक सबटा उद्यम-क्षमताक स्वाहा भऽ जा सकैत अछि। मुदा विद्यासागरक लेल ई सहज छलन्हि। ओ एहि तनावपूर्ण आन्दोलनकेँ एसगरे परिचालित कैलन्हि एवं एकहि संग जीवनक अन्यान्य क्षेत्रक गतिविधिमे एकरा एना कए सम्मिलित कै लेलन्हि जे कोनो भार नहि बुझाइन्ह। सत्ये, हुनकामे कठिन काज करबाक असीम शक्ति छलन्हि। तँ एहिमे कोनो आश्चर्य नहि जे माइकेल मधुसूदन दत्तक मनमे हुनक चरित्रक एहि गुणक गम्भीर प्रभाव पड़लन्हि।

एहि स्तोतमे चारिम गुणगान हुनक दयालु स्वभावक विषयमे अछि। ई हुनक चरित्रक एकटा एहन स्पष्ट गुण छलन्हि जे एहि विषयमे विस्तारमे आलोचना करब अनावश्यक हैत। ई त पहिनहि कहल गेल अछि जे हुनक दयालुताक अनेक रास कार्य हुनक चरित्रक एहि गुणकेँ एतेक स्पष्टीकृत कैने छलन्हि जे सामान्य जनता हुनका 'दयार सागर'क उपाधिसँ भूषित कैने छल। पहिलुका एक अध्यायमे ई कहल जा चुकल अछि जे स्त्री-अधिकारक लेल ओ जे संग्राम ठनलन्हि से दयालुताक कारणहिँ, कारण जे ओ हृदय-हीन समाज द्वारा हुनका सभक प्रति कैल जाइत अन्यायसँ अत्यन्त व्यथित छलाह। हुनक मानवतावादी चरित्रक एहि पक्षकेँ आलोकित करैत अछि।

एहि तरहेँ मधुसूदन दत्त द्वारा विद्यासागरक मस्तिष्क और हृदय दुनूक गुणावलीक ई संक्षिप्त विवरण व्यापक त अछि, मुदा विद्यासागरक संग संपूर्ण

न्याय नहि करैत अछि, कारण हुनक अन्य एकटा प्रमुख गुणकें अकारण छोड़ि दैत अछि। ई चरित्र एतेक जटिल और बहुमुखी अछि जे कोनो एकटा प्रशंसक द्वारा हुनक गुणावलीक सम्पूर्ण चित्र उपस्थित करब असंभवे अछि। एहि विषयमे हमसब भाग्यवान छी, कारण एहि दिशामे दोसर प्रयास रवीन्द्रनाथ ठाकुर-सन महान व्यक्तिक छलन्हि।

रवीन्द्रनाथक मनकें विद्यासागरक चरित्रक दुइटा गुण बड्ड प्रभावित कैलकन्हि: व्यवस्थाक सामने नति-स्वीकार नहि करै वाला हुनक पौरुष और हुनक मानवीय गुणावली। जं रवीन्द्रनाथक अपन शब्दक अनुवाद करी त— "ईश्वरचन्द्र विद्यासागरक चरित्रक गौरवक कारण ने हुनकर दयालुता छलन्हि आ' ने पांडित्य; ओ छलन्हि हुनक अजेय पौरुष आ' हुनक अक्षय मनुष्यत्व।"[१]

स्पष्ट अछि जे रवीन्द्रनाथक विश्लेषक दृष्टि किछु एहन अपूर्व गुणक आविष्कार कयलक जे कि मधुसूदन दत्त देखि नहि सकल छलाह। स्वभावसँ विद्यासागर अत्यन्त भद्र छलाह आ' प्रवृत्तिसँ शालीन, मुदा ई त भेलन्हि हुनक चरित्रक एकटा पक्ष। केओ सत्ताधारी केहनो शक्तिशाली वा क्षमतावान होथि, विद्यासागर हुनका सामने झुकऽ नहि जनैत छलाह। एहन व्यक्तिक प्रति ओ अत्यन्त कठोर भऽ जाइत छलाह और हुनका हुनके पद्धतिसँ शिक्षा देबामे कनेको संकुचित नहि होइत छलाह।

दोसर एकटा गुण जकरा रवीन्द्रनाथ 'मनुष्यत्व' कहैत छथि तकर अनुवाद कऽ सकैत छी 'मानवीयता'। ओ एकरा दयालुता सँ पृथक् करैत छथि और मात्र मानववादिता सँ एकरा आर उच्च स्तरक गुणक रूप मे मानैत छथि। लगैत अछि हुनक अभिप्राय ई छलन्हि जे विद्यासागर छोट-छीन विवाद तथा संकीर्ण पूर्वाग्रह सँ मुक्त भए प्रत्येक वस्तु कें पूर्वाग्रह हीन और उन्मुक्त-हृदय मनुष्य जकाँ देखि सकैत छलाह और तैं हुनक मानववाद विस्तृततर स्वरूपक छलन्हि। पूर्वोद्धृत निबंधक एक आन भाग मे कैल गेल टिप्पणी सँ एहि बातक पता चलैत अछि, मैथिली मे जकर अनुवाद एहि तरहक हैत:

---

१. "दया नहे, विद्या नहे, ईश्वरचन्द्र विद्यासागरेर चरित्रे प्रधान गौरव ताँहार अजेय पौरुष, ताँहार अक्षय मनुष्यत्व।"—रवीन्द्रनाथ ठाकुर, 'विद्यासागर चरित' (पहिल)।

"विद्यासागरक चरित्रक सरिपहुँ सर्वाधिक गुरुत्वपूर्ण गुण दय जँ हम नहि किछु कही त हमर कर्त्तव्य पूर्णरूप सँ पालित नहि हैत। ई ओ गुण छल जकरा द्वारा ओ ग्राम्य-आचारक क्षुद्रता, बंगाली जीवनक जड़त्व केँ सशक्त हाथेँ तोड़ि कए मात्र अपन दुर्वार गति सँ कठिन प्रतिकूलताक हृदय विदीर्ण कए हिन्दू धर्म आ' साम्प्रदायिकताक दिसि नहि, करुणाश्रुपूर्ण उन्मुक्त अपार मनुष्यत्वक दिस अपन दृढ़निष्ठ, एकाग्र और एकक जीवन केँ प्रवाहित कैने छलाह।"[1]

हुनक पौरुष गुण जे हुनका भारत मे शासन-रत विदेशी शक्तिक प्रतिनिधिसभक सामने झुकऽ नहि दैत छलन्हि, तकर सवसँ निक छवि हुनक ओहि लोकसभक सँग व्यवहार मे भेटैत अछि। एतय दुइ गोट प्रसिद्ध घटनाक वर्णन द्वारा एहि विषयक स्पष्टीकरण कैल जा सकैत अछि, ताहि लेल वृथा शब्द-चित्र बनैवाक प्रयोजन नहि हैत।

जखन विद्यासागर संस्कृत कॉलेजक सहायक सचिवक पद पर काज करैत छलाह तखन एकबेरि कोनो एकटा काज सँ हिन्दू कॉलेजक अध्यक्ष कारक पास जाय पड़ल छलन्हि। जखन हुनका अध्यक्षक कमरा मे पहुँचा-ओल गेलन्हि त ई देखि कए हुनका अत्यन्त तामस भेलन्हि जे अध्यक्ष कार टेबुल पर अपन जूता-समेत पैर केँ रखने कुर्सी पर आरामसँ बैसल रहथि। विद्यासागर केँ बैसवाक लेल एकटा कुर्सी धरि नहि देल गेलन्हि। स्पष्ट छल जे शासक जातिक ई प्रतिनिधि हुनक स्वागत किछु एहि ढंग सँ कऽ रहल छलाह जे हुनका विचारेँ शासित जातिक विशिष्टो व्यक्तिक लेल ठीक छलन्हि। विद्यासागर आश्चर्यजनक ढग सँ आत्म-संयम देखौलन्हि जे कि हुनका मे प्रचुर मात्रा मे छलन्हि, और सोचलन्हि जे एहि

---

१ विद्यासागरेर चरित्रे जाहा सर्वप्रधान गुण, जे गुणे तिनि पल्ली आचारेर क्षुद्रता; बाङाली जीवनेर जड़त्व सबले भेद करिया एकमात्र निजेर गति-प्राबल्ये कठिन प्रतिकूलतार वक्ष विदीर्ण करिया-हिन्दुत्वेर दिके नहे, साम्प्रदायिकतार दिके नहे करुणार अश्रुजलपूर्ण उन्मुक्त अपार मनुष्यत्वेर अभिमुखे आपनार दृढ़निष्ठ एकाग्र एकक जीवनके प्रवाहित करिया लइया गियाछिलेन, आमि जदि अद्य ताँहार सेइ गुणकीर्त्तन करिते विरत हइ, तबे आमार कर्तव्य एकेबारेइ असम्पन्न थाकिया जाय।

अपमानक उपेक्षे करब उचित हैत आ' तैं अपन विरक्तिक कनेको संकेत बिनु देनहि ओ चुपचाप बात कए कमरा सँ बाहर चल ऐलाह ।

तकर बाद एक दिन एहन अवसर ने आन काज सँ कार कें विद्यासागरक दफ्तर मे जाय पड़लन्हि । ई ओ स्वर्णिम अवसर छल जकर विद्यासागर प्रतीक्षा कऽ रहल छलाह, जाहि सँ अपमानक मुहतोड़ जवाब देल जा सकै । तैं जखन कार प्रवेश कैलथिन्ह त ओ विद्यासागर कें तेहने मुद्रा मे पौलन्हि जेना ओ अपने पूर्वोक्त अवसर मे बैसल छलथिन्ह । पार्थक्य मात्र एतवे छल जे जूताक जगह पर विद्यासागरक पैर मे चप्पल छलन्हि ।

एहि ठाम ई जोड़ब अनावश्यक हैत जे कार कें ई स्वागत एतेक क्रुद्ध कऽ देलकन्हि जे ओ शिक्षा-समितिक प्रधान डॉ० मोअटसँ शिकायत कऽ देलथिन्ह । जखन विद्यासागरसँ एकर कारणक तलब कैल गेलन्हि त जवाब अत्यन्त शीघ्रताक संग प्रस्तुत कैल गेल, जे कि जतेक अकपट छल ततवे कटुओ । विद्यासागर उत्तर देलथिन्ह जे ओ त अध्यक्ष महोदय जेना पहिने हुनका स्वागत कैने छलथिन्ह ताही तरहें हुनको स्वागत करवाक हेतु ओही आदर्शक अभ्यास ई सोचि कए कऽ रहल छलाह जे सभ्य अंग्रेज मे भरिसक एहिना स्वागत करवाक परिपाटी छैक । अतः अधिकारीसभक दबावमे आबि कए कार कें एहि विषय मे स्वयं मेल-जोल क' लेअय पड़लन्हि ।[1]

विद्यासागरक स्वाभिमानक पता हुनका कोनो व्यक्ति वा अवसरक परवाहि बिनु कैने सर्वत्र अपन प्रिय देशीय पोशाक मे रहबाक निर्णय सँ चलि सकैत अछि । ओ ताहि युगक बंगाली पंडितक धोती, देहक ऊर्ध्व-भागक लेल चादरि तथा पैर मे चप्पल-एहि तरहक पोशाक पहिरब बड़ पसिन करैत छलाह । ओ चप्पलक चयनक विषयो मे जिद्दी छलाह और हुनका प्रिय लगैत छलन्हि मोड़ल नोक वाला ओ चप्पल जकर स्थानीय नाम छल 'तालतलार चटी' । विद्यासागरक संग एहि चप्पलक लगातार संपर्कक कारणें एकरा 'विद्यासागरी चट्टी' क (विद्यासागर द्वारा प्रोत्साहित चप्पल) आख्या सेहो भेंटल छल । ओहि दिनुका स्वीकृत पोशाक छल पैण्ट आ' दीर्घ प्रलंबित ऊर्द्ध्व-वसन और माथ पर नीचा मे एकटा चक्कर देल पगड़ी । विद्या-

१ चण्डीचरण बनर्जी, 'विद्यासागर' अध्याय—५ ।

गर के पोशाक ई नीक नहि लगैत छलन्हि । हुनक वक्तव्य छलन्हि जे जे पोशाक एक गोट विद्वान पंडितक लेल ठीक अछि से सब अवसरक लेल ठीक अछि ।

ताहि दिनुका बंगालक लेफ्टिनेण्ट गवर्नर सा फ्रेडरिक हैलीडे के विद्यासागरक संग घनिष्ठ बंधुत्व छलन्हि और कैकटा विषयमे ओ विद्यासागरक सलाह पर भरोस करैत छलाह । ओ प्रायः विद्यासागर के अपन बेलवेडियर स्थित आवास मे बजा लैत छलाह । आरंभ मे अपन इच्छाक विरुद्ध विद्यासागर स्वीकृत पोशाक मे जाइत छलाह । मुदा किछु कालक बाद विद्यासागरक साधारण पोशाकक प्रति प्रेम अन्तर्विद्रोह कैलक । तैं ओ हैलीडे के एक दिन सोझे चरमपत्र सुना देलथिन्ह जे हुनका अपन पोशाक मे आबऽ देमै पड़तन्हि नहि त ओ भेंट करै नहि आबि सकताह । लेटिनेण्ट गवर्नर विद्यासागरक सलाहेक मोल दैत छलाह से नहि, हुनकर हृदयो समझदार छलन्हि आ' तैं ओ विद्यासागरक मांग के मानि लेलथिन्ह । तकर बादसँ विद्यासागर बंगाली पंडितक साधारण पोशाकमे गवर्नरक आवासमे जाय लगलाह । एहि तरहें हुनक कारणे एहि पोशाकक सम्मान बढ़ि गेल ।[1]

रवीन्द्रनाथ ठाकुर जाहि विस्तृताधार मानवतावाद दय अत्यन्त ज्वलंत शब्द मे कहने छलथिन्ह ताहि गुणक विषय मे एहि सँ पहिलुका एकटा अध्याय मे चर्चा कैल गेल अछि । एतय कहबाक एतबे अछि, जेना कि रवीन्द्रनाथ अपनहि कहने छलाह, जे विद्यासागरक लोकोपकारक सेवा कोनो संकीर्ण वर्गक लेल सीमित नहि छलन्हि । ओ असुविधा-ग्रस्त श्रेणीक लोकक दिसि विशेष ध्यान देने रहथि; जाति, धर्म वा वर्णक भेद-भाव के मन सँ दूरे राखैत छलाह । हिन्दू नारीक दिसि हुनक ध्यान एहि लेल गेल छलन्हि जे समाज मे ओकर स्थानक करणे ओ अनेक वैषम्यपूर्ण घटनाक शिकार भऽ जाइत अछि । ओ संथाल-सभक सेवा एहि लेल कैलन्हि जे ओ सब दुरवस्था-ग्रस्त समाजक छल । जखन अकाल वा महामारी सँ पीड़ित लोक-सभक सहायताक प्रश्न उठल, ओ समस्त वर्गक सेवा कैलन्हि । वर्द्धमान जिला मे मलेरियाक कारणें भेल महामारीक समय मे ओ जे चिकित्सा आ'

---

१. उपरोक्त, अध्याय ४ ।

सेवा-कार्य करने छलाह ताहि मे मुसलमान समाजेक दिसि हुनक ध्यान बेसी आकृष्ट भेलन्हि ।[1]

एहि भद्र पुरुषक हृदय मे एतेक गुणक अवस्थिति छलन्हि जे उपरोक्त दू गोट विशिष्ट व्यक्तिक द्वारा कयल गेल मूल्यांकनो सँ तकर संपूर्ण तालिका प्रस्तुत नहि कैल जा सकैत अछि । हिनका दुनू गोटेक विवरण परस्परक परिपूरक अवश्य छन्हि, मुदा तैयो हिनक चरित्रक किछु सूक्ष्म पक्षक उल्लेख एहिमे नहि भेटैत अछि जे वर्णन-योग्य थीक और जकरा सहायता सँ एहि व्यक्तिक संपूर्ण चित्र अंकित कैल जा सकैत अछि, तैं एहिसब विषय मे संक्षेप मे कहब उचित हैत ।

विद्यासागर मे एक विशेष आ' सूक्ष्म प्रकारक सत्यता एवं सदाचरणक गुण छलन्हि जे कि हुनका स्तरक प्रख्यात व्यक्तिक हेतु अत्यन्त आवश्यक गुण होइछ । एतय वर्णित एकटा घटनाक द्वारा एकर सबसँ नीक उदाहरण भेटत :

१८७२मे जखन सरकार भारतीय भाषा तथा अंग्रेजी मे उपयुक्त पाठ्य-पुस्तकसभक चयनक लेल केन्द्रीय पाठ्य-पुस्तक समितिक निर्माण कैलक तखन लोक-शिक्षा-निदेशक डब्ल्यू० एस० एटकिनसन विद्यासागरकेँ एकर सदस्यता-पद स्वीकार करबाक लेल आमंत्रित कैलन्हि, कारण 'एहि लेल श्रेष्ठ देशीय पंडितसभक सहायता लेब आवश्यक" छल । विद्यासागर विनम्रतासँ दू टा कारणेँ एकर अस्वीकार कैलन्हि, जकर वर्णन हुनकहि शब्दमे कैल जा सकैत अछि :

"हम अहाँक स्कूल-पुस्तक-समितिक सदस्यताक आमंत्रणकेँ सहर्ष स्वीकार कऽ लितहुँ, मुदा दू टा कारणेँ हम एकरा अस्वीकार करबाक लेल बाध्य छी । अपने लेखक होयबाक कारणेँ एहि समितिक निर्णयक संग हमर स्वार्थ जड़ित अछि, और तेँ हमरा एहि समितिक कार्यक्रममे भाग नहि लेबाक चाही । तकर अलावे, हम ई सोचबाक लेल बाध्य छी जे समितिमे हमर उपस्थितिक कारणेँ पुस्तकसभक गुणावगुणक मुक्त और असंकुचित विवेचन नहि भऽ सकैत अछि ।[2]

१. चण्डीचरण बैनर्जी, 'विद्यासागर,' अध्याय—११ ।

२. डब्ल्यू० एस० एटकिनसनकेँ लिखल विद्यासागरक १३ जुलाइ, १८७३क पत्र ।

पाइकपाडाक राजा हॉडसन नामक एक अंग्रेज कलाकारकेँ अपन परिवारक सदस्यसभक चित्र बनैबाक काज मे नियुक्त कैने छलाह। एहने एक अवसर पर हिनक आवासमे चित्रकारकेँ विद्यासागरसँ भेंट भेलन्हि, जखन विद्यासागर तीस बत्तीस वर्ष अवस्थाक छलाह। हुनक नजरिमे किछु एहन तत्त्व छलन्हि जाहि सँ लक्षित होइत छल जे एक असाधारण व्यक्ति छथि। चित्रकारक प्रशिक्षित दृष्टि सँ ई बचि नहि सकल और ओ हिनक चित्र बनैबाक आग्रहसँ विद्यासागरकेँ किछु काल स्थिर भऽ बैसबाक अनुरोध कैलन्हि आ' विद्यासागर तकरा मानि लेलन्हि।

चित्र बनि गेलाक बाद विद्यासागरकेँ ई जानि आश्चर्य भेलन्हि जे हॉडसन हुनका ई चित्र उपहार-स्वरूप देमँ चाहैत छलाह और ओ एहि लेल हुनका सँ पारिश्रमिक नहि लेमँ चाहैत छलाह जे ई प्रेमक परिश्रम छल। हुनका कोनो तरह सँ पाइ देबाक उपाय नहि पाबि विद्यासागर एकर बदला मे किछु देबाक लेल एकटा उपाय सोचि निकाललन्हि। ओ हॉडसन केँ अपन पिता माताक चित्र बनैबाक लेल अनुरोध कैलथिन्ह और ताहि लेल हुनका प्रचुर धन देलथिन्ह।

एक अन्य अवसर पर विद्यासागर श्री मोयेलक अनुरोध पर कैप्टेन बैंक नामक एक व्यक्तिकेँ संस्कृत, बंगला तथा हिन्दी पढ़ौलन्हि। पाठ-समापनक बाद ई अफसर हुनका ५० टाका प्रतिमासक हिसाबसँ वेतन देमँ चाहल। ताहि दिनमे विद्यासागर संस्कृत कॉलेजक सहायक सचिवक पदसँ त्याग-पत्र दऽ कए बेकार छलाह। मुदा ओ ई पाइ लेब अस्वीकार कऽ देलन्हि एहि आधार पर जे ओ एकटा मित्रक अनुरोध पर मित्र-भावसँ पढ़ौने छलथिन्ह आ' तेँ पाइ लेबाक प्रश्ने नहि उठैत अछि।[1]

विद्यासागर एहन बहुपक्षी व्यक्तित्वक आधार छलाह। उन्नैसम शताब्दी मे पश्चिमी सांस्कृतिक प्रभावक प्रति बंगालक जे सब महान् व्यक्ति विशिष्ट ढंगसँ प्रतिक्रिया देखौलन्हि, तनिकासबमे विद्यासागर निःसन्देह सर्वाधिक आकर्षणीय छलाह। समाप्त करबासँ पहिने हुनक एकटा और विशेषताक उल्लेख आवश्यक होयत जे हुनक चरित्रकेँ मानवीय स्पर्श प्रदान करैत अछि।

अपन जीवनादर्श पर अटल और अत्यन्त सरलजीवी होइतहुँ विद्यासागर अपनाकेँ दुइटा विलासक छूट देने छलाह। सबसँ पृथक् और ऊपर

१. चण्डीचरण बनर्जी, 'विद्यासागर', अध्याय—५।

भेलाक कारणेँ ओ एकाकी छलाह, जकरा लेल प्रकृति आ' पुस्तकके संगी कैने छलाह। जखन ओ अपनाकेँ आर्थिक दृष्टिएँ प्रतिष्ठित कऽ लेलन्हि त मध्य कलकत्ताक बादुर-बागान अंचलमे १८०६मे अपना लेल एकटा मकान बनवौलन्हि। एकर दू टा विशेषता छल : मकानक सम्मुख भागमे एकटा शानदार बगीचा छल, जतय ओ अपने काज करैत छलाह और एकटा सुंदर पाठागार। ओ अपन पुस्तकसभसँ प्रेम करैत छलाह और शास्त्रीय एवं दुष्प्राप्य पुस्तकक संकलनमे रुचि लैत छलाह। एकरा सबकेँ मूल्यवान सालंकार बंधाइ द्वारा सज्जित करब हुनका नीक लगैत छलन्हि। आन कोनो क्षेत्रमे विद्यासागर एहन चरम अधिकार-चेतन नहि छलाह जतबा कि ओ पुस्तक सभक विषयमे छलाह, जाहिसँ इयैह पता चलैत अछि जे हुनका पुस्तकक प्रति कतेक ममत्व छलन्हि। एकटा कथासँ एकर परिचय भेटत।

पहिने विद्यासागर अपन पुस्तकालयसँ मित्रसबकेँ पुस्तक देबामे संकोच बोध नहि करैत छलाह। मुदा एक बेरिक एकटा घटना हुनक मनकेँ एतेक आघात पहुँचओलकन्हि जे ओ तत्काल अपन पुस्तकालयसँ पुस्तक उधार देब बन्द कऽ देलथिन्ह। हुनक एकटा मित्र एकटा दुष्प्राप्य पुस्तक लेने रहथि आ' ओ तकरा घुरैबाक कष्ट नहि कऽ रहल रहथि। जखन विद्यासागर हुनका मोन पाड़ि देलथिन्ह त ओ सोझे कहि देलथिन्ह जे ओ पुस्तक घुरा देने छथि। ओ जे संपूर्ण मिथ्या-भाषण कैने छलाह किछु दिनमे तकर पता चलि गेल। पुरान पुस्तकक एक गोट व्यापारी, जकरासँ विद्यासागर प्राय: पोथी किनैत छलाह, एकदिन हुनका लग विक्रयक हेतु देखैबाक लेल किछु दुष्प्राप्य पुस्तक लऽ कए आयल। एकहि संग विस्मय और आघातक अनुभूति भेलन्हि हुनका, जखन ओ तकरा सबमे अपन हेरायल पुस्तकक आविष्कार कैलन्हि जकरा भरिसक एहि व्यापारीक हाथेँ ओ ग्रहीता बेचि देने छलाह।

पुस्तक-सूची

ईश्वरचन्द्र विद्यासागरक कृति

वेताल-पंचविशंति, १८४७ । कथा-संग्रह ।
बांग्लार इतिहास, १८४८ । इतिहास ।
जीवन-चरित, सितम्बर १८४६ । जीवनी-विषयक रचना ।
बोधोदय, अप्रैल १८५१ । प्राइमरी स्तरक पाठ्य-पुस्तक ।
उपक्रमणिका, नवम्बर १८५१ । प्राथमिक संस्कृत व्याकरण ।
ऋजुपाठ, पहिल भाग, नवम्बर १८५१ । संस्कृत पाठ्य-पुस्तक ।
ऋजुपाठ, दोसर भाग, मार्च १८५२ । संस्कृत पाठ्य-पुस्तक ।
ऋजुपाठ, तेसर भाग, दिसम्बर १८५२ । संस्कृत पाठ्य-पुस्तक ।
व्याकरण-कौमुदी, पहिल आ' दोसर भाग, १८५३ । संस्कृत व्याकरण ।
शकुन्तला उपाख्यान, दिसम्बर १८५४ । कथा ।
विधवा विवाह, जनवरी १८५५ । विधवा-पुनर्विवाह पर निबन्ध ।
वर्णपरिचय, पहिल भाग, अप्रैल १८५५ । वर्णमाला पुस्तिका ।
वर्णपरिचय, दोसर भाग, जून १८५५ । वर्णमाला पुस्तिका ।
कथामाला, फरवरी १८५६ । बंगला पाठ्य-पुस्तक ।
चरितावली, जुलाइ १८५६ । जीवनी ।
महाभारत (उपक्रमणिका), जनवरी १८६० । 'महाभारत'क बंगला पाठ ।
सीतार वनवास, अप्रैल १८६० । कथा ।
व्याकरण-कौमुदी, चारिम भाग, १८६२ । संस्कृत व्याकरण ।
आख्यान-मंजरी, नवम्बर १८६३ । कथा-संग्रह ।
शब्द-मंजरी, १८६४ । बंगला शब्दकोश ।
भ्रान्ति-विलास, १८६९ । शेक्सपीयरक 'द कॉमेडी ऑफ एरर्स'क अनुकृतिपर लिखल हास्य-कथा ।
भूगोल-खगोल-वर्णनम्, अप्रैल १८९२ । (मरणोपरान्त प्रकाशित) ग्रह विज्ञान आ' भूगोल ।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा सम्पादित पुस्तक

अन्नदामंगल, दू भागमे, १८४७ । बंगाली कवि भारतचन्द्रक प्रबंध-काव्य ।
बैताल पंचीशी, जनवरी १८५२ । हिन्दीमे कथा-संग्रह ।
रघुवंशम्, जून १८५३ । कालिदासक महाकाव्य ।
किरातार्जुनीयम्, १८५३ । भारविक महाकाव्य ।
सर्वदर्शनसंग्रहः, १८५३-५८ । भारतीय दर्शन ।
शिशुपालवधम्, १८५७ । माघक महाकाव्य ।
कुमारसंभवम्, १८६१ । कालिदासक महाकाव्य ।
कादम्बरी, १८६२ । बाणक गद्य काव्य ।
मेघदूतम्, अप्रैल १८६९ । कालिदासक गीति-काव्य ।
उत्तरचरितम्, नवम्बर १८७० । भवभूतिक नाटक ।
अभिज्ञानशाकुन्तलम्, जून १८७१ । कालिदासक नाटक ।
हर्षचरितम्, मार्च १८८३ । बाणकृत सम्राट हर्षवर्धनक जीवनी ।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर पर पुस्तक

अरविंद गुह (इन्द्र मित्र), 'करुणासागर विद्यासागर' ।
ब्रजेन्द्रनाथ बनर्जी, 'ईश्वरचन्द्र विद्यासागर' (साहित्य साधक चरितमाला ।
चण्डीचरण बनर्जी, 'विद्यासागर' ।
नारायण बनर्जी (सम्पादित), 'ऑटोबायोग्राफी' ।
बिपिनविहारी गुप्त, 'पुरातन प्रसंग' (प्रथम ओ द्वितीय पर्याय) ।
विनय घोष, 'विद्यासागर ओ बांगाली समाज' ।
बिहारीलाल सरकार, 'विद्यासागर' ।
रवीन्द्रनाथ ठाकुर, 'विद्यासागर-चरित' ।
शम्भूचन्द्र विद्यारत्न, 'विद्यासागर जीवनचरित' ।
सन्तोष कुमार अधिकारी, 'विद्यासागर' ।

वंश-वृक्ष

ठाकुर दास = भगवती देवी

ईश्वरचन्द्र = दिनमयी	दीनबंधु	शंभुचन्द्र	ईशानचन्द्र	मनमोहनी	दिगंबरी	मन्दाकिनी

ईश्वरचन्द्र = दिनमयी

नारायण = भवसुन्दरी	हेमलता = गोपालचन्द्र समाजपति	कुमुदिनी = अघोरनाथ चट्टोपाध्याय	विनोदिनी सूर्यकुमार अधिकारी	शरत्कुमारी कार्तिकचन्द्र चट्टोपाध्याय

Indian Institute of Advanced Study
117178
10/12/04
SHIMLA

Library IIAS, Shimla
MT 891.441 4 V 669 B
00117178